Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Thursday, 07 September 2023 ● Year : 01 ● Issue : 172 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

जिंदगी अगर अपने हिसाब से जीनी हैं तो कभी किसी के फैन मत बनो।

पर्दे पर बेटी सुहाना के साथ नजर आएंगे...

SHARE

सेंसेक्स	:	65,880.52
निफ्टी	:	19,543.80

SARAFA

सोना	:	5,655
चांदी	:	78.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

कृष्ण के रंग में रंगी देवनगरी जन्माष्टमी का भव्य आयोजन

DEOGHAR : देवघर में बाबा मंदिर सहित कई जगहों पर बुधवार को जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। कई जगहों पर आज त्योहार मनाया जायेगा। बाबा मंदिर के इस्टेट पुरोहित ने बताया कि, नियमानुसार उदया के साथ ही तिथि मान्य होती है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म रात के 12 बजे हुआ है और उस समय भाद्र पक्ष अष्टमी तिथि थी। इसलिए तिथि के अनुसार इसकी विशेषता बढ़ जाती है। बुधवार को अष्टमी तिथि का प्रवेश दोपहर 03:40 में हुआ और गुरुवार को शाम के 04:15 बजे ही समाप्त हो जायेगा। बाबा मंदिर परिसर स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर में और उसके बाद प्रशासनिक भवन स्थित राधाकृष्ण मंदिर में पूजा का आयोजन हुआ। दोनों जगहों पर पुजारी एवं आचार्य श्रीनाथ पंडित पूजा किए। वहीं, उपचारक भक्ति नाथ फलहारी पूजा में शामिल थे।

हजारीबाग निवासी एसपीजी के डायरेक्टर का निधन

RANCHI : प्रधानमंत्री की सुरक्षा में लगे विशेष सुरक्षा दस्ते (एसपीजी) के निदेशक अरुण कुमार सिन्हा का 61 वर्ष की आयु में बुधवार को गुड़गांव के मेदांता अस्पताल में निधन हो गया। वे कुछ दिन पहले लीवर से जुड़ी समस्या के चलते अस्पताल में भर्ती हुए थे। इसी साल 30 मई को सेवानिवृत्ति होने के ठीक एक दिन पहले सिन्हा को एक साल का सेवा विस्तार दिया गया था। अरुण कुमार सिन्हा 1987 बैच के केरल कैडर के आईपीएस थे। वे मूल रूप से हजारीबाग मालवीय मार्ग के निवासी थे। उनके पिता महेंद्र प्रसाद भारतीय सेना में थे। अरुण सिन्हा ने हिंदू स्कूल हजारीबाग से स्कूली शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद संत कोलंबस कॉलेज हजारीबाग से जूलॉजी में बीएससी किया। वर्ष 1987 में वे भारतीय पुलिस सेवा में चयनित हुए और उनको केरल कैडर आवंटित हुआ। शुरूआत में केरल के दो-तीन जिलों में आरक्षी अधीक्षक एवं त्रिवेंद्रम और कोचि के पुलिस कमिश्नर रहे। उसके बाद डीआईजी आईजी के रूप में काम किया। वर्ष 2009 से 2014 तक बीएसएफ में आईजी के रूप में गुजरात फ्रंटियर में पदस्थापित रहे।

संसद के विशेष सत्र पर सियासी संग्राम

सोनिया ने सरकार को घेरा, नौ मुद्दों पर चर्चा कराने की मांग

AGENCY NEW DELHI : संसद के विशेष सत्र को लेकर राजनीति जारी है। सत्ता पत्र और विपक्ष के बीच जुबानी जंग जारी है। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने विशेष सत्र को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिखी। जिसमें उन्होंने नौ मुद्दों पर चर्चा की मांग की। इधर मोदी सरकार ने भी सोनिया गांधी को पत्र का करार जवाब दे दिया है। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने बुधवार को कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी पर लोकतंत्र के मंदिर के कामकाज का भी राजनीतिकरण करने का आरोप लगाते हुए कहा कि स्थापित प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद ही 18 सितंबर से संसद का विशेष सत्र आहूत किया गया है। सोनिया गांधी की ओर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लिखे गए पत्र का जवाब देते हुए जोशी

सोनिया गांधी

प्रह्लाद जोशी

ने यह भी कहा कि उन्होंने जिन नौ मुद्दों पर चर्चा कराने की मांग की है, उन सभी के बारे में लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव के दौरान सरकार की ओर से जवाब दिया जा चुका है। केंद्रीय मंत्री ने विश्वास जताया कि विशेष सत्र के दौरान संसद की गरिमा बनी रहेगी और इस मंच का उपयोग राजनीतिक विवादों के लिए नहीं किया जाएगा। उन्होंने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष से सत्र में पूर्ण सहयोग की अपेक्षा भी की। सोनिया गांधी के पत्र का जवाब उन्हें पत्र लिखकर देते हुए जोशी ने कहा, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि आप संसद, हमारे लोकतंत्र के मंदिर के कामकाज का भी राजनीतिकरण करने और जहां कोई विवाद नहीं है वहां अनावश्यक विवाद उत्पन्न करने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने संसद सत्र बुलाए जाने की प्रक्रिया का हवाला देते हुए कहा कि पूर्ण रूप से स्थापित प्रक्रिया का पालन करते हुए ही संसदीय कार्य संबंधी मंत्रिमंडल समिति के अनुमोदन के पश्चात राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्मु द्वारा 18 सितंबर से आरंभ होने वाला सत्र बुलाया गया है। उन्होंने कहा, शायद आपका परंपराओं की ओर ध्यान नहीं है। संसद सत्र बुलाने से पहले ना कभी राजनीतिक दलों से चर्चा की जाती है और ना कभी मुद्दों पर चर्चा की जाती है। उन्होंने गांधी को याद दिलाया कि सत्र आरंभ होने के पहले सभी दलों के नेताओं की बैठक होती है जिसमें संसद में उठने वाले मुद्दों और कामकाज पर चर्चा होती है। जोशी ने कहा कि वैसे तो मौजूदा सरकार किसी भी मुद्दे पर हमेशा चर्चा करने के लिए तैयार रहती है लेकिन जिन मुद्दों का उल्लेख गांधी ने अपने पत्र में किया है, उन सभी मुद्दों को अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान मानसून सत्र में उठाया गया था।

उधर, भारत-इंडिया विवाद पर मोदी ने मंत्रियों से कुछ नहीं बोलने को कहा

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत और 'इंडिया' विवाद पर भी अपने मंत्रियों को बयान देने से बचने की सलाह दी है। दरअसल यह विवाद तब शुरू हुआ जब जी-20 रात्रिभोज के निमंत्रण में राष्ट्रपति को प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत के नाम से संबोधित किया गया है। इंडिया नाम हटाये जाने को लेकर कांग्रेस सहित तमाम विपक्षी पार्टियों ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की जमकर

आलोचना की, जबकि बीजेपी ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि देश के लिए हिंदी नाम का इस्तेमाल उसकी सभ्यता की यात्रा को रेखांकित करता है।

जानिए राहुल गांधी ने क्या कहा?

AGENCY NEW DELHI : कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को कहा कि भारत, इंडिया या हिंदुस्तान..., सबका मतलब मोहब्बत है। राहुल गांधी ने 'यूट्यूब' पर अपनी 'भारत जोड़ो यात्रा' से संबंधित वीडियो साझा करते हुए लिखा, "भारत, इंडिया या हिंदुस्तान..., सबका मतलब मोहब्बत, इरादा सबसे ऊंची उड़ान।" एक साल पहले सात सितंबर को ही कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा शुरू हुई थी। अपने शॉर्ट वीडियो में राहुल गांधी जनता से मिलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

जमशेदपुर में सिलेंडर फटने से फ्लैट में लगी आग, महिला की मौत

JAMSHEDPUR : कदमा के रामनगर स्थित बसंत विहार फ्लैट में बुधवार सुबह गैस सिलेंडर फटने से लगी आग में एक महिला की मौत हो गई जबकि कई लोग घायल हो गए। घटना सुबह करीब 9.30 बजे की है। घटना के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। घंटों तक ऊपरी तल्ले में लोग फंसे रहे, जिन्हें काफी मशक्कत के बाद वहां से निकाला जा सका। घटनास्थल पर दो अतिरिक्त सिलेंडर पड़े थे, जिससे आग ने भयावह रूप ले लिया। आग लगने और सिलेंडर फटने से चौथी मंजिल में के फ्लैट में रह रही महिला की मौत हो गई। मृतका नीता गुप्ता फ्लैट में रहने वाले ओमप्रकाश गुप्ता की पत्नी थी। इसके बाद उस मंजिल पर लोग फंसे रहे। विस्फोट और आग के साथ धुआं अधिक रहने के कारण बिल्डिंग के अन्य फ्लैटों में रहने वाले लोग जान बचाने के लिए के ऊपर और फ्लैट के बाहर भागने लगे। जिला प्रशासन ने तत्परता दिखलाते हुए फायर ब्रिगेड के साथ रेस्क्यू टीम को लगाया, जिससे जल्द ही आग पर काबू पाया गया।

IAS अरुण एक्का को मिली बड़ी राहत

निजी ऑफिस में फाइल निपटाने का मामला

PHOTON NEWS RANCHI : पंचायती राज विभाग सचिव आईएएस राजीव अरुण एक्का को बड़ी राहत मिली है। रांची के अरगोड़ा चौक के समीप स्थित एक प्राइवेट ऑफिस से सरकारी फाइलों के निष्पादन मामले में राज्य सरकार ने 14 मार्च को एक सदस्यीय आयोग गठित किया था। जस्टिस (रिटायर) वीके गुप्ता की अध्यक्षता में गठित आयोग ने रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंप दी है। बताया जा रहा है कि आयोग ने रिपोर्ट में सीधे तौर पर एक्का को दोषी नहीं माना है। हालांकि, महत्वपूर्ण पद पर रहते किसी निजी कार्यालय में बैठने से बचने की भी सलाह दी है। इस रिपोर्ट के आधार पर इसके तकनीकी पहलुओं का अध्ययन सरकार के स्तर से किए जाने की बात कही जा रही है। इसके बाद इस रिपोर्ट को विधानसभा में लाए जाने के बाद ही सार्वजनिक किये जायेंगे। बताया जाता है कि जस्टिस गुप्ता ने करीब तीन सप्ताह पहले रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंप दी है। दिल्ली में राज्य सरकार के स्थानीय आयुक्त को इस रिपोर्ट को उपलब्ध करा दिए जाने की सूचना है।

उल्लेखनीय है कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने एक्का पर आरोप लगाते कहा था कि वे एक निजी ठेकेदार के

सिब्बल ने हेमंत का किया जबरदस्त बचाव

RANCHI : खान मंत्री रहने के दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने परिवार वालों और रिश्तेदारों के नाम माइनिंग लीज आवंटित की थी। इस मामले को लेकर बुधवार को हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान हेमंत सोरेन की ओर से सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने पक्ष रखा। उन्होंने कोर्ट को बताया कि ठीक इसी तरह की एक याचिका शिव शंकर शर्मा की ओर से दायर की गयी थी। इस याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। ऐसे में इस याचिका में भी कुछ नया नहीं है। परिवार वालों और रिश्तेदारों के नाम माइनिंग लीज आवंटित किए जाने को लेकर अधिवक्ता और आरटीआई एक्टिविस्ट सुनील महतो की ओर से याचिका दायर की गयी है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता विशाल कुमार ने पैरवी करते हुए कोर्ट को बताया कि यह मामला एकदम अलग है।

कोडरमा में मछली चोरी के शक में युवक को पीट पीट कर मार डाला

KODERMA : कोडरमा जिला अंतर्गत चंदवारा थाना क्षेत्र के तिलैया डैम के किनारे खांडी गांव के पास मछली चोरी के शक में एक युवक की पीट-पीट कर हत्या कर देने का मामला प्रकाश में आया है। मृतक की पहचान 40 वर्षीय दिनेश यादव पिता चमन यादव निवासी योगीडीह, चंदवारा के रूप में हुई है। घटना के बाद आरोपी फरार बताया जा रहा है। पुलिस ने घटना में किसी तरह अपनी जान बचाने वाले मृतक के साथी के आवेदन के आधार पर मामले की जांच शुरू की है। मृतक के साथी ने कुछ लोगों को नामजद करते हुए हत्या का आरोप लगाया है। चंदवारा थाने को दिए आवेदन में लालू शर्मा पिता तिलक शर्मा निवासी खांडी ने कहा है कि दिनेश यादव के अलावा रामदेव यादव पिता बालकी यादव व मल्लू यादव पिता चोलो यादव चारों एक साथ गुजरात में पोकलेन चलाते थे। वहां हमारे बीच दोस्ती हुई थी। जुलाई माह में हम सभी गांव लौटे थे और छह सितंबर को रेल टिकट कटवाकर गुजरात वापस जाना था। इसके लिए हम सभी पांच सितंबर की रात को योजना बनाए कि पहले मछली पकड़कर खाएंगे। इसके बाद टिकट बनाने जाएंगे। दिनेश को योगीडीह से लेकर हम सभी खांडी आए थे। यहां रात में सभी मछली पकड़ने डैम के किनारे गए, पर मछली नहीं मिला।

राज्य में किन्नरों की बल्ले-बल्ले

झारखंड कैबिनेट की बैठक में ओबीसी में आरक्षण और पेंशन देने का फैसला

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड कैबिनेट की बैठक बुधवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में कुल 34 प्रस्तावों पर मुहर लगायी गयी। इसके तहत सरकार ने ट्रांसजेंडर समुदाय को पिछड़े वर्ग में शामिल करने पर अपनी मुहर लगा दी। इसके साथ ही ट्रांसजेंडर को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने को लेकर एक हजार रुपये का पेंशन भी मिलेगा। इसके अलावा कैबिनेट की बैठक में राज्य के 12 जिलों में कार्यरत 2500 सहायक पुलिसकर्मियों की सेवा एक साल बढ़ाने की स्वीकृति दी है। पहले सहायक पुलिसकर्मियों की सेवा छह साल के लिए थी। इसे सात साल के लिए कर दिया गया है। साथ ही आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थियों को साइकिल खरीद का पैसा उनके खाते में डीबीटी से देने की स्वीकृति दी है।

ट्रांसजेंडर को मिलेगा एक हजार रुपये का पेंशन

कैबिनेट सचिव वंदना दादेल ने कहा कि मंत्रिमंडल ने सामाजिक सहायता योजना के तहत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के लिए मुख्यमंत्री राज्य सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इसके तहत पात्र लाभार्थी को वित्तीय सहायता के रूप में प्रति महीने एक हजार रुपये मिलेंगे। महिला, बाल विकास और

सामाजिक सुरक्षा विभाग के अनुसार, झारखंड में 2011 में करीब 11,900 ट्रांसजेंडर थे। वर्तमान में इनकी संख्या करीब 14,000 हो गयी है।

गृह सचिव की अध्यक्षता वाली कमेटी तय करेगी पुलिस पदक का चयन

कैबिनेट की बैठक में पुलिस पदाधिकारियों को झारखंड स्थापना दिवस के मौके पर दिये जानेवाले पुलिस पदक के चयन प्रक्रिया में संशोधन किया गया है। पहले मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली कमेटी चयन करती थी। अब गृह सचिव की अध्यक्षता वाली कमेटी तय करेगी। कैबिनेट ने तय किया है कि अब झारखंड प्रशासनिक सेवा की सीमित परीक्षा में अनुकंपा पर नियुक्त कर्मी भी शामिल हो सकेंगे। इसके लिए सरकार ने झारखंड प्रशासनिक सेवा नियमावली-2015 में संशोधन किया है। झारखंड कैबिनेट ने तय किया है कि राज्य के वित्त रहित शैक्षणिक संस्थानों को नैक ग्रेडिंग के आधार पर ही अनुदान मिलेगा।

इन प्रस्तावों पर भी लगी मुहर

- स्वास्थ्य विभाग में निदेशक आयुष का भर्ती नियमावली को मंजूरी
- कांची सिंचाई योजना के लिए ईचागढ़ नहर के पुनर्स्थापन के लिए 63।56 करोड़ प्रशासनिक स्वीकृति
- रांची जिले के नगड़ी मुड़मा मौजा 1।49 एकड़ जमीन 10 करोड़ में एसबीआइ को दी जायेगी
- आशुलिपिक की नियुक्ति एवं प्रोन्नति नियमावली-2023 के गठन को स्वीकृति
- मुख्य सूचना आयुक्त के वेतन एवं भत्ते सेवा शर्तों के बंधेज निर्वाचन में संशोधन
- झारखंड बाल विकास परियोजना पदाधिकारी सेवा संवर्ग नियमावली-2018 को संशोधित कर 2023 का गठन किया गया
- जल संसाधन में शोध सहायक कर्मियों के लिए भर्ती एवं प्रोन्नति नियमावली को स्वीकृति
- झारखंड राज्य औषधि जांच प्रयोगशाला नियमावली-2023 के गठन को स्वीकृति
- डुमरी उपचुनाव के लिए 3.63 करोड़ रुपये आकस्मिकता निधि से अग्रिम लेने को स्वीकृति
- निदेशक औषधि जांच प्रयोगशाला नियमावली-2023 को स्वीकृति
- निदेशक औषधि झारखंड नियमावली-2023 को स्वीकृति
- वाणिज्य कर विभाग के दैनिक कर्मी सोमरा टोप्पो की सेवा नियमित होगी
- झारखंड पंचायत सचिव नियमावली-2014 में संशोधन
- झारखंड किशोर न्याय नियमावली-2003 के तहत रांची एवं पूर्वी सिंहभूम में एक-एक अतिरिक्त किशोर न्याय बोर्ड के गठन को स्वीकृति
- झारखंड उच्च न्यायालय की अनुशंसा के आलोक में सिविल जज के 28 न्यायिक पदाधिकारियों को जिला जज में की स्वीकृति
- डीएमएफटी में प्राप्त राशि से खनिज क्षेत्रों में ग्रामीण जलापूर्ति योजना (गोविंदपुर निरसा साउथ जोन) के लिए तीन अरब 25 करोड़ 15 लाख के पुनरीक्षित प्रशासनिक राशि को स्वीकृति, यह 2017-18 की योजना है।

पिछले चार महीनों में 624 लोग उतारे गए मौत के घाट, जेल के अंदर से भी अपराधी चला रहे गिरोह

यह झारखंड है, जहां हर दिन हो रही 5 लोगों की हत्या

SUHAIB ANSARI @ RANCHI : झारखंड में बढ़ता अपराध चिंता का विषय बन रहा है। पुलिस क्राइम कंट्रोल की तमाम कोशिशों के बावजूद, अपराधी लगातार घटनाओं को अंजाम दे रहे। कई बार अपराधी पुलिस की नाक के नीचे घटनाओं को अंजाम दे रहे। एक तरफ पुलिस दावा करती है कि अपराधियों को नकेल कसने के लिए हर जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं, कोई भी अपराधी घटना को अंजाम देकर नहीं बच सकता। लेकिन, दूसरी तरफ अपराधियों द्वारा किसी नई घटना को अंजाम दे दिया जाता है। हालांकि पुलिस अपराधियों को पकड़ती जरूर है, जेल भी भेजती है, मगर वही अपराधी सलाखों के पीछे से ही अपराध का साम्राज्य खड़ा कर लेते हैं। हत्या, फिरौती, लूट, अपहरण, रंगदारी जैसे क्राइम को जेल के अंदर से भी अपराधी ऑपरेट कर रहे हैं। अपराधी जेल के अंदर से मोबाइल के जरिए घटना को अंजाम दे रहे हैं। हालांकि, पुलिस सूचना मिलने पर जेल में छापेमारी भी करती है मगर हाथ कुछ नहीं लगता है। हाल ही में रांची में कई हत्याएं हुईं हैं, जिसकी साजिश जेल में बंद अपराधियों ने रची थी। राज्य में कई ऐसी घटनाएं हो चुकी है जो पुलिस की कार्यशैली पर सवाल खड़ी करती हैं। घटनाओं के बाद कई थानेदारों पर भी गाज गिर चुकी है। पिछले तीन महीनों में रांची में कई हत्याएं हुई। ज्यादातर मामलों का पुलिस ने खुलासा करते हुए अपराधियों को धर दबोचा। आंकड़ों पर गौर करें तो राज्य में पिछले चार महीनों में (मार्च 2023-जुलाई 2023 तक) राज्य के अलग अलग जिलों में 624 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। ये आंकड़े स्टेट क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ने जारी किया है। आंकड़ों के अनुसार, राज्य में हर दिन 5 लोगों की हत्या कर दी जा रही है। सबसे ज्यादा हत्या के 48 मामले पलामू जिले में दर्ज हैं। वहीं रांची में 47 मामले दर्ज हुए हैं। जबकि रेल जमशेदपुर से एक भी मामला नहीं हैं।

हाल में हुई प्रमुख घटनाएं

05 जुलाई : रांची में अकाउंटेंट की हत्या
रांची के सुखदेवनगर थाना क्षेत्र में अपराधियों ने चर्चित बिल्डर कमल भूषण हत्याकांड के गवाह, अकाउंटेंट संजय कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी थी। हत्या की साजिश जेल में बंद अपराधियों ने रची थी।

26 जुलाई : ऑफिस में भाकपा नेता को भूना
रांची में 119 डिसमिल जमीन की वजह से भाकपा नेता सुभाष मुंडा को अपराधियों ने उनके ऑफिस में गोलियों से छलनी कर दिया था। इस मामले में रांची एसएसपी किशोर कौशल ने नगड़ी थानेदार को सस्पेंड कर दिया था।

11 अगस्त : डबल मर्डर से दहली रांची
रांची के चिरौंदी इलाके में मुकेश साव और उनके स्टाफ रोहन साव की अपराधियों ने सिर में गोली मारकर हत्या कर दी थी। घटना तब हुई जब मुकेश और रोहन बरियातू थाना क्षेत्र के साइंस सिटी स्तिथ अपने घर लौट रहे थे।

जानिए कहां कितनी हुई घटनाएं

जिला	मामला	जिला	मामला
पलामू	48	दुमका	23
रांची	47	गोड्डा	23
गढ़वा	43	खूंटी	18
गिरिडीह	42	कोडरमा	18
देवघर	41	लातेहार	16
धनबाद	38	सरायकेला	14
चाईबासा	39	सिमडेगा	14
हजारीबाग	38	लोहरदगा	10
चतरा	32	रामगढ़	09
गुमला	27	जामताड़ा	06
जमशेदपुर	25	पाकुड़	05
बोकारो	24	रेल धनबाद	01
साहिबगंज	23	रेल जमशेदपुर	00

जी20 : मेहमानों को चांदी और सोने के बर्तनों में परोसा जाएगा भोजन

NEW DELHI : दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में 9 और 10 सितंबर को जी20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसमें कई देशों के मेहमान शामिल होने दिल्ली पहुंचेंगे। सम्मेलन के दुल्हन की तरह दिल्ली को सजाया गया है। जयपुर स्थित धातु की वस्तुओं का निर्माण करने वाली (मेटलवेयर) एक कंपनी ने कहा है कि यहां जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले राष्ट्राध्यक्षों और विश्व के अन्य नेताओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से प्रेरित कलाकृतियों वाले चांदी के विशेष बर्तनों पर भोजन परोसा जाएगा। आइरिस जयपुर ने मंगलवार को नयी दिल्ली में अपने कुछ चांदी के बर्तनों का पूर्वावलोकन आयोजित किया और कहा कि उसे विभिन्न आलीशान होटलों ने ऑर्डर पर बने टेबलवेयर और चांदी के बर्तनों की आपूर्ति को कहा है। उसके मुताबिक इनका उपयोग विदेशी मेहमानों द्वारा होटलों में प्रवास के दौरान भव्य रात्रि व दोपहर के भोज के लिए किया जाएगा। चांदी के बर्तन बनाने वाली कंपनी के लक्ष पाबुवाल ने कहा कि अधिकांश टेबलवेयर में स्टील या पीतल का आधार या चांदी की खूबसूरत कोटिंग के साथ दोनों का मिश्रण होता है, जबकि प्लेट जैसे कुछ बर्तनों पर सोने की कलई चढ़ी होगी।

धर्मांतरण रोकने का निर्देश देने से SC ने किया मना

AGENCY NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को उस जनहित याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें केंद्र सरकार को देश में धोखे से किए जाने वाले धर्मांतरण को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने का निर्देश देने की अपील की गई थी। चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस जे बी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने सवाल किया, 'अदालत को इन सबमें क्यों पड़ना चाहिए? कोर्ट सरकार को परमादेश कैसे जारी कर सकती है।' कर्नाटक के रहने वाले याचिकाकर्ता की तरफ से पेश अधिवक्ता जेरोम एंटो ने कहा कि हिंदुओं और नाबालिगों को निशाना बनाया जा रहा है और उनका धोखे से धर्मांतरण हो रहा है। बेंच ने याचिका को खारिज करते हुए कहा, 'अगर कोई ताजा मामला है और किसी पर मुकदमा चल रहा है, तो हम उस पर विचार कर सकते हैं। आखिर यह कैसी जनहित याचिका है? जनहित याचिका एक जरिया बन गई है और हर कोई इस तरह की याचिकाएं लेकर आ रहा है।'

धोखे से या डरा-धमकाकर होने वाले धर्मांतरण का हवाला

वकील भारती त्यागी के माध्यम से दाखिल जनहित याचिका में केंद्र और सभी राज्यों को पक्षकार बनाया गया था और धर्मांतरण पर अंकुश लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट से निर्देश जारी करने की मांग की गई थी। इसमें कहा गया था, 'धोखे से या डरा-धमकाकर, उपहार या आर्थिक लाभ का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराना चिंताजनक है। यह संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार), 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा) और 25 (धर्म का पालन और प्रचार करने की स्वतंत्रता) का उल्लंघन है।

BRIEF NEWS

खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना नीलू फैंस क्लब का मुख्य उद्देश्य: नीलकंठ सिंह

KHUNTI : नीलू फैंस क्लब की बैठक बुधवार को खूंटी के लोबिन बागान रोड नंबर 3 में विनोद नाग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में नीलू फैंस क्लब के संरक्षक और खूंटी के विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा मुख्य रूप से उपस्थित थे। बैठक का संचालन मदन मोहन गोप ने किया। बैठक में आनेवाले दिनों में क्लब द्वारा आयोजित होने वाले टूनार्मेंट के संबंध में विचार विमर्श किया गया। मौके पर विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि नीलू फैंस क्लब का गठन किए हुए लगभग पांच वर्ष हो गये हैं और इस दौरान लगभग 176 टीम इस क्लब से जुड़ गई हैं। कई अन्य नई टीम इस क्लब से जुड़ना चाह रहे हैं। उन्होंने कहा कि नीलू फैंस क्लब के गठन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करना है, ताकि वे खेल के क्षेत्र में राज्य और राष्ट्र का नाम विश्व स्तर पर रौशन कर सकें। बैठक को विधायक प्रतिनिधि काशीनाथ महतो और विनोद नाग ने भी संबोधित किया। बैठक में बिरसा धान, चरण खलखो, अनूप कुजूर, थीबू नाग, देवानंद मुंडा, हरिनाथ मुंडा, मानसिंह बोदरा, लोकनाथ पूर्ति, मांगो मुंडा, मुचिराय मुंडा के अलावा नीलू फैंस क्लब से जुड़ी 176 टीमों के कप्तान, उप कप्तान और खिलाड़ी उपस्थित थे।

प्रदेश कांग्रेस रांची में आज निकालेगी पदयात्रा

RANCHI : भारत जोड़ो यात्रा की पहली वर्षगांठ पर झारखंड के सभी जिलों में सात सितम्बर को पदयात्रा निकालेगी। साथ ही सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जाएगा। इस कड़ी में राज्य की राजधानी रांची में भी पदयात्रा होगी। इसमें झारखंड प्रभारी अविनाश पांडे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहेंगे। प्रदेश के सभी वरिष्ठ कांग्रेस नेता अपने जिलों में पदयात्रा और कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। इस संबंध में प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने बुधवार को अग्रणी मोर्चा संगठन के अध्यक्षों के साथ बैठक कर पदयात्रा में छात्र, युवा और महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने निर्देश दिया। प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने कहा कि सात सितम्बर को रांची में आयोजित पदयात्रा शाम 05 बजे शहीद स्थल से शुरू होकर मेन रोड, ओल्ड एचपी रोड, लालपुर होते हुए कोकर बिरसा समाधि स्थल पहुंचेगी, जहां एक सभा का आयोजन भी किया जाएगा। इसके माध्यम से मोदी सरकार के साढ़े नौ सालों के कार्यकाल में बेतहाशा महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक मुद्दे, युवाओं और महिलाओं की समस्या पर जनता से संवाद होगा।

सीएम शिवराज से मिले एयर मार्शल विभास पांडे एयर शो का दिया निमंत्रण

BHOPPAL : नागपुर से आए चीफ ऑफ एयर स्टाफ एयर मार्शल विभास पांडे ने बुधवार देर शाम भोपाल प्रवास के दौरान स्टेट हैंगर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से सौजन्य मुलाकात की और भोपाल में आगामी 30 सितंबर को होने वाले एयर शो का निमंत्रण पत्र दिया। इस एयर शो में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को भी आमंत्रित किया गया है। उल्लेखनीय है कि वायुसेना के 91वें वर्षगांठ समारोह के अवसर पर भारतीय वायुसेना द्वारा 30 सितम्बर को भोपाल के भोजताल पर मल्टी एयरक्राफ्ट फ्लाई पास्ट का आयोजन किया जा रहा है। समारोह में राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भी शामिल होंगे। साथ ही वायु सेना प्रमुख वीएस चौधरी, चीफ ऑफ द एयर स्टाफ एयर मार्शल विभाष पांडे एवं वायुसेना के वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और नागरिक उपस्थित रहेंगे। समारोह में फ्लाई पास्ट में लड़ाकू विमान (सुखोई -30, मिराज-2000, जगुआर, एलसीए तेजस, हॉक), हेलीकॉप्टर (चिनूक, एमआई-17 वी 5, चेतक) और परिवहन विमान (सी130, आईएल-78 और एएन-32) शामिल होंगे। समारोह में सूर्यकिरण एरोबेटिक टीम, सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम और आकाश गंगा टीम द्वारा हैरतअंगेज प्रदर्शन किये जाएंगे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने बगोदर विधानसभा क्षेत्र की संकल्प सभा को किया संबोधित

CM कहीं भी दौड़ लगा ले, बचेंगे नहीं : बाबूलाल

PHOTON NEWS GIRIDIH : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने बुधवार को सरिया में बगोदर विधानसभा क्षेत्र की संकल्प सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भ्रष्ट, निकम्मी विकास विरोधी सरकार से झारखंड के विकास की उम्मीद बेमानी है। उन्होंने कहा कि राज्य में 10 हजार करोड़ के घोटाले उजागर हुए हैं। लोहा, कोयला, पत्थर की लूट हुई है।

उन्होंने कहा कि राज्य में गरीबों, आदिवासियों की जमीन को मुख्यमंत्री और उनके परिवार ने नाम बदल बदल कर लूटा है। लूट की जांच ईडी, सीबीआई कर रही है। कई बड़े ऑफिसर गिरफ्तार हो चुके हैं लेकिन मुख्यमंत्री ईडी के दफ्तर जाने से घबरा रहे। सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगा रहे मुझे बचाइए लेकिन ये मोदी सरकार है, जिसने लाल किले से न खाएंगे न खाने देंगे की कसम खाई है। मुख्यमंत्री कहीं दौड़ लगा लें बचेंगे नहीं।

सभा को संबोधित करते बाबूलाल मरांडी। ● फोटोन न्यूज

मरांडी ने कहा कि किसी भी ऑफिस में आज बिना पैसे का कोई काम नहीं होता। मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए भी पैसे देने पड़ते हैं। राशन कार्ड में बहु का नाम भी बिना पैसे का नही चढ़ता। छोटे काम के लिए भी हजारों में घूस देने पड़ रहे। हेमंत सरकार सड़कों का मरम्मत भी नहीं करवा रही। विद्यालयों में शिक्षक नहीं, अस्पतालों में डॉक्टर्स नहीं, दवाई नहीं, गरीबों को एंबुलेंस नहीं। हेमंत सरकार केंद्र सरकार द्वारा भेजे गए अनाज को भी लूटवा रही।

उन्होंने कहा कि झारखंड भाजपा सरकार की देन है। अटल बिहारी वाजपेयी ने राज्य को बनाया। उनकी सरकार ने राज्य में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से गांव-गांव तक सड़कें पहुंचाई। सर्व शिक्षा अभियान से गांव के युवक युवतियों को पारा शिक्षक नियुक्त किया। पुल-पुलियों का जाल बिछाया। पिछले 9 वर्षों से मोदी सरकार ने झारखंड में विकास के नए कीर्तिमान स्थापित किए। पांच मेडिकल कॉलेज, देवघर में एम्स, हवाई अड्डा, बड़े-बड़े हाईवे का निर्माण कराया। मरांडी ने 2024 में केंद्र में तीसरी बार मोदी सरकार बनाने के लिए झारखंड की सभी 14 लोकसभा सीटों पर भाजपा को जिताने और राज्य में भी भाजपा की मजबूत सरकार बनाने के लिए संकल्पित होने का आह्वान किया।

बाबूलाल मरांडी ने 2024 के चुनाव में नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का किया आह्वान

GIRIDIH : संकल्प यात्रा के तीसरे चरण के तहत जमुवा में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने बुधवार को हेमंत सोरेन पर जमकर हमला बोला। झमाझम वर्षा के दौरान बाबूलाल मरांडी ने जनसभा को किया संबोधित। उन्होंने कहा कि संथाल परगना के भोगनाडीह से शुरू हुआ संकल्प यात्रा अब जनता के भारी समर्थन से जन संकल्प यात्रा बन चुका है।

उन्होंने कहा कि पौने चार साल के हेमंत सरकार में झारखंड का विकास तो नहीं हुआ, बल्कि कानून व्यवस्था चौपट हो गया। प्रत्येक दिन पांच से अधिक हत्या, दुष्कर्म, अपहरण की घटना से झारखंड भयभीत है। पुलिस कानून व्यवस्था ठीक करने के बजाए वसूली और हेमंत सरकार के फिलाफ बोलने वालों पर केस करने में व्यस्त है। अंचल ब्लॉक और जिले के सरकारी कार्यालयों में बिना पैसे दिये कोई काम नहीं होता है। भ्रष्टाचार मुक्त, अपराध मुक्त प्रदेश बनाना है तो झारखंड से हेमंत सरकार को हटाना है और भाजपा को लाना है।

उन्होंने कहा कि परिवार, पैसे, बिचौलिया, दलालों के लिए राजनीति करने वाले हेमंत ईडी के कार्रवाई से डर कर भाग रहे हैं। हेमंत सरकार दलालों, बिचौलियों को बचाने में व्यस्त है। ट्रांसफर-पोस्टिंग और योजनाओं में हेमंत सरकार पैसा लेना बंद कर दे तो भ्रष्टाचार खुद समाप्त हो जाएगा। हेमंत सोरेन को जनता की चिंता नहीं है।

उन्होंने कहा कि अटल बिहारी ने झारखंड राज्य के सपने को साकार किया और गांव-गांव सड़क, नदी-नालों पर पुल-पुलिया और बिजली दिया। इस प्रदेश को संवारने का कार्य भी भाजपा ही करेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में चांद पर पहुंच गये। अब सूर्य की बारी है। उन्होंने 2024 में केंद्र में मोदी को प्रधानमंत्री और झारखंड में भाजपा की सरकार बनाने का संकल्प दिलाया।

झामुमो ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल पर जमकर साधा निशाना, ऑडियो किया जारी

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने बाबूलाल के एक ऑडियो जारी करते हुए कहा कि बाबूलाल बड़े धनी व्यक्ति हैं और धन का हिसाब उनके पास बहुत सारा है।

झामुमो की ओर से जारी ऑडियो में कहा गया कि महेश पोद्दार के द्वारा दीपक प्रकाश की निगरानी में नवीन जायसवाल नकदी दो करोड़ रुपये, चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह के द्वारा दीपक कुमार वर्मा की निगरानी में दो करोड़, अमर कुमार बाउरी एक करोड़ रुपये बिरंची नारायण के द्वारा संजय सेठ की निगरानी में, आलोक कुमार चौरसिया दो करोड़ रुपये अनंत ओझा के द्वारा उषा पांडेय की निगरानी में, जानकी प्रसाद यादव दो करोड़ रुपये, रघुवर दास उनके द्वारा राजेन्द्र सिंह की निगरानी में

मीडिया को संबोधित करते सुप्रियो भट्टाचार्य। ● फोटोन न्यूज

उपलब्ध सारा रुपये की पर्ची मुख्यमंत्री को सौंप दिया गया है। शेष राशि 36 माह के बाद मुख्यमंत्री उपलब्ध करायेंगे।

भट्टाचार्य बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित होना चाहिए कि यह मेहनत का पैसा भाजपा के तत्कालीन विधायकों के पास पहुंचा की नहीं। यदि नहीं पहुंचा तो यह पूरा दायित्व बाबूलाल का बनता है, यह जो पैसा की बात वह 2018 में कर रहे थे। यह पैसा उन लोगों के पास पहुंच जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बाबूलाल मरांडी पूरी तरह से मानसिक रूप से उदास हो चुके हैं। हजारीबाग परिसदन में उन्होंने कहा कि 10 हजार करोड़ का घोटाला हेमंत सरकार ने किया। अजीब स्थिति है। इसका तथ्य आना चाहिए। बाबूलाल को खुलकर बोलना चाहिए कि जिन बातों का जिक्र अपने समय पर किया उन बातों से वह कैसे मुकरेंगे।

उन्होंने कहा कि आप पूछिये अपने ईडी के मित्रों और विदेश मंत्रालय से प्रतिष्ठित वकील हरीश साल्वे की तीसरी शादी में नीरव मोदी और ललित मोदी क्या कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपके मित्र सुनील तिवारी के कंपनी के द्वारा बैंक से आपको पैसा भेजा जाता था। सुनील तिवारी योगेन्द्र तिवारी के साथ व्यवसाय करते हैं। आप ही ने रघुवर दास के बारे में बहुत सारी बातें कही थी। आप प्रदेश अध्यक्ष हैं और रघुवर दास राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

आपने विधानसभा में कहा था कि भ्रष्टाचार के कारण मुझे रात में नींद नहीं आती है। भ्रष्टाचार का बीज आपने बोया है। लोगों के बीच में मिथ्याचार करना भाजपा का काम है। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता बेवकूफ नहीं है। आपको जल्द ही सारे तथ्यों के साथ एक्सपोज करने वाले हैं। मुख्यमंत्री के नौ सितम्बर को ईडी कार्यालय जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि नौ सितम्बर में अभी बहुत लेट है।

पीएम मोदी 14 सितंबर को रायगढ़ आएंगे कोड़ातराई में जनसभा को करेंगे संबोधित

AGENCY RAIGARH : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 14 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रायगढ़ आएंगे। पीएम मोदी की सभा के मद्देनजर बुधवार 6 सितंबर को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व सांसद अरुण साव व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल रायगढ़ आएंगे। मोदी कोड़ातराई में जनसभा को संबोधित करेंगे। विदित हो कि पहले बीते 17-19 अगस्त को पीएम की सभा प्रस्तावित थी, लेकिन ऐन मौके पर उनका कार्यक्रम टल गया था।

छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा का राष्ट्रीय नेतृत्व बेहद सतर्क है। रायगढ़ शहर से पांच से सात किलोमीटर दूर कोड़ातराई में पीएम मोदी की ये सभा होने वाली है। शनिवार को बीजेपी के दिग्गज नेताओं ने सभा स्थल का निरीक्षण किया। इसमें प्रदेश प्रभारी ओम माथुर, सह प्रभारी नितिन नवीन और प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव शामिल थे।

पीएम दौरे को लेकर बीजेपी की तैयारियां पिछले एक सप्ताह से तेज हुई हैं। सभास्थल की व्यवस्था से लेकर भीड़ जुटाने तक को लेकर लगातार मीटिंग हो रही है। दो दिन पहले केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और छत्तीसगढ़ के सह चुनाव प्रभारी मनसुख मंडाविया ने जिले की पांच विधानसभा की कोर कमेटी की बैठक ली है।

पार्टी सूत्रों एवं जिला प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार 14 सितंबर को पीएम मोदी रायगढ़ आएंगे। पीएम के दौरे की आरंभिक सूचना जिला कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा व एसएसपी सदानंद कुमार को मिल गई है। मोदी विशेष विमान से जिंदल एयरपोर्ट आएंगे। जहां से हेलिकॉप्टर से कोड़ातराई जाएंगे।

प्रदेश नेतृत्व ने पीएम मोदी की आमसभा के लिए कोड़ातराई का चयन किया क्योंकि कोड़ातराई की आमसभा के माध्यम से रायगढ़ विधानसभा के अलावा खरसिया व चन्द्रपुर विधानसभा क्षेत्र को भी फोकस किया जा सके। इस सिलसिले में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व नेता प्रतिपक्ष 6 सितंबर को जिला भाजपा कार्यालय में एक आवश्यक बैठक लेंगे।

मराठा समाज को दिया जाएगा कुनबी जाति का प्रमाण पत्र : सीएम एकनाथ

AGENCY MUMBAI : मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि मराठा समाज में जिन लोगों की वंशावली में निजामकालीन शासन के दौरान शिक्षा और राजस्व में आरक्षण का उल्लेख होगा, उन्हें कुनबी जाति का प्रमाण पत्र दिया जाएगा। इससे संबंधित शासन आदेश राज्य सरकार बहुत जल्द जारी करेगी। इसके लिए पूर्व न्यायाधीश संदीप शिंदे की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति गठित की गई है। यह समिति राजस्व सचिव की देखरेख में काम करेगी और एक महीने के अंदर अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को देगी।

उधर इसी मुद्दे को लेकर भूख हड़ताल कर रहे मराठा क्रांति मोर्चा के संयोजक मनोज जारंगे पाटिल ने कहा कि वे मुख्यमंत्री के निर्णय के बाद अपने सहयोगियों से

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे।

चर्चा करेंगे। गुरुवार को दिन में 11 बजे तक शासन निर्णय मिलने के बाद वे भूख हड़ताल को वापस लेने का निर्णय लेंगे।

जानकारी के अनुसार, मराठा समाज को 1962 से पहले निजामकालीन शासन में मराठवाड़ा में कुनबी जाति का प्रमाणपत्र मिल रहा था। लेकिन मराठवाड़ा जब संयुक्त महाराष्ट्र में शामिल हो गया तो यह जाति प्रमाणपत्र मिलना बंद हो गया। मराठा क्रांति मोर्चा के संयोजक मनोज जारंगे पाटिल ने मराठा समाज कुनबी जाति प्रमाणपत्र दिए जाने की मांग को लेकर पिछले नौ दिनों से भूख हड़ताल कर रहे थे। मनोज जारंगे की मांग को लेकर आज कैबिनेट की बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन लोगों के पास निजामकालीन शासन के कुनबी जाति प्रमाणपत्र के सबूत होंगे, उन्हें कुनबी जाति प्रमाणपत्र दिए जाने का निर्णय लिया है। साथ ही निजामकालीन शासन के दौरान जारी शिक्षा और राजस्व क्षेत्र में आरक्षण की छानबीन के लिए पूर्व न्यायाधीश की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति गठित करने का भी निर्णय कैबिनेट की बैठक में लिया गया।

मुख्यमंत्री शिंदे ने बताया कि राज्य सरकार मराठा आरक्षण के लिए सकारात्मक है।

भाजपा ने की बैठक, नेताओं ने कहा सिमडेगा में ऐतिहासिक होगी संकल्प यात्रा

PHOTON NEWS SIMDEGA : आगामी 20 सितंबर को कोलेबिरा में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी संकल्प यात्रा को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम की सफलता को लेकर कोलेबिरा में कोलेबिरा विधानसभा स्तरीय कार्यकताओं की बैठक हुई। कोलेबिरा मंडल अध्यक्ष अशोक इंदवार ने सभी का स्वागत किया। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मण बड़ाईक ने कहा कि पूरे राज्य में नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी का संकल्प यात्रा हो रहा है। कोलेबिरा और सिमडेगा में भी संकल्प यात्रा को लेकर कार्यकर्ता उत्साहित हैं।

बैठक को संबोधित करते हुए संकल्प यात्रा के जिला संयोजक सह पूर्व मंत्री विमला प्रधान ने कहा कि पूरे झारखंड में संकल्प यात्रा को जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। झारखंड सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। कार्यकर्ता कमर कसकर तैयार रहें, कोलेबिरा विधानसभा एवं सिमडेगा विधानसभा की संकल्प यात्रा ऐतिहासिक होनी चाहिए। यह 2024 लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव का बिगुल है।

संकल्प यात्रा के जिला सहसंयोजक केंद्रीय मंत्री के सांसद प्रतिनिधि सुशील श्रीवास्तव ने कहा कि नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी की संकल्प यात्रा ऐतिहासिक होगी। इसको लेकर सभी कार्यकताओं में उत्साह है। इसकी तैयारी जोर-शोर से की जा रही है। सभी कार्यकर्ता संकल्पित हैं कि 2024 में वर्तमान सरकार को उखाड़ फेंकना है। सभी कार्यकताओं ने अपने-अपने स्तर से कार्यक्रम की सफलता को

बैठक में शामिल भाजपाई। ● फोटोन न्यूज

लेकर तैयारी शुरू कर दी है।

कार्यक्रम की सफलता के लिए विभाग वार कार्यकताओं को जिम्मेवारी सौंपी गयी है। तैयारी की समीक्षा को लेकर अगली बैठक 10 सितंबर को कोलेबिरा और सिमडेगा में दुबारा करने का निर्णय लिया गया।

मौके पर कोलेबिरा विधानसभा संयोजक भोला साहू, सह संयोजक सुजान मुंडा, जिला मंत्री दिलेश्वर सिंह, पूर्व प्रत्याशी महेंद्र भगत, सांसद प्रतिनिधि चिंतामणि कुमार, महामंत्री रोहित कुमार साहू, ठेठईटांगर मंडल अध्यक्ष सुरजन प्रधान, कोनपाल मंडल अध्यक्ष विजय महतो, जलडेगा मंडल अध्यक्ष मोतीलाल ओहदार, जनेश्वर बिल्होर, बसंत प्रधान, रामविलास बड़ाईक, प्रदीप जायसवाल, रूपधर सिंह, अमरेंद्र बड़ाईक, लाली देवी, बालकेश्वर सिंह, मुकेश श्रीवास्तव, रवि गुप्ता आदि मौजूद थे।

विधायक सुदेश कुमार महतो ने किया शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन

SILLI के ढाई हजार शिक्षकों को किया सम्मानित

PHOTON NEWS RANCHI : सिल्ली के विधायक सुदेश कुमार महतो ने बुधवार को सिल्ली स्टेडियम परिसर में आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह में विधानसभा क्षेत्र के सभी सरकारी, गैर-सरकारी विद्यालयों के ढाई हजार शिक्षकों एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित किया।

समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में शिक्षकों के महत्व को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। हमारे जीवन को उचित मार्गदर्शन देकर सही दिशा दिखाने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। शिक्षक एक अनमोल उपहार हैं। वे विद्यार्थियों के जीवन को अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और मार्गदर्शन से मजबूत आकार देते हैं

शिक्षक सम्मान समारोह में उपस्थित सिल्ली विधायक सुदेश महतो व अन्य। ● फोटोन न्यूज

और सफलता की ओर ले जाते हैं।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में सिल्ली विधानसभा को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए किये जा रहे प्रयासों में सभी गुरुजन अपनी महती भूमिका अदा करें। सिल्ली विधानसभा क्षेत्र में शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रोत्साहित कर शिक्षा विकास को सुदृढ़ करने का ऐसा वातावरण तैयार करना है, जिससे यह क्षेत्र पूरे राज्य में उदाहरण पेश करे। इन्हीं प्रयासों के तहत छात्रों के लिए हाई स्कूलों में प्रोफेशनल्स द्वारा स्मार्ट क्लासेज शुरू किए गए हैं और इसके अच्छे परिणाम भी मिल रहे हैं।

उन्होंने कहा कि अपने निश्चय और अभियान के तहत स्टूडेंट्स एक्सप्रेस बस सेवा शुरू की गई है। यह बस सेवा अभी सोनाहातू से शुरू हुई है। आने वाले दिनों में यह निःशुल्क बस सेवा सिल्ली, राहे और जोन्हा से भी चलेगी। साथ ही कहा कि जल्द ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए निःशुल्क कोचिंग की शुरूआत होगी। इसके लिए दो बार नामांकन प्रवेश परीक्षा भी आयोजित की जा चुकी है।

महतो ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि 100 प्रतिभावान छात्रों को रहने, खाने और पढ़ने की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध करवाएंगे। उन्होंने कहा कि विधानसभा के सभी छात्रों एक लाख किताबों की क्षमता वाला लाइब्रेरी देने की तैयारी पूरी कर ली गई है। जल्द ही इसकी शुरूआत की जाएगी। यह लाइब्रेरी 247 चलेगी।

'भारत बनाम इंडिया' के मसले पर हस्तक्षेप करे सुप्रीम कोर्ट: मायावती

AGENCY LUCKNOW : बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने बुधवार को कहा कि 'भारत बनाम इंडिया' के मसले पर सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना चाहिए। मायावती ने आरोप लगाया कि यह सबकुछ सत्तापक्ष और विपक्ष की मिलीभगत का नतीजा है।

मायावती ने पत्रकार वार्ता में कहा कि भारत अर्थात इंडिया देश का चिर-परिचित एवं गरिमामय संवैधानिक नाम है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के इस पवित्र संविधान से अपने देश के सभी जाति एवं धर्मों के लोगों का बेहद लगाव है। इसके साथ बदलाव अथवा छेड़छाड़ करना उचित और न्यायसंगत नहीं है। इस मामले में हमारी पार्टी का यह मानना है कि यह घोर अनुचित है।

उन्होंने आरोप लगाया कि देश के नाम को लेकर भाजपा-नीत राजग

मायावती की फाइल फोटो।

सरकार को यह मौका खुद विपक्ष ने सोची-समझी रणनीति के तहत अपने गठबंधन का नाम 'आईएनडीआईए' रखकर दिया है। यह सबकुछ सत्तापक्ष व विपक्ष की मिलीभगत से हो रहा है।

मायावती ने कहा कि बसपा की मांग है कि सुप्रीम कोर्ट को खुद इसका संज्ञान लेकर यहां ऐसे सभी संगठनों, पार्टियों व गठबंधनों आदि पर तुरंत रोक लगाना चाहिए, जो विशेषकर अपने देश के नाम पर बने हैं। वर्ना फिर अपने देश की गरिमा को भी काफी ठेस पहुंचेगी।

HC में मुख्य सचिव ने कहा- देवघर AIMS में जल्द उपलब्ध कराई जाएंगी मूलभूत सुविधाएं

सांसद की जनहित याचिका पर सुनवाई, मुख्य सचिव को शपथ पत्र दाखिल करने का निर्देश

SPECIAL REPORTER RANCHI : देवघर एम्स में बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर सांसद निशिकांत दुबे की जनहित याचिका की सुनवाई बुधवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में कोर्ट के आदेश के आलोक में राज्य के मुख्य सचिव एवं एम्स, देवघर के डायरेक्टर कोर्ट के समक्ष वर्चुअल रूप से उपस्थित हुए। मुख्य सचिव ने कोर्ट को भरोसा दिलाया कि जल्द ही देवघर, एम्स में सारी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाएगी। कोर्ट ने मुख्य सचिव को शपथ पत्र दाखिल करने का निर्देश दिया। बता दें कि पूर्व की सुनवाई के दौरान प्रार्थी के अधिवक्ता की ओर से कहा गया था कि देवघर एम्स में सुविधा मामले में पथ निर्माण विभाग, बिजली विभाग, फायर विभाग सहित अन्य विभागों ने अलग-अलग जवाब दाखिल किया है, लेकिन इन जवाबों में एम्स द्वारा उठाए गए बिंदुओं का सटीक जवाब नहीं मिल रहा है। सरकार के सक्षम अधिकारियों द्वारा देवघर एम्स को लेकर प्रार्थी द्वारा उठाए गए समस्याओं पर स्पष्ट जवाब आना चाहिए था। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले की सुनवाई की। दरअसल, राज्य सरकार के पथ निर्माण विभाग ने मामले में शपथ पत्र दाखिल किया है, इसमें बताया गया है कि एम्स, देवघर ने अपना गेट का स्थान नहीं बताया है। इस कारण देवघर, एम्स के लिए अप्रोच रोड नहीं बन पा रहा है। प्रार्थी ने देवघर एम्स में इलेक्ट्रिक सबस्टेशन बनने, अप्रोचिंग रोड बनने, फ्लाईओवर बनने, आवश्यकतानुसार पानी की व्यवस्था होने, फायर सेफ्टी की पर्याप्त व्यवस्था आदि की सुविधा मुहैया कराने का आग्रह राज्य सरकार से किया गया है। एम्स देवघर की ओर से अधिवक्ता प्रशांत पल्लव ने पैरवी की। याचिका में सांसद निशिकांत दुबे की ओर से कहा गया है देवघर एम्स में कई बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। उनकी ओर से कोर्ट से देवघर एम्स के लिए पर्याप्त बिजली, पानी, पहुंच सड़क, फायर ब्रिगेड वाहन आदि की सुविधा उपलब्ध कराने का आग्रह कोर्ट से किया गया है।

प्रदीप यादव की याचिका खारिज

RANCHI : विधायक प्रदीप यादव के खिलाफ यौन शोषण का आरोप लगाने वाली पीड़ित महिला (सूचक) की ओर से ट्रायल को दुमका, सेशन कोर्ट से सेशन जज, बोकारो के पास ट्रांसफर करने को लेकर दायर ट्रांसफर पिटिशन की सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में हुई। हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति एसके द्विवेदी की कोर्ट ने पीड़िता की याचिका को खारिज कर दिया। मामले में होटल शिव सृष्टि पैलेस, कुंदा, देवघर के जनरल मैनेजर तुषा सिन्हा की ओर से अधिवक्ता राधा कृष्ण गुप्ता ने पैरवी की। दरअसल, पीड़िता ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर कहा था कि वह बोकारो में अकेली रहती है, उसके अभिभावक बुजुर्ग है। उसके द्वारा देवघर महिला थाने में दर्ज केस की ट्रायल दुमका के सेशन कोर्ट में चल रही है। ट्रायल अभी लंबित है। बोकारो से दुमका की दूरी काफी ज्यादा होने के कारण उसे काफी परेशानी हो रही है। ऐसे में ट्रायल को सेशन जज बोकारो के पास ट्रांसफर किया जाय। पीड़िता ने प्रदीप यादव के खिलाफ यौन शोषण मामले में 20 अप्रैल 2019 को देवघर महिला थाना में कांड संख्या 13/2019 दर्ज कराई थी। इस मामले में 28 सितंबर 2019 को प्रदीप यादव को झारखंड हाई कोर्ट से बेल मिली है।

हाईकोर्ट का आदेश, मां छिन्नमस्तिका मंदिर के बगल में भैरवी नदी के तट के दोनों तरफ बनाएं स्थाई घाट

RANCHI : रजरप्पा स्थित मां छिन्नमस्तिका मंदिर के बगल में भैरवी नदी के तट पर दोनों तरफ नहाने का घाट बनाने, चेंजिंग रूम बनाने, मंदिर के आसपास पर्याप्त संख्या में टॉयलेट निर्माण को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर झारखंड हाइकोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है। हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने राज्य सरकार के टूरिज्म विभाग, रामगढ़ जिला प्रशासन को मां छिन्नमस्तिका मंदिर के बगल के भैरवी नदी के तट पर दोनों तरफ पर्याप्त संख्या में नहाने के लिए स्थाई घाट बनाने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने जिला प्रशासन को निर्देश दिया है कि मंदिर से स्नान घाट पहुंचने वाली सड़क को अतिक्रमण मुक्त किया जाये। भैरवी नदी के दोनों तरफ के घाट पर पर्याप्त संख्या में चेंजिंग रूम बनाये जायें और वहां स्वच्छता का ध्यान रखा जाये। मंदिर के आसपास भैरवी नदी के घाट के दोनों तरफ लाइटिंग की समुचित व्यवस्था हो। मंदिर के पास स्थित क्यू कॉम्प्लेक्स में टॉयलेट और वॉशरूम को जिला प्रशासन मेंटेन रखे। रामगढ़ डीसी जिम्मेदार अधिकारियों की एक टीम बनाये जो मंदिर क्षेत्र का निरीक्षण कर यह पता करे कि यहां सभी जेंडर के लिए पर्याप्त संख्या में वेटिंग हॉल, पर्याप्त संख्या में टॉयलेट की व्यवस्था है या नहीं। अगर इसकी कमी है तो इसके लिए स्थान चिन्हित किया जाये। साथ ही यह भी देखा जाये कि टॉयलेट निर्माण मंदिर के सौंदीकरण के रास्ते में ना आये। मंदिर क्षेत्र में श्रद्धालुओं के लिए पेयजल की समुचित व्यवस्था हमेशा उपलब्ध रहे। मेडिकल सुविधा के तहत फर्स्ट एड की व्यवस्था रहे। बता दें कि प्रार्थी ने याचिका दायर कर संबंधित अथॉरिटी को मां छिन्नमस्तिका मंदिर के निकट भैरवी नदी के तट के दोनों तरफ नहाने के लिए स्थाई घाट, चेंजिंग रूम बनाने का आग्रह किया है। कहा है कि स्थाई चेंजिंग रूम नहीं होने से खासकर महिला श्रद्धालुओं को काफी परेशानी होती है। वर्षा के समय नदी में काफी पानी रहता है जिससे स्नान करने वाले श्रद्धालुओं को दुर्घटना का सामना करना पड़ता है। कोर्ट ने उक्त दिशा निर्देश देते हुए याचिका निष्पादित कर दी।

एनोस एक्का की याचिका खारिज

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट ने विधानसभा अध्यक्ष द्वारा झारखंड पार्टी से जारी व्हिप का उल्लंघन मामले में एनोस एक्का की विधायकी समाप्त करने के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर फैसला सुनाया है। हाई कोर्ट के जस्टिस एसके द्विवेदी की कोर्ट ने बुधवार को एनोस एक्का की याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने विधानसभा अध्यक्ष द्वारा एनोस एक्का को विधानसभा सदस्यता से निष्कासित किए जाने को सही ठहराया है। याचिका में एनोस एक्का ने विधानसभा अध्यक्ष द्वारा 13 अगस्त, 2009 को उनकी विधानसभा सदस्यता रद्द किए जाने के आदेश को चुनौती दी थी। उन पर वर्ष 2005 के झारखंड विधानसभा चुनाव के बाद झारखंड पार्टी के व्हिप का उल्लंघन करते हुए एनडीए के पक्ष में मतदान करने का आरोप है। विधानसभा अध्यक्ष ने विस्तृत सुनवाई करने के बाद एनोस की विधायकी की समाप्त कर दी थी। एनोस ने याचिका में कहा था कि पार्टी द्वारा जारी व्हिप उन पर लागू नहीं होता है और उक्त व्हिप को बाद में उनकी पार्टी ने एनडीए के पक्ष में मतदान करने के लिए फिर से व्हिप जारी किया था। इसलिए विधानसभा अध्यक्ष द्वारा उनकी विधायकी रद्द किया जाना अनुचित है। वर्ष 2005 के विधानसभा चुनाव में एनोस एक्का कोलिबीरा विधानसभा से चुने गए थे। विधानसभा की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार अर्पण दुबे एवं अंकितेश कुमार झा ने पैरवी की।

बच्चू यादव को SC से मिली बेल

RANCHI : 1000 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में फंसे पंकज मिश्रा के सहयोगी बच्चू यादव की ओर से दायर जमानत याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को अपना फैसला सुनाया है। कोर्ट ने एड मामले में बच्चू यादव को जमानत प्रदान कर दी। 4 सितंबर को कोर्ट ने सभी पक्षों की सुनवाई पूरी होने के बाद मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था। मामले में सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस एएस बोपाना की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने फैसला सुनाया। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की। पूर्व की सुनवाई में मामले में कोर्ट ने ईडी को नोटिस जारी करते हुए 4 सप्ताह में जवाब दायर करने का निर्देश दिया था। झारखंड हाईकोर्ट से बच्चू यादव की जमानत याचिका खारिज हो चुकी है। इसके बाद उनकी ओर से सुप्रीम कोर्ट में जमानत याचिका दायर की गई है। याचिका में कहा गया है कि वह इस मामले में निर्दोष है साजिश के तहत उन्हें फंसाया गया है। बता दें कि बच्चू यादव को ईडी ने रिमांड पर लेकर पूछताछ की थी, इसके बाद 11 अगस्त 2022 को उसे न्यायिक हिरासत पर जेल भेज दिया था। ईडी की ओर से बच्चू यादव, प्रेम प्रकाश सहित तीन के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में दाखिल हो चुकी है। मामले में उनके खिलाफ ईडी कोर्ट में आरोप गठन भी हो चुका है। मामले को लेकर ईडी ने ईसीआईआर 4/ 2022 दर्ज किया है। उल्लेखनीय है कि ईडी की टीम ने पत्थर व्यवसायी बच्चू यादव को 4 अगस्त को गिरफ्तार किया था।

BRIEF NEWS

धुर्वा में आज दही हांडी मटका फोड़ प्रतियोगिता

RANCHI : श्रीकृष्ण विकास परिषद के मुख्य संरक्षक कैलाश यादव ने कहा कि सात सितम्बर को धुर्वा नर्सरी पार्क कुरुक्षेत्र मैदान में आयोजित दही हांडी मटका फोड़ प्रतियोगिता और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। यादव ने बुधवार को बताया कि दही हांडी मटका फोड़ प्रतियोगिता का अधिकतम ऊंचाई 25 फीट होगा । उन्होंने बताया कि धुर्वा में पहली बार दही हांडी प्रतियोगिता कार्यक्रम लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बिंदु होगा । इसमें मथुरा वृंदावन और द्वारिका के तीन टीमें भाग लेंगी। सभी ग्रुप में 12-12 युवा गोविंदाओं की टोली रहेगी । प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेता टीम के सभी गोविंदाओं को धन सामग्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। दही हांडी प्रतियोगिता के बाद आठ बजे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पूजा के अवसर पर रामायण मंडली की ओर से कीर्तन भजन किया जाएगा तथा रात 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के बाद पूजा स्थल पर आरती मंगल किया जाएगा।

पुलिसकर्मियों का एडवांस इन्वेस्टिगेशन ट्रेनिंग कोर्स 12 सितंबर से

RANCHI : एसआई रैंक के पुलिसकर्मियों का पांच दिवसीय एडवांस इन्वेस्टिगेशन ट्रेनिंग कोर्स होगा। प्रशिक्षण विद्यालय होटवार में यह कोर्स 12 सितंबर से शुरू होगा, जो 16 सितंबर तक चलेगा। इस दौरान पुलिस पदाधिकारियों को अपराधों से संबंधित जांच प्रक्रियाओं को लेकर प्रशिक्षण दिया जायेगा। पुलिसकर्मी इसमें ऑफलाइन और ऑनलाइन शामिल हो सकते हैं। इसको लेकर आईजी ट्रेनिंग ने आदेश जारी किया गया है।

हिंदी लिख और पढ़ नहीं पाते झारखंड के कई मैट्रिक पास हवलदार

RANCHI : झारखंड के मैट्रिक पास कई हवलदार ऐसे हैं, जो हिंदी लिख और पढ़ नहीं पाते। यह मामला एसीपी और एमएसीपी लाभ की स्वीकृति के लिए आयोजित केंद्रीय चयन पर्षद की बैठक के दौरान सामने आया। गौरतलब है कि बीते 29 अगस्त को पुलिस मुख्यालय में चयन पर्षद की बैठक आयोजित की गई थी। बैठक के दौरान 29 हवलदार स्तर के पुलिसकर्मियों को एसीपी और एमएसीपी लाभ देने पर विचार किया गया। जिनमें से सिर्फ 19 पुलिसकर्मी ही एसीपी और एमएसीपी का लाभ पाने के योग्य पाए गए। जबकि 10 पुलिसकर्मियों को इस योजना का लाभ इसलिए नहीं मिल पाया, क्योंकि वो हिंदी पढ़ने और लिखने की योग्यता परीक्षा में फेल हो गए थे।

ये पुलिसकर्मी हिंदी पढ़ने और लिखने की योग्यता परीक्षा में हुए फेल : खीरू राय, राजकुमार सिंह, योगी राय, छोटेलाल सिंह, गणेश बैठा, केदारनाथ प्रसाद, योगेंद्र महतो, कामेश्वर राम, जेठालाल हेंब्रम व जयलाल हजाम।

रिम्स में 11 सितंबर से शुरू होगी एमबीबीएस-बीडीएस की क्लास

RANCHI : रिम्स में एमबीबीएस-बीडीएस की क्लास 11 सितंबर से शुरू होगी। मालूम हो कि एमबीबीएस और बीडीएस के 900 छात्रों को 19 जुलाई को हॉस्टल खाली करने का आदेश दिया गया था। कैंपस में मारपीट की घटना के बाद प्रबंधन ने यह निर्णय लिया था। वही क्लास भी सस्पेंड कर दिया गया था। अपने गार्जियन के साथ आने वाले छात्रों से शपथ पत्र लेकर हॉस्टल का आवंटन किया गया। अब रिम्स प्रबंधन ने क्लास शुरू करने को लेकर नोटिस जारी किया है।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

घूस लेते गिरफ्तार हुए इंजीनियर के खिलाफ पीई दर्ज करने की अनुमति

CRIME REPORTER RANCHI : भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने 20 जुलाई 2021 को लघु सिंचाई प्रमंडल, चाईबासा के एक्सक्यूटिव इंजीनियर मनोज कुमार विद्यार्थी को 20 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया था। इस मामले में सीएम हेमंत सोरेन ने बुधवार को मनोज कुमार विद्यार्थी के खिलाफ पीई दर्ज करने की प्रस्ताव अनुमति दे दी।

रिश्वत लेने और करोड़ों की संपत्ति अर्जित करने का आरोप

मामले के आईओ इंस्पेक्टर स्तर के पुलिस पदाधिकारी की ओर से जांच रिपोर्ट सौंपा गया है। जांच रिपोर्ट के मुताबिक, मनोज कुमार विद्यार्थी की गिरफ्तारी के बाद उनके घर की तलाशी में बरामद नौ लाख रूपया और रिश्वत की रकम

इंजीनियर मनोज कुमार विद्यार्थी।

को अपने किराए के मकान में रखने के आरोप को प्रथम दृष्टया सत्य पाया गया। आरोपी और आरोपी की पत्नी के नाम से पटना, रांची और उनके पैतृक गांव में करोड़ों की अचल संपत्ति होने का उल्लेख किया गया है। मामले में गुप्त रूप से सत्यापन के क्रम में यह बात सामने में आयी है कि आरोपी मनोज कुमार विद्यार्थी ने ठेकेदारों द्वारा किए गए कार्यों के बिल भुगतान करने के एवज में प्रतिशत के हिसाब से रिश्वत लिया करते थे। मनोज कुमार की ओर से चाईबासा के बंदगांव में आठ लाख की लागत से बन रही पीसीसी सड़क का बिल पास करने के लिए रिश्वत की मांग की थी। यह कार्य कृष्णालया कंस्ट्रक्शन कंपनी को मिला था। 1000 मीटर सड़क का निर्माण आठ लाख रुपये की लागत से होना था। मनोज विद्यार्थी ने लागत का 20 प्रतिशत बतौर कमीशन मांगा था। इस हिसाब से अभियंता को 1।60 लाख रुपये मिलने थे। मनोज कुमार और ठेका कंपनी के प्रतिनिधि के बीच पहली किस्त में 20 हजार रुपये देने पर सहमति हुई थी। पहली किस्त के लेनदेन में एसीबी ने मनोज कुमार को गिरफ्तार कर लिया था।

झारखंड में 11 सितंबर तक बारिश की संभावना

RANCHI : राज्य में मानसून एक फिर सक्रिय हुआ है। राजधानी रांची में बुधवार सुबह से ही रूक-रूककर बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने अगले पांच दिनों तक राज्य के सभी हिस्सों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश होने की संभावना जाहिर की है। अगले पांच दिनों तक किसी भी तरह के अधिकतम तापमान में बड़े बदलाव की संभावना से भी इनकार कर दिया है। मौसम विभाग ने राज्य में 11 सितंबर तक मौसम का मिजाज इसी तरह रहने का अनुमान लगाया है। बदले मौसम के मिजाज को देखते हुए आठ सितंबर तक अलर्ट येलो अलर्ट जारी हुआ है। बुधवार और सात सितंबर को राज्य के कई हिस्सों में गर्जन और वज्रपात की संभावना जाहिर की गई है। मौसम विभाग ने आठ सितंबर को राज्य के दक्षिणी और निकटवर्ती मध्य भागों में बारिश के साथ वज्रपात की संभावना जाहिर की है। राज्य के कई हिस्सों में गर्जन की भी संभावना है। 9 सितंबर से लेकर 11 सितंबर तक मौसम विभाग ने अभी चेतावनी जारी नहीं की है।

डेंगू कैपिटल बन रही रांची, रिम्स में 18 मरीज इलाजरत, प्लेटलेट्स की बढ़ी मांग

PHOTON NEWS RANCHI : बदलते मौसम ने बीमारियों की रफ्तार में तेजी ला दी है। राज्य इन दिनों डेंगू और चिकनगुनिया की चपेट में है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़े बताते हैं कि 15 जिले डेंगू और 10 जिले चिकनगुनिया की चपेट में हैं। जमशेदपुर में डेंगू के मरीजों की संख्या सर्वाधिक 475 है। रांची दूसरे स्थान पर है, जहां एक मरीज की मौत हो चुकी है। रांची में अगस्त तक 26 डेंगू और 47 चिकनगुनिया के मामले मिले थे। रांची के रिम्स और सदर अस्पताल में 20 मरीज इलाजरत हैं। सरकारी जांच व्यवस्था के साथ-साथ निजी लैब में हो रही जांच में डेंगू के मामले सामने आ रहे हैं। डेंगू-चिकगुनिया के मामले को देखते हुए राजधानी रांची में प्लेटलेट्स की मांग बढ़ गयी है।

हर दिन लगभग 10 यूनिट प्लेटलेट्स की जरूरत राजधानी रांची को हो रही है। आंकड़ों के मुताबिक जुलाई में जहां प्लेटलेट्स की जरूरत 96 यूनिट थी वह अगस्त से लेकर अब तक 252 यूनिट हो गयी है। वहीं मरीजों की संख्या की बात करें तो सिर्फ रिम्स में ही मच्छर जनित बीमारियों के रोज 10 मरीज ओपीडी में इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या भी बढ़ रही है। मच्छर जनित बीमारियों की बढ़ी संख्या को देखते हुए राजधानी रांची के सरकारी अस्पतालों में अगल और विशेष व्यवस्था की गयी है। रिम्स और सदर अस्पताल में डेंगू पीड़ित मरीजों के इलाज के लिए अलग से व्यवस्था की गई है। रिम्स में जहां 50 बेड की व्यवस्था है, वहीं सदर अस्पताल में 36 बेड की व्यवस्था की गई है।

ये हैं लक्षण

- सिरदर्द
- मांसपेशियों और हड्डियों में दर्द
- ठंड लगने के साथ बुखार चढ़ना
- जी मिचलाना
- उल्टी आना
- आंखों में दर्द
- स्किन पर लाल चकत्ते होना
- मुंह का स्वाद खराब लगना

खुशखबरी यात्रियों की भीड़ को देखते हुए रेलवे ने लिया फैसला, 25 अक्टूबर तक होगा संचालन

पंडित दीनदयाल स्टेशन से विशाखापट्टनम के बीच चलेगी स्पेशल ट्रेन, रांची में भी होगा ठहराव

CRIME REPORTER RANCHI : रेल मंत्रालय ने विशाखापट्टनम से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के बीच ट्रेन परिचालन का निर्णय लिया है। इस संबध में रेलवे की ओर से घोषणा कर दी गयी है, जहां अतिरिक्त यात्रियों की भीड़ को देखते हुए रेलवे ने ये निर्णय लिया है। इसके तहत ट्रेन संख्या 08588 और 08587 विशाखपट्टणम-पंडित दीनदयाल उपाध्याय-विशाखपट्टणम स्पेशल ट्रेन के परिचालन किया जायेगा। ट्रेन संख्या-08588 विशाखपट्टणम-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन का परिचालन छह सितंबर से 25 अक्टूबर तक प्रत्येक बुधवार को विशाखापट्टनम से किया जायेगा। इस ट्रेन का विशाखपट्टनम से प्रस्थान बुधवार 12.30 बजे, रायगड़ 15: 45 बजे, सम्बलपुर से 20: 45 बजे, राऊरकेला से 23: 20 बजे, हटिया 02: 55 बजे प्रस्थान तीन बजे, मूरी से रवाना सुबह चार बजे होते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय आगमन गुरुवार 13: 30 बजे होगा।

न्यू गिरिडीह-रांची इंटरसिटी एक्सप्रेस में लगेगा विस्टाडोम कोच

RANCHI : झारखंड के रांची रेल मंडल में पहली बार विस्टाडोम कोच आने वाला है। यह कोच न्यू गिरिडीह-रांची इंटरसिटी एक्सप्रेस में लगेगा। 12 सितंबर यह विशेष रेलगाड़ी एक विस्टाडोम कोच के साथ रांची पहुंचेगी। इसे सुबह 10 बजे गिरिडीह में हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा। यह कोच बेहद खूबसूरत और सुखद अहसास कराने वाला होगा । इस कोच के माध्यम से सरकार पर्यटकों को आकर्षित करने पर फोकस कर रही है। यह ट्रेन जमुआ, धनवार, महेशपुर, कोडरमा, हजारीबाग टाउन, बड़काकाना-मेसरा और टाटीसिल्वे होते रांची तक का सफर करेगी। इसके पीछे उद्देश्य है कि विस्टाडोम से यात्री सफर का पूरा आनंद ले सकें। रास्ते में पड़ने वाले मनोरम और प्राकृतिक सौंदर्य को महसूस कर सकें। ट्रेन में कुल 13 कोच होंगे। न्यू गिरिडीह-रांची इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन दूसरी रेलगाड़ी हजारीबाग टाउन से जुड़ेगी। रांची रेल मंडल के सीनियर डीसीएम निशांत कुमार ने यह विवरण साझा किया है। उन्होंने कहा कि यह पहला मौका होगा, जिसके तहत किसी ट्रेन में विस्टाटोम कोच जोड़ जा रहा है। ऐसा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया जा रहा है। विस्टाडोम कोच में बड़े ग्लास की खिड़कियां हैं। इनमें छह पारदर्शी होंगी। यह यात्री को साइड के साथ ऊपर की तरफ के दृश्य देखने में मदद करेंगी। कोच का निर्माण आईसीएफ ने किया है।

जलाशयों को साफ करने के लिए निगम ने खरीदी मशीन

एमफीबियस एक्सकेवेटर की तीन करोड़ है कीमत

रांची के बड़ा तालाब की सफाई करती एमफीबियस एक्सकेवेटर मशीन।

PHOTON NEWS RANCHI : रांची नगर निगम के अंतर्गत आने वाले नदी-तालाबों तथा अन्य जलाशयों से गाद को साफ करने हेतु निगम द्वारा एमफीबियस एक्सकेवेटर मशीन का क्रय किया गया है, जिसका आज 6 सितंबर को प्रशासक अमीत कुमार की उपस्थिति में बड़ा तालाब से परिचालन शुरू किया गया। मौके पर प्रशासक द्वारा कहा गया कि रांची शहर में पहली बार जलाशयों का गाद साफ करने के लिए एमफीबियस एक्सकॅवेटर मशीन मंगाई गई है। रांची शहर के सभी बड़े जलाशयों की व्यापक सफाई की आवश्यकता को देखते हुए इस मशीन का क्रय किया गया है। रांची नगर निगम ने करीब 3.15 करोड रुपए की लागत से यह मशीन खरीदी है। इसे सबसे पहले बड़ा तालाब में उतारा गया है।

BRIEF NEWS

लातेहार में खिलाड़ियों से भरी ऑटो पलटी, एक की मौत, पांच घायल

LATEHAR : लातेहार- बालूमाथ मुख्य मार्ग पर ओलहेपाट गांव के समीप मंगलवार रात फुटबॉल मैच खेलकर वापस घर लौट रहे खिलाड़ियों से भरा ऑटो पलट गया। ऑटो पलटने से उसमें सवार एक युवक की मौत हो गई, वहीं पांच गंभीर रूप से घायल हो गये। जानकारी के अनुसार, ऑटो में सवार सभी लोग कल्याणपुर (लावालौंग) से फुटबॉल मैच खेलकर वापस अपने घर लौट रहे थे। इसी दौरान ओलहेपाट गांव के पास अनियंत्रित होकर ऑटो ने मवेशी को टक्कर मार दी, जिससे ऑटो पलट गया। इससे उसके नीचे दबने से शिव कुमार नायक (20) की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, अमित नायक , मनोहर नायक, संदीप नायक , दीपक नायकऔर रौशन नायक (सभी ग्राम दिरीदाग,बालूमाथ) निवासी गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद स्थानीय लोगों के सहयोग से सभी घायलों को बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां डॉ सुरेंद्र कुमार की देखरेख में प्राथमिक उपचार किया गया। गंभीर रूप से घायल रौशन नायक को बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर किया गया है।

विद्यार्थी परिषद ने तोरपा में चलाया सदस्यता अभियान

KHUNTI : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा बुधवार को तोरपा प्रखंड के श्रीहरि प्लस टू विद्यालय, बीकेबी मेमोरियल स्कूल और बिरसा सरस्वती शिशु मंदिर, डोडमा में सदस्यता अभियान चलाया गया। जिला संयोजक कमलेश महतो ने कहा कि संगठन के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए प्रत्येक वर्ष सदस्यता अभियान के माध्यम से अपने विचारों से छात्र-छात्राओं को जोड़ने का काम करती है। राष्ट्रवाद की विचारधारा को लेकर विद्यार्थियों के बीच शिक्षा, चरित्र व संस्कार के भाव को विद्यार्थी परिषद विकसित कर रही है। इसलिए आज बड़ी संख्या में विद्यार्थी संगठन से जुड़ रहे हैं। ज्ञान शील और एकता इसका मूलमंत्र है। इस वर्ष संपूर्ण जिले के विभिन्न कॉलेज और स्कूलों में सदस्यता अभियान के माध्यम से तीन हजार छात्रों को इस संगठन से जोड़ने का लक्ष्य है।

डोभा में डूबने से आठ साल की बच्ची की मौत

KHUNTI : तोरपा थाना क्षेत्र के दियांकेल पंचायत के गुफू गांव में एक डोभा में डूबने से एक आठ वर्षीय बच्ची की मौत हो गयी। जानकरी के अनुसार बुधवार को गुफू स्कूल से रोशन गुड़िया की आठ वर्षीय बेटी सीमा गुड़िया अपने घर आयी थी। घर में खाना खाने के बाद पास के गांव में ही एक डोभा अपने दोस्तों के साथ स्नान करने के लिए चली गयी थी, जहां पानी ज्यादा होने के कारण सीमा पानी में डूब गयी। जब उसके दोस्तों ने देखा तो उसके घर गयी बोलने के लिए जब तक उसके घर वाले आते तब तक बच्ची को मौत हो गयी थी। सूचना पाकर तोरपा थाना के पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम करा स्वजनों को सौंप दिया।

डायन बिसाही के आरोप में हुई थी भानू मुंडा की हत्या, सात ARREST

PHOTON NEWS KHUNTI : अड़की थाना क्षेत्र के सेरेंगहातू गांव में गत तीन सितंबर को भानु मुंडा नामक वृद्ध की हत्या के मामले का खुलासा करते हुए पुलिस ने सात आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त खून लगी लोहे की दउली, खून लगी शर्ट और ओझा गुणी द्वारा प्रयोग किया गया एक लोहे का त्रिशूल बरामद किया है।

गिरफ्तार आरोपी की जानकारी देते एसडीपीओ अमित कुमार। ● फोटोन न्यूज

खूंटी के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अमित कुमार ने बुधवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि भानु मुंडा की हत्या डायन विसाही के अंधविश्वास में की गई थी। पुलिस ने नामदर्ज आरोपित मदन मुंडा ग्राम मारंगडीह और सुखराम मुंडा उर्फ गोंडा ग्राम सेरेंगडीह थाना अड़की के साथ ही कथित ओझा गुणी राम मुंडा के अलावा गुरुवा मुंडा, मदन मुंडा, रूसू मुंडा, बाले मुंडा और सामू मुंडा को गिरफ्तार कर लिया। एसडीपीओ ने बताया की हत्या के उद्वेदन के लिए सीडीपीओ के नेतृत्व में एक एसआइटी का गठन किया गया। पुलिस टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए सात लोगों को गिरफ्तार कर लिया। एसडीपीओ ने बताया कि मारुति मुंडा उर्फ मारू मुंडा की गत 13 अगस्त को तालाब में डूबने से मौत हो गई थी। उसके कुछ दिनों के बाद तीन सितंबर को मारूति की छोटी पत्नी की मौत बीमारी के कारण रांची के अस्पताल में मौत हो गई।

कुछ ही दिनों के अंतराल में घर के दो लोगों की मौत होने से मारुति की बड़ी पत्नी और उसके भाई को शक हुआ कि किसी ने डायन बीसाही करके उसके पति और छोटी बहन की जान ले ली। इस मामले को लेकर मदन मुंडा और सुखराम मुंडा बाड़ी निचकेल गांव के एक कथित ओझा राम मुंडा के घर गए। ओझा राम मुंडा ने उन्हें बताया कि भानु मुंडा उर्फ बोयर की पत्नी बिरसपति देवी उर्फ गुरुवारी देवी डायन है, उसने ही कारगुनी की है। इसके कारण दो लोगों की मौत हो गई। तीन सितंबर को मारूति की छोटी पत्नी को दफनाने के बाद उसी दिन मदन मुंडा और सुखराम मुंडा सहित अन्य लोग भानु मुंडा के घर गए, लेकिन उस समय भानु मुंडा और उसकन पत्नी में घर में नहीं थे। घर में सिर्फ उसकी बेटी हिससी देवी थी।

दोनों ने हिस्सी देवी को धमकाया कि भानु मुंडा की वे हत्या कर देंगे। उसी रात सभी लोग भानु मुंडा उर्फ बोयर के घर पहुंचे और घर में अकेले सो रहे भानु मुंडा की दउली से मार कर हत्या कर दी। भानु मुंडा की पत्नी और उसकी बेटी घर से भाग गए थे। एसडीपीओ ने बताया कि हत्याकांड का एक अन्य आरोपित फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

झुमरीतिलैया के सिटी मैनेजर 25 हजार घूस लेते गिरफ्तार

PHOTON NEWS KODERMA : एसीबी की टीम ने बुधवार को झुमरतिलैया के सिटी मैनेजर प्रशांत भारतीय को 25 हजार रुपये घूस लेते रंगेहाथ गिरफ्तार किया। एसीबी की टीम सिटी मैनेजर को गिरफ्तार कर अपने साथ हजारीबाग ले गई।

प्रशांत भारतीय।

बताया जाता है कि विज्ञापन एजेंसी चलाने वाले राजीव लोचन सिंह ने घूस मांगे जाने की शिकायत एसीबी के क्षेत्रीय कार्यालय हजारीबाग में की थी। उन्होंने कहा था कि वह गायत्री इंटरप्राइजेज के नाम से विज्ञापन एजेंसी का काम करते हैं। उनके एकरारनामा को पहले रद्द कर दिया गया था और फिर विज्ञापन का कार्य करने के लिए 50 हजार रुपये की मांग की जा रही थी। उनसे सिटी मैनेजर प्रशांत भारतीय कोड वर्ड में घूस मांगा करते थे। उनकी शिकायत के बाद हजारीबाग एसीबी कार्यालय में पांच सितंबर 2023 को कांड संख्या 8/23 दर्ज किया गया। बुधवार को जैसे ही राजीव लोचन सिंह ने सिटी मैनेजर प्रशांत भारतीय को झुमरीतिलैया नगर परिषद के कार्यालय केबिन में घूस की रकम सौंपी, एसीबी की टीम ने सिटी मैनेजर को गिरफ्तार कर लिया। इस दौरान सिटी मैनेजर और एसीबी की टीम के बीच धक्का मुक्की भी हुई। बाद में सिटी मैनेजर को गिरफ्तार कर हजारीबाग ले जाया गया।

मृत व जेल में बंद व्यक्ति के नाम पर मनरेगा में मजदूरी भुगतान मामले में मुकदमा दर्ज

PHOTON NEWS PALAMU : जिले के तरहसी प्रखंड की गोइंदी पंचायत क्षेत्र में मृत और जेल में बंद व्यक्ति के नाम पर मनरेगा में मजदूरी भुगतान करने के मामले में प्रखंड विकास पदाधिकारी सच्चिदानंद महतो ने बड़ी कार्रवाई की है। बीडीओ ने तरहसी थाना में मामला दर्ज कराया है।

बीडीओ ने कांड संख्या 56/2023 धारा 406, 420 और मनरेगा अधिनियम 25 के तहत गोइंदी की मुखिया सरीता देवी, पंचायत सचिव श्यामसुंदर सिंह, रोजगार सेवक आलोक रंजन, महिला मेठ सुनीता देवी एवं सुमन देवी एवं लाभुक धर्मराज सिंह, प्रकाश कुमार यादव पर प्राथमिक दर्ज कराई है। बीडीओ ने मजदूरी भुगतान की राशि 12 प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज के साथ वसूला है और एक हजार रुपये का दंड भी लगाया है।

मामला सामने आने के बाद प्रखंड विकास पदाधिकारी ने मुखिया, पंचायत सचिव, रोजगार सेवक समेत अन्य को शोकाज किया था लेकिन स्पष्टीकरण का जवाब सभी दोषियों ने संतोषजनक नहीं दिया। ऐसे में उनके खिलाफ मामला दर्ज करने का निर्णय लिया गया। बीडीओ ने बताया कि मामला सामने आने के बाद जांच की गई। मृत व्यक्ति के साथ साथ जेल में बंद ग्रामीण के बारे में थाना एवं अन्य स्तर पर वेरिफाई किया गया। मामला सही पाए जाने पर भुगतान की गई राशि की वसूली करते हुए प्राथमिकी दर्ज की गई।

क्या है मामला : दरअसल गोइंदी पंचायत क्षेत्र में पांच साल पहले मृत व्यक्ति एवं जेल में बंद मनरेगा जॉबकार्डधारी मजदूरी करते पाये गये थे। दोनों के नाम पर मजदूरी के पैसे की अवैध निकासी भी की गई है। गोइंदी इलाके में मृतक जितेंद्र पासवान के जॉब कार्ड 003/258 सरतेज पासवान के खेत में डोभा निर्माण वर्क कोड 25081 में डिमांड कर मजदूरी की राशि निकासी की गई जबकि जितेन्द्र पासवान की मृत्यु 28 सितम्बर, 2018 को हो गई है। डिमांड की तारीख 16 से 29 जनवरी 2023 तक है।

इसी प्रकार से जेल में बंद प्यारी सिंह का जॉब कार्ड 003/216 में डिमांड करके अवैध निकासी की गई है। योजना का नाम पंकज कुमार यादव के 60760710 डोभा निर्माण वर्क कोड 2206513 है। 16 मार्च की तारीख में 1422 रुपये की निकासी की गई है जबकि इस तिथि में प्यारी सिंह जेल में बंद था। 10 दिन पहले ही वह जेल से बाहर आया है।

उप विकास आयुक्त को इस संबंध में आवेदन देकर मनरेगा अधिनियम के तहत कार्रवाई करने की अपील की गई थी। मांग करने वालों में विद्युत कुमार यादव, रोशन यादव एवं अन्य शामिल थे।

तीन दिवसीय फुटबॉल मैच का आयोजन

विजेता टीम को खस्सी का पुरस्कार देते आयोजक। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : प्रखंड के काटमकुली गांव में बुधवार को तीन दिवसीय फुटबॉल मैच खेला गया। फाइनल मैच में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा नेता कमलेश राम शामिल हुए। इस अवसर पर खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर व फुटबॉल को किक कर फाइनल मैच का उद्घाटन किया। फाइनल मैच बानापिड़ी तथा काटमकुली के बीच खेला गया जिसमें बानापिड़ी की टीम 1-0 से विजयी हुई। वही विजेता टीम को बड़ा खसी देकर समानित किया साथ ही इस तरह के आयोजन के लिए बधाई दी साथ ही उन्होनें कहा कि गांव स्तर पर इस तरह के आयोजनों से छिपी हुआ प्रतिभा को मंच मिलती है और खिलाड़ियों को निखरने का भी मौका मिलता है और यही खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना लोहा मनवाते हैं। खेल और खिलाड़ियों के हरसंभव मदद के लिए सदैव तैयार हूं। इस अवसर पर मो रेहान,साबिर अंसारी,आफताब अंसारी,विकास मुंडा,खुर्शीद अंसारी,अनिल लोहरा,महेश महतो,राजेश महतो,अख्तर अंसारी, मंजूर अंसारी, अब्दुल कादिर, अफजल अंसारी, फैजान अंसारी, ऐनुल हक समेत आयोजन समिति के सदस्य मौजूद थे।

ट्रेन से लकड़ी का बोटा बरामद

PHOTON NEWS LATEHAR : बुधवार को रेल पुलिस ने गश्ती के दौरान ट्रेन संख्या 03341बरकाकाना- डेहरी ओनसोन पैसेंजर ट्रेन से लकड़ी का बोटा बरामद किया। टोरी स्टेशन पर चेकिंग के दौरान आरपीएफ टोरी निरीक्षक व प्रभारी के नेतृत्व में जवानों ने साधारण कोच के सीट के नीचे से लकड़ी बोटा बरामद किया। बरामद बोटा दरअसल चौखट है। जब इस बाबत पूछताछ की गई तो किसी ने लकड़ी पर मालिकाना दावा नहीं किया। और न किसी के द्वारा उक्त लकड़ी को चढ़ाए जाने के बारे में बताया। इसी बीच सीआईबी बरकाकाना के अधिकारी व जवान भी मौके पर पहुंचे। सभी बरामद लकड़ियों को प्लेटफार्म पर उतार कर पैमाइश किया गया। लकड़ी को वन विभाग को सुपुर्द किया जायेगा।

खेलों में भी करियर की बेहतर संभावना : प्रकाश राम

PHOTON NEWS LATEHAR : पूर्व विधायक प्रकाश राम ने कहा कि खेलों मे भी करियर के बेहतर अवसर हैं। आज छोटे शहर व गांवों से भी अच्छे खिलाड़ी निकल रहे हैं। अगर खिलाड़ी पूरी लगन व एक लक्ष्य निर्धारित कर खेलें तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी। प्रकाश राम सदर प्रखंड के आरागुंडी पंचायत के जड़ियांग गांव में फुटबॉल टूर्नामेंट के समापन के मौके पर बोल रहे थे। कहा कि उन्होने हमेशा खेल व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया है। आगे मौका मिला तो आगे भी करते रहेंगे। उन्होने खिलाड़ियों को हर संभव मदद करने की बात कही।

शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

LATEHAR : शिक्षक दिवस के अवसर पर उत्क्रमित मध्य विद्यालय, करकट में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक मोहन प्रसाद ने कहा कहा कि शिक्षा ही व्यक्ति को महान बनाता है। वहीं वरीय शिक्षिका उमा कुमारी ने कहा कि शिक्षक ही समाज को गढ़ने का कार्य करते है जबकि सहायक अध्यापक अतुल कुमार ने बताया कि ज्ञान से बड़ा कोई दान नही होता है। भी शिक्षित होंगे तभी हमारा देश निरंतर उन्नति करेगा। इससे पहले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर माल्यार्पण किया।

इससे पहले फाइनल मैच लातेहार प्रखंड के तुबेद टीम व हेरहंज प्रखंड के मैन इलेवन के बीच खेला गया। तुबेद ने रोमांचक मुकाबले में मैन इलेवन को हरा दिया। पूर्व विधायक ने विजेता व उप विजेता टीम को पुरस्कार दिये। कार्यक्रम के दौरान विधायक व अन्य अतिथियों का पारंपरिक आदिवासी लोकनृत्य व गीत से स्वागत किया गया।

पलामू के तरहसी, लेस्लीगंज और पांकी में मार्केट कॉम्पलेक्स की रखी आधारशिला

PHOTON NEWS PALAMU : जिला परिषद ने तरहसी, लेस्लीगंज एवं पांकी में बुधवार को मार्केट कॉम्पलेक्स निर्माण कार्य की आधारशिला रखी गई। जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिमा कुमारी, उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह के अलावा जिप सदस्य कृष्ण मुरारी सिंह, रूपवंती देवी एवं अन्य जिला पार्षद ने संयुक्त रूप से शिलान्यास किया। इसके साथ 15वें वित्त योजना से तरहसी हाट बाजार का उन्नयन कार्य का भी शिलान्यास किया गया।

कॉम्पलेक्स निर्माण कार्य की आधारशिला रखतीं जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिमा कुमारी व अन्य। ● फोटोन न्यूज

तरहसी प्रखंड मुख्यालय के मुख्य बाजार परिसर, पांकी प्रखंड के तेतराई बाजार परिसर तथा नीलांबर-पीतांबरपुर प्रखंड मुख्यालय के बाजार परिसर में दुकान निर्माण के लिए शिलान्यास किया गया। तरहसी की पुरानी दुकानों की मरम्मत 15 लाख रुपये से करायी जाएगी जबकि तरहसी, तेतराई तथा नीलांबर-पीतांबरपुर में करीब पौने तीन करोड़ रुपये की लागत से नया बाजार परिसर का विकास किया जाएगा।

जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिमा ने कहा कि जिला परिषद को सशक्त कर जन-समस्याओं को दूर करने का प्रयास तेज किया जा रहा है। इसी कड़ी में नयी दुकान निर्माण के लिए शिलान्यास किया गया। उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह ने कहा कि पलामू जिला विकास की दौड़ में पिछड़ता रहा है जबकि संसाधनों और राजनैतिक सोच में कभी कोई कमी नहीं रहा है। केवल मजबूत इच्छाशक्ति और एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है।

तरहसी के जिला पार्षद कृष्ण मुरारी सिंह ने कहा कि लंबे समय से उनकी इच्छा थी कि तरहसी के बाजार को विकसित किया जाए। शिलान्यास से सपना पूरा होने की दिशा में पहल शुरू हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में विकास से बड़ा बदलाव आयेगा।

इस दौरान जिला पार्षद प्रमोद सिंह, रामलव चौरसिया, विजय रविदास, विजय कुमार, अमित जायसवाल, संग्राम सिंह, फजायल अहमद, खुशबू कुमारी, प्रदीप कुमार चावला, प्रमुख पंचम गुप्ता और अन्य प्रतिनिधि मौजूद थे।

महिला लखपति किसान योजना को लेकर बैठक का आयोजन

महिला किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना योजना का उद्देश्य : LOKESH MISHRA

PHOTON NEWS KHUNTI : जिला समाहरणालय के सभागार में बुधवार को उपायुक्त लोकेश मिश्र की अध्यक्षता में महिला लखपति किसान योजना से संबंधित बैठक आयोजित की गई। बैठक में पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से महिला लखपति किसान के उद्देश्यों एवं कार्य योजना के संबंध में जानकारी दी गई। इस योजना के तहत जिले के सभी विभागों एवं जेएसएलपीएस के साथ सर्वे कर कन्वर्जेंस के माध्यम से कार्य किया जाना है। उपायुक्त ने कहा कि जिले के कर्रा प्रखंड को रिसोर्स ब्लॉक के रूप में चयनित किया गया है।

बैठक में शामिल उपायक्त लोकेश मिश्र व अन्य अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

कर्रा ब्लॉक में उचित क्रियान्वयन के साथ ही अन्य प्रखंडों में भी इसका क्रियान्वयन किया जाएगा। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि इससे संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाय। साथ ही सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। महिला लखपति किसान योजना के सफल संचालन के लिए जिला स्तर पर जेएसएलपीएस को नोडल विभाग बनाया गया है। विभाग द्वारा सर्वे करते हुए अन्य विभागों को पूर्ण डाटा उपलब्ध कराने के निर्देश डीसी ने दिए।

बैठक में एसएचजी परिवारों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने की रणनीति को लेकर विभिन्न बिंदुओं जैसे संस्थान निर्माण और वित्तीय समावेशन पर चर्चा की गई।जेएसएलपीएस के डीपीएम ने बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इसकी शुरूआत लोधमा पंचायत में की जा रही है। पंचायत में आजीविका संवर्धन की विभिन्न गतिविधियों का क्रियान्वयन सफलता पूर्वक किए जाने के निर्देश दिए गए। साथ ही संबंधित पंचायत में बेकरी यूनिट के संचालन को लेकर चर्चा की गई। चर्चा के दौरान विस्तार से विभिन्न विभागों के कार्यों पर विचार विमर्श किया गया।

आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा देने की दिशा में उद्योग, कृषि और गैर-कृषि, कौशल, उद्यम को बढ़ावा देने के संबंध में चर्चा की गई। विभिन्न क्षेत्रों में ग्राम समृद्धि और आजीविका विकल्पों का विस्तार करना। निजी क्षेत्र की भागीदारी - स्टार्ट-अप, एफपीओ, एनजीओ, ग्रामीण उद्यम केंद्र के साथ साझेदारी करना। इसके अतिरिक्त माइक्रो क्रेडिट योजना, वित्तीय समावेशन , बैंक लिंकेज, महिला उद्यम त्वरण निधि (क्रेडिट गारंटी, नवाचार), कृषि आजीविका, एकीकृत कृषि क्लस्टर (आईएफसी) के तहत किए जाने वाले कार्यों पर चर्चा की गई।

खंडहर से महिला की सड़ी-गली लाश बरामद, चेहरे को खा गए थे कीड़े

PHOTON NEWS PALAMU : सतबरवा थाना क्षेत्र के तुम्बागड़ा से सटे औरंगा जलाशय योजना के वीरान पड़े खंडहर भवन से पुलिस ने बुधवार को एक महिला की सड़ी गली हालत में लाश बरामद की। महिला का शव मिलने की सूचना फैलते ही लोगों की भीड़ लग गई। पुलिस शव के पास से आधार कार्ड भी बरामद किया, जिससे उसकी पहचान मीना कुंवर ग्राम कुंदरी लेस्लीगंज थाना के रूप में की गई है। महिला की उम्र 35 वर्ष के करीब है। उसकी मौत एक सप्ताह पहले होने का अनुमान पुलिस लगा रही है।

मृत पड़ी महिला। ● फोटोन न्यूज

पुलिस के अनुसार महिला के चेहरे को कीड़े मकोड़े खा गए थे। शव को देखने के लिए लोग अपने नाक और चेहरे को रुमाल से ढंककर पहुंचे थे। पुलिस महिला के विषय में जानकारी ले रही है कि यहां तक वह कैसे पहुंची। उसके साथ किसी प्रकार की घटना हुई है अथवा हत्या करके फेंका गया है। पुलिस गलत नियत से लाकर उसके साथ दुष्कर्मकरने के एंगल पर भी जांच कर रही है।

महिला की गुमशुदगी की शिकायत पुलिस के पास दर्ज करायी गई है या नहीं, इसे पता लाने का प्रयास किया जा रहा हैं। एएसआई राकेश पांडे ने बताया कि महिला के चेहरे को कीड़े खा गए थे। खंडहर भवन के उतर में दीवार से सटी झाड़ी में शव पाया गया। पंचनामा तैयार करके पोस्टमार्टम के लिए भेजा जाएगा। लाश खराब होने की स्थिति में रांची रिम्स में पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा सकता है।

BRIEF NEWS

रोजगार मेला 9 सितंबर को, एक दर्जन से अधिक कंपनियां 408 पदों पर करेंगी नियुक्ति

JAMSHEDPUR : कोल्हान के ऐसे बेरोजगार युवा जो नौकरी की तलाश कर रहे हैं उनके लिए अच्छी खबर है। सरायकेला-खरसावां में 9 सितंबर को कंपनियां मेला आयोजित हो रहा है। जो सुबह 10 बजे से शाम के 4 बजे तक आयोजित की जायेगी। इसमें 408 पदों पर भर्ती निकाली जाएगी। रोजगार मेला सरायकेला खरसावां के नियोजनालय सह मॉडल कैरियर सेंटर में 9 सितंबर को होगी। इसमें टाटा स्टील लांग प्रोडक्ट की, अमलगम स्टील एंड पावर लिमिटेड, रामकृष्ण फोर्जिंग लिमिटेड समेत अन्य कंपनियों द्वारा रोजगार मेला का आयोजन सरायकेला खरसावां नियोजनालय में किया जा रहा है। वहीं रोजगार मेला में भाग लेने के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों का झारखंड के किसी भी नियोजनालय में अथवा झारखंड रोजगार पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन होना अनिवार्य है। इस रोजगार मेला में टाटा स्टील लांग प्रोडक्ट, रामकृष्ण फोर्जिंग लिमिटेड जैसी करीब एक दर्जन से अधिक कंपनियां विभिन्न पदों पर नियुक्ति करेंगी।

विज्ञान मेला में पीजे शिशु मंदिर के विजेता हुए पुरस्कृत

CHAIBASA : पद्मावती जैन सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में संकुल स्तरीय गणित, विज्ञान व संगणक मेला के प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसका शुभारंभ आरसीएसएम के राजीव, प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार सिंह एवं प्रभारी प्रधानाचार्य अरविंद कुमार पांडेय ने भारत-माता के चित्र पर दीप प्रज्वलन पुष्प अर्पित कर किया। मौके पर प्रधानाचार्य ने कहा कि विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों में भैया-बहनों के सर्वांगीण विकास को लेकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां विद्यालय में होती रहती है। भैया-बहनों को पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छः विषयों के प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन करती है। इन सब का उद्देश्य भैया-बहनों का सर्वांगीण विकास करना है। मुख्य अतिथि राजीव ने विजेता प्रतिभागियों को उनकी इस अद्भुत सफलता पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ बधाई दी। उन्होंने कहा कि अपने जीवन में इसी तरह की और आगे सफलता पाने के लिए अपने माता-पिता और गुरु को सम्मान दें। उनकी आज्ञा का पालन करें। सफलता पाने के लिए मेहनत करने से जी न चुराएं। ये सब जीवन में सफलता पाने के मूल मंत्र हैं। इसके उपरांत विजेता प्रतिभागियों को अतिथियों के हाथों विजेता प्रतिभागियों को मेडल पहनाकर एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन सुरेश कुमार ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संजय कुमार,नरेश राम, अनिल कुमार, शशि रंजन कुमार, रश्मि कुमारी, रेशमी सोय, कल्पना कुमारी एवं नीतू डे आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

खेलो झारखंड के सफल प्रतिभागियों को किया गया पुरस्कृत

JAMSHEDPUR : खेलो झारखंड के तहत चांडिल प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। प्रतियोगिता के सभी सफल प्रतिभागियों को बुधवार को पुरस्कृत किया गया। बिरसा स्टेडियम में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि चांडिल के प्रखंड विकास पदाधिकारी उपस्थित थे। पुरस्कार वितरण समारोह में चांडिल के प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी दिनेश कुमार दंडपात, बीपीओ गौरी प्रसाद लायक, बीआरपी कंचन पात्रो के अलावा विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाएं उपस्थित थ। सभी ने बारी-बारी से सफल प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया। चांडिल में प्रखंड स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन 17 अगस्त से एक सितंबर तक किया गया था। बिरसा स्टेडियम में हुए प्रतियोगिता में एथलेटिक्स के सभी गेम आयोजित किए गए थे। बुधवार को प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को समारोहपूर्वक पुरस्कृत किया गया। बिरसा स्टेडियम में करीब साढ़े तीन सौ प्रतिभागियों के बीच प्रथम और द्वितीय पुरस्कार के रूप में प्रमाण पत्र और मेडल दिया गया।

गेल ने आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र में शुरू की गैस की आपूर्ति

पहले ग्राहक के रूप में ओमनी ऑटो लिमिटेड को की गई सप्लाई

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : गेल गैस लिमिटेड की ओर से आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र के पहले चरण में अपने पहले औद्योगिक ग्राहक मेसर्स ओमनी ऑटो लिमिटेड को गैस (पीएनजी) की आपूर्ति शुरू कर दी है गेल गैस लिमिटेड द्वारा बहुत जल्द ही चरण 2,4,6 और 7 अन्य औद्योगिक इकाइयों को गैस की आपूर्ति की जाने की तैयारी जोरों पर है। ज्ञात हो!

मौके पर मौजूद गेल के प्रतिनिधि। ● फोटोन न्यूज

प्राकृतिक गैस एक बहुमुखी ईंधन है जो औद्योगिक उपयोग के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। साथ भी उद्योगों को निरंतर और विश्वसनीय प्राकृतिक गैस आपूर्ति की आवश्यकता होती है, जिससे अर्थव्यवस्था का लाभ मिल सके। रसायन, खाद्य प्रसंस्करण, इंजीनियरिंग सामान, बिजली उत्पादन, कांच उद्योग आदि जैसे उद्योगों में पीएनजी का उपयोग किया जा रहा है। गैस का उपयोग इन उद्योगों द्वारा हीटिंग-बॉयलर, थर्मिक फ्लूइड हीटर, फर्नेस जैसे अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है। गेल गैस ने आदित्यपुर-गम्हरिया क्षेत्र में लगभग 300 किमी पाइपलाइन नेटवर्क बिछाया है, जो आदित्यपुर-गम्हरिया क्षेत्रों में घरेलू ग्राहकों को गैस की आपूर्ति कर रहा है। कंपनी ने आदित्यपुर, कांड्रा सरायकेला, चाईबासा और एनएच-33 में 8 सीएनजी स्टेशन भी चालू किए हैं और और अधिक जोड़ने की योजना बना रही है।

जाने गेल गैस के बारे में : गेल गैस लिमिटेड, गेल (इंडिया) लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, जो झारखंड में सरायकेला-खरसावां और पश्चिमी सिंहभूम जिले में सिटी गैस वितरण परियोजना लागू कर रही है।

हर घर के आंगन से माटी संग्रह कर रहे भाजपाई

मिट्टी संग्रहित करते भाजपाई। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : भाजपा खुंटपानी मंडल द्वारा बुधवार को मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत बुथ सं 124, 132 में घर-घर जाकर संपर्क कर आंगन की मिट्टी संग्रह किया। जिसमें विशेष कर स्वतंत्रता सेनानी परिवार, सीमा सुरक्षा बल में कार्यरत व शहीद परिवार एवं समाज समाजसेवी व गांव के विभिन्न घरों के आंगन से मिट्टी संग्रह किया गया।

सभी मिट्टी को एकत्रित कर दिल्ली में कर्तव्य पथ पर शहीदों के स्मृति में निर्मित होने वाले अमृत वाटिका को समर्पित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष सुदामा हाईबुरू, पूर्व विधायक जवाहरलाल बानरा, भाजपा जिला महामंत्री प्रताप कटियार महतो, सोनाराम कुम्हार, नारायण सिंह बानरा, पाईकिराए बानरा, कोकिल केसरी, सिंगराय ताँती, मुरुम तियू, यादव चन्द्र गोप, मधुसूदन बोदरा, बिन्दर दोराई, दुलु हेम्ब्रम, भजन बानरा, सुभाष पाडेया, मरसल होनहागा उपस्थित थे।

रोटरी क्लब ने सेवानिवृत शिक्षकों को किया सम्मानित

PHOTON NEWS CHAIBASA : रोटरी क्लब की ओर से शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में सेवानिवृत एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया। क्लब की अध्यक्षा हीना ठक्कर ने बताया कि बलबीर कौर खोखर की स्मृति में खोखर परिवार द्वारा प्रायोजित यह कार्यक्रम पिछले 18 वर्षों से रोटरी क्लब के द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैसे शिक्षकों का सम्मान करना रहा है जिनका एक शिक्षित एवं सभ्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सम्मान समारोह में उपस्थित रोटरी क्लब के सदस्य व शिक्षक। ● फोटोन न्यूज

इसी क्रम में इस वर्ष सेवानिवृत्त शिक्षक उत्तम कुमार घोष, सेवानिवृत्त शिक्षक अनंत लाल विश्वकर्मा, अरुण कुमार प्रसाद, डा मनजीत कौर जयसवाल एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मारवाड़ी हिंदी मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक निर्मल चंद्र त्रिपाठी सहित अन्य शिक्षकों को पुष्प गुच्छ देकर, शाल ओढ़ाकर एवं रोटरी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष ने बताया कि मनजीत कौर जयसवाल असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में महिला कॉलेज चाईबासा से सेवानिवृत्त हुए। जबकि उत्तम कुमार घोष डीएवी पब्लिक स्कूल चाईबासा से सेवानिवृत्त हुए।

अनंत लाल विश्वकर्मा हाई स्कूल असुरा से सेवानिवृत्त हुए एवं अरुण कुमार प्रसाद मध्य विद्यालय गुईरा से सेवानिवृत्त हुए हैं। इन सबका योगदान शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। कार्यक्रम संचालन अमित पोद्दार एवं गुरमुख सिंह खोखर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सचिव हर्ष राज मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में सम्मानित होने वाले शिक्षकों ने अपने विचार रखें और तत्कालीन परिस्थितियों में शिक्षा के क्षेत्र की चुनौतियों को याद करते हुए अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में बलजीत सिंह खोखर, सुशील मूंधड़ा, निरंजन साव, रितेश मूंधड़ा, मदन लाल गुप्ता, अशोक पाल, दुर्गेश खत्री, प्रशांत गुप्ता समेत अन्य सदस्य उपस्थित थे।

जीसी जैन कॉमर्स कॉलेज में शिक्षक दिवस समारोह में विद्यार्थियों के बीच हुई मारपीट

PHOTON NEWS CHAIBASA : ज्ञानचंद जैन कॉमर्स कॉलेज में मंगलवार को शिक्षक दिवस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच मारपीट हो गई। मारपीट में कई विद्यार्थियों को चोटें आयी है। बीच बचाव करने आये सीनियर विद्यार्थियों को भी चोटें लगी है। बताया जा रहा कि पासआउट विद्यार्थियों के कारण मारपीट हुई है। चूंकि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए प्रत्येक विद्यार्थियों से आई कार्ड मांग की जा रही थी। सभी विद्यार्थी अपने-अपने आई कार्ड दिखाकर कार्यक्रम हॉल में घुस गए। कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इसी बीच शिक्षकों के सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे थे। इसी दौरान कुछ पूर्ववर्ती विद्यार्थी पहुंच गए। वे कार्यक्रम में प्रवेश करना चाह रहे थे। लेकिन गेट में तैनात विद्यार्थियों ने बिना आई कार्ड के अंदर जाने से मना करने लगे थे। इसी बात को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि मारपीट पर उतार गए। दोनों ओर से जमकर मारपीट हुई। इसी बीच शिक्षकों व सीनियर विद्यार्थियों ने आकर मामला को शांत कराया। इसकी खबर पाकर स्थानीय थाने की पुलिस वहां पहुंच गई। तब तक मारपीट करने वाले विद्यार्थी वहां से भाग निकले। दरअसल शिक्षक दिवस समारोह में शामिल होने के बाद कॉलेज के प्राचार्य डा। संजीव कुमार सिंह भी कोल्हान विश्वविद्यालय चले गए। लेकिन मामले की जानकारी मिलने पर तुरंत वापस लौट आए। उन्होंने मामले की जानकारी लेने के बाद आयोजन समिति में शामिल विद्यार्थियों को फटकार लगाई। साथ ही समिति के विद्यार्थियों को शोकाज भी करने की बात कही है।

कॉलेज में नहीं हैं सुरक्षा गार्ड: इस संबंध में कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ संजीव सिंह ने बताया कि कुछ बाहरी युवकों के कारण यहा मारपीट हुई है। चूंकि यहां एक भी सुरक्षा गार्ड नहीं है। सुरक्षा गार्ड के लिए विवि प्रशासन से मांग की गई है। लेकिन अब तक एक भी सुरक्षा गार्ड नहीं मिला। सुरक्षा गार्ड नहीं रहने के कारण बाहर के लड़के अंदर घुस गए। इसके कारण शिक्षक दिवस कार्यक्रम में छात्र के साथ मारपीट हो गई। इस संबंध में आयोजन समिति को शोकाज किया जाएगा।

सहायक आचार्य नियुक्ति पर रोक लगने से अभ्यर्थी निराश

PHOTON NEWS CHAIBASA : राज्य में लगभग दस वर्षों बाद शिक्षक नियुक्ति का विज्ञापन निकलने से टेट पास अभ्यर्थी काफी उत्साहित थे। इस बार सहायक शिक्षक की जगह सहायक आचार्य के पद के लिए विज्ञापन निकाला गया था। राज्य में कुल 26001 पदों के विरूद्ध बहाली प्रक्रिया शुरू की गई थी। ऑनलाइन आवेदन जमा करने का काम चल रहा था। अचानक त्रुटि पूर्ण नियमावाली के कारण हाईकोर्ट ने इस पर रोक लगाते हुए चार सप्ताह के अंदर सरकार और विभाग से जवाब तलब किया है। कोर्ट से सहायक आचार्य बहाली प्रक्रिया पर अगले चार सप्ताह के लिए रोक लगाने के बाद अभ्यर्थी निराश है। जगन्नाथपुर प्रखंड पारा शिक्षक संघ के सचिव सूको कुम्हार ने कहा त्रुटि पूर्ण नियमावाली है। इसमें बहुत पेंच है। असल में सरकार बहाली करना ही नहीं चाहती। टेट पास पारा शिक्षक वर्ष 2016 से पास कर वेतनमान की आस में हैं। सरकार पारा के साथ लगातार अन्याय कर रही है।

प्रगति सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में आयोजित हुई वेश-भूषा प्रतियोगिता

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : प्रगति सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, बिरसानगर' में बुधवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर कृष्ण-राधा रूप सज्जा प्रतियोगिता आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रदीप श्रीवास्तव (प्रदीप इंटरप्राइजेज के मालिक), विद्यालय के उपाध्यक्ष भोला मंडल एवं प्रधानाचार्य सुरेश कुमार राय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया गया।

प्रतियोगिता में शामिल बच्चे व अन्य। ● फोटोन न्यूज

कार्यक्रम में सर्वप्रथम वाटिका खंड के भैया/बहनों ने कृष्ण-राधा रूप सज्जा प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में विद्यालय के कुल 51 भैया/बहनों ने भाग लिया। भैया/बहनों ने कृष्ण के जन्मोत्सव से लेकर उनके गोकुल में रासलीला को नृत्य-नाटिका के द्वारा प्रस्तुत किया। विजेता भैया/बहनों को पुरस्कार और सभी प्रतिभागियों को प्रसाद दिया गया। कार्यक्रम वाटिका प्रमुख बबिता दीदी की प्रमुखता में संपन्न हुई और संचालन आचार्या अंजली सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष महोदय के आशीर्वचन के द्वारा हुआ। कार्यक्रम को संपन्न करने में सभी आचार्य एवं दीदी जी का संयुक्त रूप से सहयोग प्राप्त हुआ।

डेंगू को लेकर वार्ड चार और पांच में छापेमारी अभियान

JAMSHEDPUR : चाकुलिया नगर पंचायत के वार्ड 4 और 5 में बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं नगर पंचायत की संयुक्त टीम ने छापेमारी अभियान चलाया। इस दौरान ग्रामीणों को डेंगू से बचाव के लिए जागरूक किया। ऐसे स्थानों को टारगेट किया गया जहां से अधिक मात्रा में डेंगू का लार्वा मिलने की संभावना थी। कई जगहों पर डेंगू मच्छर के लार्वा पाए गए। टीम ने एंटी लार्वा केमिकल से उसे नष्ट कर दिया। टीम के सदस्यों ने ग्रामीणों को जागरूक किया। टीम ने लोगों से अपील की कि अपने घर या आसपास कहीं भी जल जमाव नहीं होने दें। इस अभियान में कनीय अभियंता प्रदीप उरांव, लखींद्र नाथ माहली, ग्लोरिया भेंगरा, एलटी प्रवीर बेहरा, एमआई विकास कुमार गिरि, आरएन महतो, कल्लोल गिरि के साथ एंटी लार्वा कर्मी शामिल थे।

विद्यार्थी मेहनत व लगन के साथ पढ़ाई करें, सफलता जरूर मिलेगी : कुलसचिव

PHOTON NEWS CHAIBASA : टाटा कॉलेज के बहुददेशीय भवन में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. जयंत शेखर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में टाटा कॉलेज के प्राचार्य डॉ। एससी दास मौजूद रहे।

कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों के हाथों विधिवत दीप प्रज्वलित कर की गई। मौके पर मुख्य अतिथि कुलसचिव प्रो। जयंत शेखर ने कहा कि विद्यार्थी को अपनी पढ़ाई कड़ी मेहनत लगन के साथ करनी चाहिए ताकि वह अपनी सफलता को सही समय पर हासिल कर सके। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी।

वहीं टाटा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एससी दास ने कहा कि पूर्व उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन शिक्षा एवं विद्यार्थियों के लिए बड़ा ही बहुत महत्वपूर्ण होता है। गुरुओं के महत्वपूर्ण को विस्तार पूर्वक बताते हुए उन्होंने सभी को शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

इस मौके पर कॉलेज के विद्यार्थी एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी। मौके पर राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो. रिंकी दोराई, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. किशोर साहू, भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो राजेंद्र कुमार ठाकुर, अंग्रेजी विभागध्यक्ष प्रो. स्मिता झा, हो विभागाध्यक्ष प्रो अर्जुन बिरूवा, भौतिकशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. दीपक गुप्ता, प्रो. हरीश कुमार, प्रो. विशालदीप समेत अन्य शिक्षक-शिक्षिकाओं के अलावा छात्र प्रतिनिधि के रूप में सुरेश सावैयां, मनोज राउत, सुबोध महाकुड़, मंजीत हांसदा, सनातन पिंगुवा, विकास सोय आदि उपस्थित थे।

बिष्टुपुर सत्यनारायण मारवाड़ी मंदिर में भागवत कथा का चौथा दिन

भगवान कृष्ण का जन्म जेल में हुआ फिर भी वे माया से प्रेरित होकर गोकूल पहुंच गए : हिमांशु

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : बिष्टुपुर सत्यनारायण मारवाड़ी मंदिर में चल रहे भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के चौथे दिन बुधवार को भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मथुरा निवासी कथा वाचक हिमांशु महाराज ने व्यासपीठ से श्री राम और श्री कृष्ण जन्मोत्सव कथा के प्रसंग का व्याख्यान करते हुए कहा कि भगवान कृष्ण का जन्म जेल में हुआ था। फिर भी वे माया से प्रेरित होकर गोकूल पहुंच गए। उन्होंने भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए आगे कहा कि भगवान मनुष्य योनी में जन्म लेकर दुःख में भी सुखी जीवन जीने की सीख देते है। भगवान अंतर्यामी असीम शक्ति के पूंज है। लेकिन उन्होंने अधर्म का नाश और धर्म की पुनः स्थापना के लिए श्रीकृष्ण और श्रीराम सहित दशावतार धारण किए।

भागवत कथा करते हिमांशु महाराज। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने गृहस्थ में रह कर सदाचार, परोपकार और सत्य के आधार पर जीवन जीने तथा सत्संग के जरिए सर्वव्यापी ईश्वर का नाम स्मरण करने की सलाह दी। मनुष्य के पास थोडा सा धन आने के बाद वह अभिमानी बन जाता है, जो नही होना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवत स्मरण धर्म, अर्थ, काम मोक्ष प्राप्ति का सरलतम मार्ग है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाया था कि कर्म थोड़ा दुखदायी होता है लेकिन बिना कर्म किये सुख की प्राप्ति भी नहीं हो सकती। अगर कर्म का उद्देश्य पवित्र व शुभ हो तो वही कर्म सत्कर्म बन जाता है।

बाल गोपाल के गीत पर जमकर झूमे भक्तः- महाराज जी द्वारा कृष्ण जन्मोत्सव पर नंद के घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की एवं गोविंद बोलो हरि गोपाल बोलो गीत पर भक्त जमकर झूमे। भागवत कथा के बाद रात 09 से 12 बजे तक महाराज के साथ मथुरा से आए संगीतकारों ने भगवान के भजन प्रस्तुत किए। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर लडडु गोपाल को विभिन्न प्रकार की मिठाइयों व मेवे का भोग लगाया गया और कार्यक्रम स्थल पर मौजूद श्रद्धालुओं को माखनमिश्री व मिष्ठान का प्रसाद वितरण किया गया। इसी के साथ कथावाचक ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओ में माखन चुराने व गोपियों के संग रास रचाने एवं बांसुरी की धुन पर सम्मोहित करने का वर्णन किया।

चौथे दिन बुधवार को पूजा यजमान के रूप में प्रकाश सोंथालिया, विश्वनाथ सोंथालिया, बनवारी लाल सोंथालिया, बिनोद रमेश सोंथालिया, मुरारी लाल सोंथालिया उपस्थित थे। साथ ही बाबुलाल सोंथालिया, बजरंग लाल सोंथालिया, कमल बांकरेवाल, अजय विजय बांकरेवाल की तरफ से प्रसाद का आयोजन किया गया था। पाचवें दिन गुरूवार को कथा वाचक द्वारा गोवर्धन पूजा एवं छप्पन भोग दर्शन का प्रसंग सुनाया जायेगा।

इस मौके पर प्रमुख रूप से सुरेश कुमार अगीवाल, संतोष संघी, कुंजविहारी नागेलिया, अशोक नरेड़ी, रमेश अगीवाल, विश्वनाथ नरेड़ी समेत काफी संख्या में भक्तगण शामिल थे।

कोरापुट की आदिवासी महिला जी-20 की बैठक में लेगी भाग, मिला निमंत्रण

PHOTON NEWS ODISHA : ओडिशा के कोरापुट जिले के भूमिया समुदाय की आदिवासी महिला किसान को नौ से 10 सितंबर तक नयी दिल्ली में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रण मिला है। शिखर सम्मेलन के दौरान एक प्रदर्शनी में आदिवासी महिला रायमती घुरिया (36) मोटे अनाज से संबंधित अपने स्टार्टअप, मोटे अनाज से बनी रंगोली को प्रदर्शित करेंगी। यह प्रदर्शनी नौ सितंबर को नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) परिसर में कृषि मंत्रालय द्वारा आयोजित की जायेगी।

विदेशी डेलिगेट्स को ओडिशा मिलेट मिशन की देंगी जानकारी : निमंत्रण मिलने पर खुशी जाहिर करते हुए रायमती ने कहा कि मुझे जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने का मौका मिल रहा है और इसको लेकर मैं बहुत खुश हूं। मैंने सुना है कि कम से कम 20 देशों के नेता बैठक में भाग लेंगे और मैं रागी और इसकी खेती की जनजातीय पद्धति का प्रदर्शन करूंगी। उन्होंने कहा कि मैं हमारे क्षेत्र में 2017 से ह्यओडिशा मिलेट मिशनह्न (ओएमएम) द्वारा शुरू की गई बेहतर तकनीक और वैज्ञानिक खेती के तरीकों के लाभों पर अपना अनुभव साझा करूंगी।जिले के कुंद्रा खंड के अंतर्गत नुआगुडा गांव से ताल्लुक रखने वाली रायमती पारंपरिक चावल और मोटे अनाज किस्मों सहित पारंपरिक फसलों को प्रोत्साहित करने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।

समग्र का सनातन सौंदर्य

श्रीकृष्ण जितने अलौकिक और विस्मयजनक रूप से विराट हैं वैसे ही सामान्य लोकजीवन में रचे-पगे सरलता और सहजता को स्वीकार करने में भी बेमिसाल हैं। ऐसी विस्तृत व्याप्ति वाला कोई दूसरा लोकनायक दूर-दूर तक नहीं दिखता । उनकी विलक्षण लीलाएं लघु और महान की आंख-मिचौली करती हैं । जन्म से लेकर बाल्यावस्था, कैशोर्य, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था से होते हुए लीला-संवरण तक का समग्र कृष्ण-चरित अपने भीतर अनगिन कौतूहलों को सहेजे हुए है। इसके बारे में यही कहा जा सकता है कि यह मोहक रूप परिपूर्णता की कसौटी है। कृष्णचरित में बहुत कुछ ऐसा भी दिखता है जो ऊपर से परस्परविरुद्ध और उटपटांग लगता हो पर पूर्णावतार कृष्ण उन सभी अन्तर्विरोधों के बीच वे अच्युत खड़े रहते हैं। वे तरह-तरह की मयार्दाओं का निर्वाह करते हैं, अहितकर होने पर उन्हें तोड़ते भी हैं और फिर पहले से बड़ी नई मयार्दा भी खड़ी करते हैं। फिर आवश्यकता पड़ने पर उस मयार्दा का भी अतिक्रमण करते हैं। एक अनथक यात्री कृष्ण को किसी तरह का विश्राम नहीं है। उन्हें किसी तरह का अवकाश नहीं मिलता है। सोच-विचार और कर्म की दुनिया में वे एक क्रांति ले आते हैं और धर्मप्रधान संस्कृति की स्थापना के लिए एक प्रतिमान उपस्थित करते हैं। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य और मोक्ष जैसे उदात्त गुणों के समन्वय के साथ यदुकुलनंदन श्रीकृष्ण साक्षात भगवान हैं। इसी स्वरूप में वे पूजित हैं । वस्तुतः दिव्य जन्म और कर्म वाले श्रीकृष्ण अखंड जीवन की साधना के निकष हैं। वे ऐसे देव हैं जो लगातार मनुष्य बनने की ओर अग्रसर हैं। निर्लिप्त भोगी, त्यागी और योगी के रूप में वे क्या कुछ नहीं करते। उनकी अछोर भूमिकाएं लोक मानस को चमत्कृत करती हैं। वे आकाश के देवता की जगह धरती के देवता की प्रतिष्ठा करते हैं। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में आगंतुक ब्राह्मणों के पैर धुलाने और जूठी पत्तल बटोरने का काम भी वे बड़े प्रेम के साथ करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन ही नानाप्रकार के सुखों-दुखों के बीच समत्व के योग और स्थितप्रज्ञ-जीवन को उद्घाटित करता है। बड़े कठोर जीवनक्रम के बीच कारागृह में जन्म, दूसरे परिवार में शैशव, बाल्यावस्था से ही शत्रुओं का प्रतिकार, प्रिय जनों से दूर आत्म-बल की रक्षा, लोक-हित के लिए समर्पण, एक विश्वासी मित्र और सखा के रूप में सबको जोड़ते हुए लोकसंग्रह की सामर्थ्य आदि सद्गुण मिल कर श्रीकृष्ण के अद्भुत व्यक्तित्व गढ़ते हैं । लोक में रमते हुए श्रीकृष्ण लोकोत्तर गुणों की खान हैं। माधुर्य के स्वामी श्रीकृष्ण अपनी लीलाओं, प्रिय जनों को प्रेमपगी मुरली की मधुर तान से सबको विभोर कर देते हैं। अपरूप लावण्य के अधिपति श्रीकृष्ण भागवत धर्म के ऐसे महान उपदेष्टा हैं जिनकी चरणरज को पाने वाले इतने तृप्त होते हैं कि उनके लिए सब कुछ स्वर्ग और मोक्ष सब तुच्छ हो जाता है। श्रीकृष्ण सत्, चित् और आनंद तीनों को व्यक्त करने वाली लीलाओं के साथ ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी रचते हैं । वे मनुष्य के रूप में नारायण योगेश्वरेश्वर हैं।

इंडिया पर बहस

जी-20 की बैठक में शिरकत करने भारत आ रहे मेहमानों के सम्मान में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रात्रिभोज का आयोजन किया है, जिसके निमंत्रण पत्र पर पहली बार अंग्रेजी में रिपब्लिक ऑफ इंडिया की जगह रिपब्लिक ऑफ भारत के इस्तेमाल को लेकर मुख्यधारा के मीडिया से सोशल मीडिया तक प्रतिक्रियाओं की बाढ़-सी आ गई है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि एक नागरिक के तौर पर देश के नाम से उसके बाशिंदों का भावनात्मक रिश्ता होता है। इसका अंदाजा इसी तथ्य से लग जाता है कि सरकार ने अभी औपचारिक रूप से ऐसा कोई प्रस्ताव पेश भी नहीं किया है, जो इंडिया के इस्तेमाल को रोकता हो, मगर लोग दो खेमों में बंटते साफ दिख रहे हैं। दरअसल, राष्ट्रपति भवन से हुई इस पहल के बाद ऐसा संदेश गया है कि यही सरकार की ठोस मंशा है। आरएसएस प्रमुख ने हाल ही में इंडिया की जगह भारत के इस्तेमाल की पैरोकारी की थी। मगर सवाल उठता है कि ऐसे किसी विमर्श को खड़ा करने के लिए क्या यह मुनासिब वक्त है? देश में जी-20 के शासनाध्यक्ष आने को हैं। इस समय तो एक मानस के साथ हमें वसुधैव कुटुंबकम् की अपनी पहचान का उनसे लोहा मनवाना था? भारत का संविधान जब लिखा जा रहा था, तब इस बात पर गंभीर बहस हुई थी कि क्या देश का एक ही नाम हो, अंततः इंडिया दैट इज भारत का इस्तेमाल करते हुए इस विमर्श का समाधान किया गया। आजाद भारत के मानस में आर्यावर्त, हिन्दुस्तान, भारत और इंडिया समान रूप से समादृत रहा है। स्वतंत्रता के बाद से साढ़े सात दशक का सफर तय कर चुका भारत न सिर्फ एक प्रौढ़-परिपक्व लोकतंत्र के रूप में, बल्कि तरक्की के दीगर मेयार पर आज दुनिया की पहली कतार में खड़ा है। इसे कभी उज्र नहीं हुआ कि इसे इंडिया नाम से पुकारा गया या भारत या हिन्दुस्तान। ऐसे में, जब आधिकारिक रूप से ऐसा कोई प्रस्ताव आएगा, तब पूछा ही जाएगा कि क्या इन नामों की वजह से कोई प्रशासनिक परेशानी खड़ी हो रही है? और अगर ऐसा है, तो क्या यह बेहतर नहीं होगा कि इसके बारे में अंतिम निर्णय व्यापक जन-सहमति से हो? हमारा देश, समाज और इसकी रवायतें अपनी समूची खूबसूरती ही विविधताओं से बटोरती हैं। आज हम कृष्ण जन्माष्टमी की तैयारी कर रहे हैं, तो याद कीजिए भगवान के कितने नाम हैं? दरअसल, हमारे देश की पूरी राजनीति प्रतीकों की जंग में तब्दील होती जा रही है।

'भारत' को 'इंडिया' से मुक्ति मिले, क्या दिक्कत?

ANALYSIS

✍ डॉ. रमेश ठाकुर

इंडिया नाम पुरानी अंग्रेजी में 9वीं सदी में और आधुनिक अंग्रेजी में 17वीं सदी से मिलता है। चाहे प्राचीन भारत की बात हो, या आधुनिक समय की, दोनों विधाओं के परिसंगम में हमारी परंपराओं और घरेलू संस्कृतियों में इंडिया शब्द का कोई वास्ता नहीं? पर, शायद अब भारत के माथे पर जबरन गोदा गया इंडिया नाम सदैव के लिए लुप्त होने की कगार पर है जिसकी अधिकृत शुरूआत देश की राष्ट्रपति द्वारा चुपके से मंगलवार को उस समय हुई, जब उनके कार्यालय से जी-20 कार्यक्रम को लेकर नामचीन हस्तियों को निमंत्रण भेजे गए। निमंत्रण पत्र में उनके पद से 'इंडिया' शब्द हटा हुआ दिखा। अकसर, भारत के राष्ट्रपति के पद के आगे ह्यद प्रेसिडेंट ऑफ इंडियाह्ल लिखा होता था। पर, मंगलवार से उस स्थान पर ह्यद प्रेसिडेंट ऑफ भारतह्ल शब्द गुदा हुआ दिखाई देगा। जाहिर है इसके बाद सियासी हंगामा कटता और हंगामा कटते हुए देर नहीं लगी? हिंदुस्तान के तकरीबन सभी सियासी दल केंद्र सरकार विशेषकर प्रधानमंत्री पर हमलावर हो गए हैं।

'भारत' शब्द वैसे हमारी संस्कृति, देशी रीति-रिवाजों और पुरानी परंपराओं की आत्मा है, तभी उसे भारत माता कह कर पुकारते आए हैं। गुजरा वक्त इसी शब्द से गुलजार रहा था। लेकिन जब अंग्रेजों की घुसपैठ हुई, तो उन्होंने अपने मुआफिक नया नाम 'इंडिया' गढ़ दिया जिसे भारतीयों को ना चाहते हुए भी अपनाना पड़ा। 200 सालों तक देश उनका बंधक रहा, इस बीच ये नाम भी प्रचलित होता गया। आजादी से लेकर आज तक यानी 275 वर्षों से भारत के जगह इंडिया शब्द ही बोला और लिखा जाता रहा। समूचा संसार भी इंडिया से ही जानता-पहचानता और पुकारता है। ये सच्चाई वैसे हम सभी जानते हैं कि भारत का अंग्रेजी नाम इंडिया अंग्रेजों की देन है। क्योंकि इंडिया की उत्पत्ति इंडस यानी सिंधु शब्द से है जो यूनानियों द्वारा चौथी सदी ईसा पूर्व से प्रचलन में रही। इंडिया नाम पुरानी अंग्रेजी में 9वीं सदी में और आधुनिक अंग्रेजी में 17वीं सदी से मिलता है। चाहे प्राचीन भारत की बात हो, या आधुनिक समय की, दोनों विधाओं के परिसंगम में हमारी परंपराओं और घरेलू संस्कृतियों में इंडिया शब्द का कोई वास्ता नहीं? पर, शायद अब भारत के माथे पर जबरन गोदा गया इंडिया नाम सदैव के लिए लुप्त होने की कगार पर है जिसकी अधिकृत शुरूआत देश की राष्ट्रपति द्वारा चुपके से मंगलवार को उस समय हुई, जब उनके कार्यालय से जी-20 कार्यक्रम को लेकर नामचीन हस्तियों को निमंत्रण भेजे गए। निमंत्रण पत्र में उनके पद से 'इंडिया' शब्द हटा हुआ दिखा। अकसर, भारत के राष्ट्रपति के पद के आगे ह्यद प्रेसिडेंट ऑफ इंडियाह्ल लिखा होता था। पर, मंगलवार से उस स्थान पर ह्यद प्रेसिडेंट ऑफ भारतह्ल शब्द गुदा हुआ दिखाई देगा। जाहिर है इसके बाद सियासी हंगामा कटता और हंगामा कटते हुए देर नहीं लगी? हिंदुस्तान के तकरीबन सभी सियासी दल केंद्र सरकार विशेषकर प्रधानमंत्री पर हमलावर हो गए हैं। सभी एक सुर में बोलने लगे कि प्रधानमंत्री संविधान से भी छेड़छाड़ करने लगे हैं। कांग्रेस नेता जयराम की टिप्पणी आई, बोले इंडिया शब्द से आपत्ति क्यों है प्रधानमंत्री को? क्या इसलिए कि जब से विपक्षी दलों ने सामूहिक रूप से अपने संयुक्त गठबंधन का नाम इंडिया रख लिया है। जबकि, इससे पूर्व अपने नौ वर्षों के कार्यकाल में प्रधानमंत्री ने अपने करीब 150 योजनाओं के नाम इंडिया शब्द से ही रखे। चाहे खेलो इंडिया हो या स्टार्टअप इंडिया? विपक्ष इसे बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने के मूड में है। समूचा विपक्ष विशेष सत्र में इसे मजबूती से उठाएगी। लेकिन, सरकार ने सत्र आने से पहले ही ऐसा धमाका कर दिया जिससे विपक्ष में भगदड़ मच गई। उनमें अभी तक शोर सिर्फ 'एक देश, एक चुनाव' को लेकर था। लेकिन एक और बड़ा बम फोड़ डाला। मोदी-शाह की जोड़ी एक बात ठीक से जानती है कि एक साथ इतने मसले उठा दो, जिससे विपक्ष कंफ्यूज हो जाए, कि कौन सा उठाए, कौन सा नहीं? बहरहाल, 'इंडिया' को 'भारत' कर देना, ये संवैधानिक रूप से सभी सियासी दलों के साथ मंत्रणा करने वाला मुद्दा है। हालांकि अभी भी संदेह के कुछ बादल मंडरा रहे हैं। मात्र राजनीतिक गलियारों में ही चचाएं हैं। स्थिति अभी भी साफ नहीं है कि वास्तव में ऐसा होगा, या संविधान से इंडिया शब्द को हमेशा के लिए हटाया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा बुलाए जा रहे विशेष सत्र में क्या इस मसले पर चर्चा होगी? मसौदा पेश होगा या फिर कोई बिल लाया जाएगा? वैसे, मुद्दा ज्यादा पेचीदा नहीं है कि आसानी से सुलझाया न जाए? पर, बात वहीं आकर अटक जाती है कि क्या इस पर केंद्र सरकार विपक्ष को विश्वास में लेगी, या पूर्व की भांति इस बार भी सब को दरकिनार करके अपने निर्णय पर आगे बढ़ेगी। विपक्षी दल ज्यादातर इसी बात से नाखुश हैं कि सरकार किसी बड़े निर्णय में उन्हें शामिल नहीं करती, अपने मन मुताबिक फैसले ले लेती है। भारत-इंडिया की लड़ाई के इतर अगर बात करें, तो केंद्र में मोदी सरकार के बीते साढ़े नौ वर्ष के कार्यकाल में बहुत कुछ बदला-उलटा गया। देखा जाए तो कहीं-कहीं जरूरी भी था। मुगल, शाहजहां व अकबर जैसे तमाम पूर्व शासकों के वक्त के इतिहास को बदला गया। उनके द्वारा रखे गए नामों को हटाने का कार्य बीते कई वर्षों से बदस्तूर जारी है। जैसे, पुरानी इमारतें, रेलवे स्टेशनों आदि का नया नामकरण हुआ। इसके अलावा अंग्रेजों के वक्त से चले आ रहे करीब 1500 पुराने कानूनों को खत्म किया है। अंग्रेजों की बनाई संसद को भी स्वदेशी नए भवन में हस्तांतरित कर दिया गया है। इंडिया नाम पड़ने की थ्योरी से तो सभी वाकिफ हैं, लेकिन भारत कैसे पड़ा। इसकी मुकम्मल जानकारियों का बहुत अभाव रहा है। हालांकि, भारत शब्द के पीछे तर्क कोई एक नहीं, बल्कि बहुतेरे हैं। पर, हिंदुओं के महान पौराणिक ग्रंथ ह्यस्कन्द पुराणह्ल के अध्याय संख्या-37 के मुताबिक ऋषभदेव नाभिराज के पुत्र का नाम भारत था, जो बड़े बलशाली और शूरवीर थे, उन्हीं के नाम से हमारे देश का नाम भरत पड़ा। इसका उल्लेख कई जगहों पर मिल जाएगा कि भारतवर्ष का नाम ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर हुआ। हिंदुस्तान शब्द की भी अपनी एक अद्भुत कहानी है। ज्यादातर लोग यही समझते हैं कि हिंदुस्तान हिंदुओं की बहुतायत के चलते पड़ा। जबकि, ऐसा है नहीं? हिन्दू और हिन्द दोनों फारसी शब्द हैं जो इंडो-आर्यन संस्कृत सिंधु से आए हैं। आचमेनिड सम्राट डेरियस प्रथम ने लगभग 516 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी पर विजय प्राप्त की थी, जिसके बाद ये शब्द सिंधु घाटी के लिए इस्तेमाल किया गया। इंडिया शब्द को हटाने को लेकर सियासत सुगबुगाहट ही नहीं, बल्कि गर्माहट भी बढ़ गई है। चचाएं ऐसी हैं कि हो सकता है बुला गए संसद के विशेष सत्र में केंद्र सरकार संविधान से 'इंडिया' शब्द को हटाने कोई बिल आए। प्रस्ताव की तैयारियां की हलचल दिखने भी लगी है। अभी कुछ दिन पहले ही तो आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने भी कहा था कि सदियों से हमारे देश का नाम भारत रहा है? यही रहना चाहिए। इसके लिए उन्होंने केंद्र सरकार से बाकायदा अपील की है कि इंडिया की जगह भारत शब्द का इस्तेमाल हो। फिलहाल इस मसले को लेकर राजनीति जबरदस्त शुरू हो गई है। पर, ज्यादातर देशवासी इस पक्ष में हैं कि देश को भारत ही बोला जाए। यूरोपीय देशों की भांति अगर इस मसले को लेकर केंद्र सरकार जनमत संग्रह करवाए, तो परिणाम निश्चित रूप से उनके पक्ष में होंगे। बावजूद इसके मसला भयंकर रूप से पेचीदा है, विपक्ष इतनी आसानी से इंडिया को भारत शायद ही होने दे। आगामी संसद के विशेष सत्र पर बहुत कुछ निर्भर करता है कि उसमें क्या वास्तव में इसको लेकर बिल केंद्र सरकार लाएगी। अगर लाएगी तो क्या उन्हें सफलता मिलेगी। फिलहाल ये मुद्दा संसद सत्र तक गर्म रहेगा, ये तय है।

लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

पिछली तिमाही में विकास दर की अच्छी चाल और सवाल

इसमें कोई दोराय नहीं कि विपरीत हालातों के बावजूद देश की आर्थिक विकास दर के आंकड़े लगातार उत्साहजनक सामने आ रहे हैं। खासबात यह है कि चालू वित्तीय वर्ष के पहली तिमाही के आंकड़े आशा से अधिक बेहतर रहने के साथ ही पिछले वित्तीय वर्ष की चारों तिमाही से अधिक रहे हैं। यह सब तो तब है जब दुनिया के देश अभी आर्थिक संकट के दौर से ही गुजर रहे हैं। पड़ोसी पाकिस्तान के हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं तो अन्य देशों की अर्थव्यवस्था भी हालातों से जूझ रही है। दरअसल कृषि क्षेत्र बड़ा सहारा बन कर उभर कर आता रहा है। हालांकि आने वाली तिमाही कृषि क्षेत्र के लिए अनुकूल इसलिए नहीं मानी जा सकती कि देश में मानसून धोखा देता दिखाई दे रहा है। देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून के आंकड़े निराशाजनक आ रहे हैं। यह सर्वविदित है कि खरीफ की फसल लगभग पूरी तरह मानसून पर निर्भर करती है और मानसून ने जिस तरह से अगस्त माह में बेरुखी दिखाई है उससे कृषि जगत में निराशा आई है। मौसम विज्ञानियों की माने तो सितंबर माह में भी मानसून के जो संकेत मिल रहे हैं वह निराशाजनक ही हैं। किसानों की ललाट पर चिंता की रेखा साफ दिखाई दे रही है। अब तो मानसून की बेरुखी से सरकार भी चिंता में आ गई है। दरअसल कृषि क्षेत्र इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि देश में सर्वाधिक रोजगार के अवसर कृषि क्षेत्र से ही आते हैं तो कृषि क्षेत्र ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बड़ा सहारा दिया है। कोरोना काल में कृषि क्षेत्र ने अर्थ व्यवस्था ही नहीं बल्कि देश के लोगों खासतौर से गरीब लोगों को जो राहत दी है वह अतुलनीय रही है। आज भी देश के गोदाम अन्न धन से भरे हैं तो देश कम से कम अन्नधन को लेकर तो बेफ्रिक है। हालांकि कृषि क्षेत्र के लिए चुनौती भरा समय आ गया है पर देश के अन्नदाता की मेहनत पर सबको भरोसा है। दरअसल चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के जो आंकड़े एनएसओ ने जारी किए हैं वह उत्साहवर्द्धक हैं। जारी आंकड़ों के अनुसार जून 23 तिमाही में कृषि क्षेत्र में मूल्य सवंर्द्धन 3.5 फीसदी रहा है जो एक साल पहले की इसी अवधि के 2.4 प्रतिशत से कहीं अधिक है। यह परिणाम समग्र प्रयासों से ही संभव हो सका है। समग्र रूप से देखा जाए तो अप्रैल-जून की तिमाही जीडीपी में वृद्धि दर 7.7 प्रतिशत रही है। हालांकि आरंभिक अनुमान 8 प्रतिशत से नीचे रहने के बावजूद अर्थव्यवस्था के सकारात्मक दिशा में बढ़ने के तो स्पष्ट संकेत हैं ही। देखा जाए तो इस दौरान रियल एस्टेट, फाइनेंस और सर्विस सेक्टर में भी अच्छी विकास दर रही है। अब देश में त्योहारी सीजन आरंभ हो जाने से यह माना जा रहा है कि दिसंबर तक देश की अर्थव्यवस्था कुलांचे भरने की स्थिति में रहेगी। बाजार में मांग बढ़ेगी तो इससे उत्पादन और वितरण दोनों ही क्षेत्रों में अर्थ व्यवस्था में उछाल आएगा। कारोबारियों की माने तो त्योहारी सीजन में बाजार और अधिक गुलजार रहेगा और अर्थव्यवस्था को पंख लगेंगे। हालांकि मानसून की बेरुखी का असर भी देखने को मिल सकता है। ऐसे हालातों में कृषि से इतर अन्य सेक्टर को बेहतर परिणाम देने होंगे ताकि आर्थिक विकास की दर बनी रहे। थोड़ा चिंतनीय इसलिए अवश्य है कि पहली तिमाही में निर्यात और विनिर्माण क्षेत्र में सुस्ती दिखाई है। ऐसे में चुनौतियां और अधिक हो जाती है। हालांकि माना यह जा रहा है कि मानसून की बेरुखी के बावजूद अर्थव्यवस्था पर इसलिए ज्यादा असर नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि सरकार ने खेती किसानी के लिए योजनावद्ध प्रयास किए हैं और सिंचाई सुविधा का विस्तार करने से फसलों को बचाया जा सकेगा। हालांकि यह तात्कालिक समाधान ही हैं क्योंकि इससे नकारा नहीं जा सकता कि अर्थव्यवस्था को मानसून अवश्य प्रभावित करता है। बस उस असर को कम करने के प्रयास हो सकेंगे। विश्वव्यापी खाद्य संकट का असर दुनिया के देशों में साफ दिखाई दे रहा है। हमारे यहां से भी गेहूं और चावल के निर्यात को हतोत्साहित किया गया है। पिछले दिनों टमाटर के भाव की नई ऊंचाइयों को देशवासी देख चुके हैं। टमाटर दो सौ पार तो अदरक को चार सौ का आंकड़ा छूते देखा है। लगभग सभी खाद्य पदार्थों के भाव में तेजी देखने को मिल रही है। रोजमर्रा के खर्च खासतौर से रसोई के खर्च में बढ़ोतरी चिंता का सबब बनती जा रही है। भले ही हमारी आर्थिक विकास दर संभली हुई ही नहीं अपितु बढ़ रही है पर चिंता के कारण यथावत हैं। जो हालात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिल रहे हैं उससे अधिक आशा की जानी बेमानी ही होगी। अपितु अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में जो सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं उसे सकारात्मक ही माना जाएगा क्योंकि दुनिया के हालात जस के तस हैं। देश में जहां चुनाव की तैयारी चल रही है वहीं वन नेशन वन इलेक्शन से नई परिस्थितियां आने वाली हैं। चुनाव के बाद सामान्यतः महंगाई बढ़ती ही देखी गई है तो दूसरी और विदेशों के हालात देखें तो रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्ति के दूर-दूर तक कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे हैं। चीन की बौखलाहट सामने है तो अमेरिका और यूरोपीय देशों के आर्थिक व राजनीतिक हालात कोई आशाजनक नहीं दिखाई दे रहे हैं। इन सबके बीच प्राकृतिक आपदाओं और आतंकवादी गतिविधियों का दौर जारी है। ऐसे में आने वाले दिनों में दुनिया के देशों के आर्थिक हालात को लेकर कोई आशा नहीं की जा सकती। ऐसे में चालू साल की पहली तिमाही में बेहतर विकास दर के बाद अब अधिक चुनौतियां इसलिए सामने आ गई हैं कि मानसून, चुनाव, त्योहार और अन्य कारण आने वाले दिनों में अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती पूर्ण होंगे और ऐसे में अभी से संभल कर चलना होगा ताकि विकास दर के स्तर को बनाए रखा जा सके। यह सरकार और अर्थशास्त्रियों के सामने बड़ी और गंभीर चुनौती होगी।

Social Media Corner

सच के हक में...

उत्तर प्रदेश के झांसी में जल संरक्षण और भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए जनभागीदारी से हो रहे इन प्रयासों के परिणाम बेहद उत्साहवर्धक होने के साथ ही देशभर के लिए एक मिसाल हैं। इस नेक कार्य से जुड़े हर किसी को मेरी बहुत-बहुत बधाई!

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

हमारे शिक्षक और विद्यार्थी चरक, सुश्रुत तथा आर्यभट से लेकर पोखरण और चंद्रयान-3 तक की उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें, उनसे प्रेरणा लें तथा बड़ी सोच के साथ राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्य करें।

(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के ट्विटर अकाउंट से)

झारखंड के हजारीबाग निवासी स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप के वर्तमान निदेशक अरुण कुमार सिन्हा जी के निधन का दुखद समाचार मिला। ईश्वर पुण्यात्मा अपने श्रीचरणों में स्थान दें। उनके परिजनों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। ॐ शांति।

(पूर्व सीएम रघुवर दास के ट्विटर अकाउंट से)

हाथी-घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की

प्रतिवर्ष भाद्रपक्ष कृष्णाष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में जन्माष्टमी का त्योहार मनाया जाता है। दरअसल मान्यता है कि इसी दिन मथुरा के कारागार में वासुदेव की पत्नी देवकी ने कृष्ण को जन्म दिया था। इस वर्ष भगवान श्रीकृष्ण की 5250वीं जन्माष्टमी मनाई जा रही है। ज्योतिषाचार्यों के मुताबिक इस बार जन्माष्टमी का त्योहार 6 सितम्बर को मनाया जाएगा। हिन्दू पंचांग के अनुसार इस साल अष्टमी तिथि बुधवार 6 सितंबर को दोपहर 3:37 बजे शुरू होगी, जिसका समापन 7 सितंबर की शाम 4 बजकर 14 मिनट पर होगा। वैसे जन्माष्टमी का त्योहार आमतौर पर दो दिन मनाया जाता है, पहले दिन (स्मार्त) गृहस्थियों द्वारा तथा दूसरे दिन वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा। गृहस्थ लोग इस बार 6 सितंबर और वैष्णव सम्प्रदाय 7 सितंबर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाएंगे। भारतीय संस्कृति में जन्माष्टमी का इतना महत्व क्यों है, यह जानने के लिए श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन और उनकी अलौकिक लीला को समझना जरूरी है। द्वापर युग के अंत में मथुरा में अग्रसेन नामक राजा का शासन था। उनका पुत्र था कंस, जिसने बलपूर्वक अपने पिता से सिंहासन छीन लिया और स्वयं मथुरा का राजा बन गया। कंस की बहन देवकी का विवाह यदुवंशी वासुदेव के साथ हुआ। एक दिन जब कंस देवकी को उसकी ससुराल छोड़ने जा रहा था, तभी आकाशवाणी हुई कि हे कंस! जिस देवकी को तू इतने प्रेम से उसकी ससुराल छोड़ने जा रहा है, उसी का आठवां बालक तेरा संहारक होगा। आकाशवाणी सुन कंस घबरा गया और देवकी की ससुराल पहुंचकर उसने अपने जीजा वासुदेव की हत्या करने के लिए तलवार खींच ली। तब देवकी ने अपने भाई कंस से निवेदन करते हुए वादा किया कि उसके गर्भ से जो भी संतान होगी, उसे वह कंस को सौंप दिया करेगी। कंस ने देवकी की विनती स्वीकार कर ली और वासुदेव-देवकी को कारागार में डाल दिया। कारागार में देवकी ने पहली संतान को जन्म दिया, जिसे कंस ने मार डाला। इसी प्रकार एक-एक कर उसने देवकी के सात बालकों की हत्या कर दी। जब कंस को देवकी के 8वें गर्भ की सूचना मिली तो उसने वासुदेव-देवकी पर पहरा और कड़ा कर दिया। आखिरकार वह घड़ी भी आ गई, जब देवकी ने कृष्ण को जन्म लिया। उस समय घोर अंधकार छाया हुआ था तथा मूसलाधार वर्षा हो रही थी। तभी वासुदेव जी की कोठरी में अलौकिक प्रकाश हुआ। उन्होंने देखा कि शंख, चक्र, गदा और पद्मधारी चतुर्भुज भगवान उनके सामने खड़े हैं। भगवान के इस दिव्य रूप के दर्शन पाकर वासुदेव और देवकी उनके चरणों में गिर पड़े। भगवान ने वासुदेव से कहा, अब मैं बालक का रूप धारण करता हूं। तुम मुझे तत्काल गोकुल में नंद के घर पहुंचा दो, जहां अभी एक कन्या ने जन्म लिया है। मेरे स्थान पर उस कन्या को कंस को सौंप दो। मेरी ही माया से कंस की जेल के सारे पहरेदार सो रहे हैं और कारागार के सारे ताले भी अपने आप खुल गए हैं। यमुना भी तुम्हें जाने का मार्ग अपने आप देगी। वासुदेव ने भगवान की आज्ञा पाकर शिशु को छाज में रखकर अपने सिर पर उठा लिया। यमुना में प्रवेश करने पर यमुना का जल भगवान श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श करने के लिए हिलोर लेने लगा और जलचर भी श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श के लिए उमड़ पड़े। गोकुल पहुंचकर वासुदेव सीधे नंद बाबा के घर पहुंचे। घर के सभी लोग उस समय गहरी नींद में सोये हुए थे पर सभी दरवाजे खुले पड़े थे। वासुदेव ने नंद की पत्नी यशोदा की बगल में सोई कन्या को उठा लिया और उसकी जगह श्रीकृष्ण को लिटा दिया। उसके बाद वासुदेव मथुरा पहुंचकर अपनी कोठरी में पहुंच गए। कोठरी में पहुंचते ही कारागार के द्वार अपने आप बंद हो गए और पहरेदारों की नींद खुल गई।

कैसे आए पारदर्शिता

आठ राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की संपत्ति में पिछले एक साल के दौरान हुई बढ़ोतरी (और कमी) का जो ब्योरा असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने पेश किया है, उससे कई अहम ट्रेंड्स पता चलते हैं। साल 2021-22 में राजनीतिक दलों की संपत्ति के ग्राफ पर नजर डालें तो साल 2014 से ही केंद्र की सत्ता में बैठी बीजेपी की संपत्ति सबसे ज्यादा बढ़ी है, हालांकि विपक्ष में होने के बावजूद कांग्रेस भी प्रतिशत में बढ़ोतरी के हिसाब से ज्यादा पीछे नहीं है। बीजेपी की संपत्ति अगर 2020-21 के 4,990 करोड़ रुपये से बढ़कर 2021-22 में 6,046 करोड़ रुपये हुई और इस तरह 21.17 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई तो कांग्रेस भी 16 फीसदी की वृद्धि दर्ज करते हुए 691 करोड़ रुपये से 805.68 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। हालांकि सत्तारूढ़ दल और मुख्य विपक्षी दल की संपत्ति में 5,000 करोड़ रुपये से ऊपर का यह अंतर मौजूदा दौर में देश की राजनीति में उपलब्ध लेवल प्लेइंग फील्ड के बारे में बहुत कुछ कहता है। सच है कि चुनाव सिर्फ पैसे और सत्ता की ताकत से नहीं जीते जाते, लेकिन चुनावों में पैसा और उससे हासिल संसाधनों की अहम भूमिका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। बहरहाल, इन दलों की संपत्ति के इस ब्योरे में दो और तथ्य महत्वपूर्ण हैं। एक तो यह कि संपत्ति बढ़ाने के मामले में तृणमूल कांग्रेस इतनी आगे है कि उसकी किसी और दल से तुलना नहीं हो सकती। एक साल में उसकी संपत्ति करीब 182 करोड़ रुपये से बढ़कर 458.10 करोड़ रुपये हो गई, जो 151.70 फीसदी की आश्चर्यजनक वृद्धि है। दूसरा तथ्य यह कि बीएसपी इकलौती ऐसी राजनीतिक पार्टी है, जिसकी संपत्ति इस एक साल में बढ़ने के बजाय घटी है। यह 732.79 करोड़ से घटकर 690.71 करोड़ रुपये पर पहुंच गई, जो 5.74 फीसदी की कमी है। शायद पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनावों में पार्टी के अत्यधिक कमजोर प्रदर्शन से भी इसका कोई संबंध हो।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

पटना समेत 5 जिलों में बारिश

10 जिलों में बारिश-बिजली का अलर्ट, 24 घंटे में आकाशीय बिजली से 7 लोगों की मौत

पटना। बक्सर, वैशाली, शेखपुरा और भागलपुर में सुबह से बारिश हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार आज प्रदेश के अधिकतर जिलों में बारिश होने की भी संभावना है। 10 जिलों में बारिश और आकाशीय बिजली का अलर्ट जारी किया है। मंगलवार को बिजली की चपेट में आने से छपरा में 3 और रोहतास में 4 लोगों की मौत हो गई। शुक्रवार (8 सितंबर) से राज्य के अधिकतर जिलों में बारिश होने की संभावना है। इस दौरान उत्तर बिहार के मुकाबले दक्षिण बिहार के ज्यादातर जिलों में बारिश होने का पूवार्नुमान है। फिलहाल राज्यभर में दक्षिण पश्चिम मानसून की सक्रियता सामान्य बनी हुई है। पिछले 24 घंटे की बात करें तो कहीं भारी बारिश देखने को मिली तो कहीं हल्की बूंदाबांदी हुई। सबसे अधिक 42 एमएम बारिश पूर्वी चंपारण के लालबेगिया घाट में हुई। मौसम विज्ञान केंद्र के मुताबिक, मानसून द्रोणी रेखा की पूर्वी सीमा नजीबाबाद, लखनऊ, सतना, रायपुर से होकर दक्षिण ओडिशा, उत्तर आंध्रप्रदेश तट, उत्तर पश्चिम और उसके आसपास पश्चिम मध्य बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव क्षेत्र के केंद्र से होकर गुजर रही है। एक अन्य द्रोणी रेखा निम्न दबाव वाले क्षेत्र और आसपास बने चक्रवातीय परिसंचरण से ओडिशा, छत्तीसगढ़ से होकर दक्षिण-पूर्व उत्तर प्रदेश से गुजर रही है। इसके प्रभाव से कुछ जगहों पर बारिश का पूवार्नुमान है। गंडक नदी के जलस्तर में लगातार गिरावट जारी है। गंडक नदी अपने न्यूनतम जलस्तर पर पहुंच गई है। गंडक नदी से बाढ़ का कोई खतरा नहीं है। हालांकि गिरते जलस्तर के बाद नदी का दबाव कटाव के लिए बढ़ गया है।दियारा इलाके से बेतिया शहर तक नावों का परिचालन सामान्य तौर पर चल रहा है। मौसम विभाग ने आज पटना में बारिश को लेकर के कोई भी संभावनाएं नहीं जताई थी, लेकिन सुबह से ही आसमान में बादल छाए हुए हैं। पटना सिटी के पश्चिम दरवाजा, गायघाट इलाके में बारिश हुई है। इसके अलावा कदमकुआं, नाला रोड, राजेंद्र नगर इलाके में भी सुबह से ही बूंदाबांदी हो रही है। पटना में मंगलवार को भी आसमान में पूरे दिन बादल छाए रहे। शाम में हल्की बूंदाबांदी हुई।

उमस भरी गर्मी ने इसके बाद भी लोगों को परेशान किया। पिछले 24 घंटे के दौरान पटना की अधिकतम तापमान में 2 डिग्री की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। अधिकतम तापमान 33.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है।

लूटेरों ने ट्रक चालक को मारी

मुंगेर । अपराधियों ने एक वाहन चालक को गोली मार दी। लूट की घटना को अंजाम देने के लिए गोलीबारी की। गोली से घायल चालक को स्थानीय लोगों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हवेली खड़गपुर में भर्ती कराया। यहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए भागलपुर मायागंज रेफर कर दिया है। जानकारी के मुताबिक एनएच 333 पर गंगटा थाना क्षेत्र के गंगटा जंगल में सीआरपीएफ कैंप के पास हथियार से लैस सड़क लुटेरे जमुई जा रहे एक ट्रक को रोककर लूट का शिकार बनाया। उससे 2200 रुपए नगद सहित मोबाइल की लूट करते हुए ट्रक चालक मुकेश कुमार को गोली मार दी। इसके बाद लुटेरे लक्ष्मीपुर की ओर भाग निकले। इधर, फायरिंग का शिकार हुए ट्रक चालक तारापुर थाना क्षेत्र के अफजल नगर निवासी सिकंदर यादव का बेटा मुकेश कुमार है। घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हवेली खड़गपुर लाया गया। यहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए भागलपुर रेफर कर दिया है। बताया जाता है कि ट्रक चालक मंगलवार देर शाम गाड़ी को लेकर खड़गपुर से जमुई की ओर जा रहा था। तभी सीआरपीएफ कैंप से कुछ दूरी पर पहले से घात लगाए हथियारबंद बदमाश ने एक ट्रक को रोका। इसके बाद ट्रक चालक को कब्जे में करते हुए वाहन में सवार हो गया और लूटपाट शुरू कर दी। इसी क्रम में ट्रक चालक द्वारा 2200 और मोबाइल दिया गया। लेकिन लुटेरों को और रुपए गाड़ी में होने का अंदेशा था। इसको लेकर ही ट्रक चालक को गोली मार दी। इसके बाद घटना की सूचना स्थानीय लोगों द्वारा गंगटा थाना को दी गई। इसके बाद ट्रक चालक को जख्मी अवस्था में खड़गपुर स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।

कैमूर में युवक की गोली मारकर हत्या

कैमूर । मंगलवार को एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। गोली युवक के सिर में जाकर लगी है। अपराधियों ने घर में घुसकर घटना को अंजाम दिया। मृतक भभुआ शहर के वार्ड 23 का आयुष अग्रवाल बताया जा रहा है। युवक इलाहाबाद में रहकर पढ़ाई करता था। मंगलवार को वह अपने घर वापस आया था। फिलहाल हत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया है। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस और एसडीपीओ भभुआ शिव शंकर कुमार मामले की जांच में जुट गए हैं। शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भभुआ भेज दिया गया है। मृतक भभुआ शहर के वार्ड 23 का आयुष अग्रवाल बताया जा रहा है। घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। वहीं घरवालों को यह समझ में नहीं आ रहा है कि आयुष बाहर रखकर पढ़ाई करता था। मंगलवार को ही वह घर आया। कौन इसके पीछे पड़ा था जो मौका देख गोली मार हत्या कर दी। जानकारी देते हुए भभुआ डीएसपी शिव शंकर कुमार ने बताया कि भभुआ थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 23 में गुरुद्वारा के ठीक सामने टिंकू अग्रवाल का बेटा आयुष अग्रवाल को गोली मारी गई है। प्राथमिक अनुसंधान शुरू हो गया है। साथ ही तकनीकी अनुसंधान भी किया जा रहा है। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। घटनास्थल पर काफी मात्रा में खून मिला है। बांकी घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

संक्षिप्त डायरी

सड़क हादसे में एक की मौत

बेगूसराय । तेज रफ्तार अज्ञात वाहन की चपेट में आने से एक ऑनर्स की छात्रा की दर्दनाक मौत हो गई। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। घटना साहेबपुर कमाल थाना क्षेत्र के एनएच- 31 की है। मृतक छात्रा की पहचान मधेपुरा जिला के पुरैनी बाजार के रहने वाले शत्रुघ्न कुमार की पुत्री निशा कुमारी के रूप में की गई है । फिलहाल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। और आगे की छानबीन में जुट गई है। बताया जा रहा कि निशा कुमारी भागलपुर के एसएम कॉलेज में रहकर बायोलॉजी से ऑनर्स कर रही थी और मंगलवार को किसी परीक्षा में शामिल होने के लिए अपने एक दोस्त के साथ बाइक से बेगूसराय पहुंची थी। लेकिन वापस जाने के क्रम में देर शाम किसी अज्ञात वाहन ने उसे ठोकर मार दी। जिससे निशा कुमारी की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं उसका साथी भी गंभीर रूप से घायल हो गया जिसका इलाज किसी निजी नर्सिंग होम में चल रहा है । निशा कुमारी के पिता ने पुलिस से छानबीन कर पूरे मामले की खुलासे की गुहार लगाई है ।

भोजपुर में करंट लगने से युवक की मौत

भोजपुर । मंगलवार शाम करंट की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले जाने के दौरान उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी का आलम रहा। जानकारी के अनुसार मृतक उदवंतनगर थाना क्षेत्र के उदवंतनगर गांव वार्ड नंबर 5 निवासी स्व. सिद्धनाथ पांडेय का 35 वर्षीय पुत्र सोनू पांडेय है। वह पेशे से मजदूर था एवं वह टेंट में लाइट का काम करता था। मामला जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के उदवंतनगर गांव का है। इधर मृतक के साथ काम कम कर रहे राज मिस्त्री शिव शंकर साह ने बताया कि वह टेंट में लाइट जोड़ने के साथ-साथ राजमिस्त्री के साथ मजदूर का काम करता था। मंगलवार की देर शाम वह उदवंतनगर गांव स्थित फतेहपट्टी में नवनिर्मित मकान में लेबर का काम कर रहा था। जहां पिलर पर पहले से बिजली का तार टूट कर गिरा हुआ था।उसी दौरान उसका हाथ उसी पिलर में स्पर्श कर गया। जिसके कारण वह करंट की चपेट में आ गया और बुरी तरह घायल हो गया। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए उदवंतनगर पीएचसी से आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सक ने देख उसे मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना सदर अस्पताल में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी को दी। सूचना पाकर पुलिस सदर अस्पताल पहुंची और शव का पोस्टमार्टम करवाया। बताया जाता है कि मृतक अपने चार भाइयों में तीसरे स्थान पर था। मृतक के परिवार में मां गिरजा कुंवर,पत्नी नीतू देवी व दो पुत्री गीता एवं सुनीता है। हादसे के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। वही इस हादसे के बाद मृतक की मां गिरजा कुंवर,पत्नी नीतू देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

कृष्ण जन्माष्टमी पर बदली कई ग्रहों की चाल

जानिए इस बार आपके लिए क्यों होगी खास, 31 दिसंबर तक ग्रहों का दिखेगा बड़ा असर

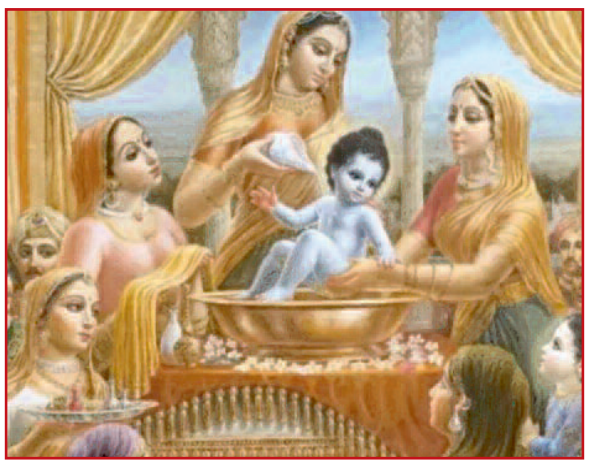

पटना। इस बार जन्माष्टमी भी राखी की तरह दो दिनों के कंफ्यूजन में है। कोई 6 तो कोई 7 सितंबर को मनाने की तैयारी कर रहा है। इसी कंफ्यूजन के बीच जन्माष्टमी पर ग्रहों का बड़ा परिवर्तन भी हो रहा है। यह परिवर्तन कृष्ण के जन्म को और खास बना रहा है। आम से लेकर खास ही नहीं प्रकृति पर भी इसका बड़ा असर देखने को मिलेगा। ज्योतिष विद्वान सितंबर महीने में कृष्ण जन्माष्टमी से पहले हुए इस बदलाव को 31 दिसंबर तक प्रभावी होने की बात कर रहे हैं। पटना के प्रमुख ज्योति विद्वान पंडित राकेश झा ने बताया कि भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास की अष्टमी तिथि पर रोहिणी नक्षत्र में मध्य रात्रि को हुआ था। इस बार यह संयोग बुधवार 6 सितंबर को बन रहा है। बुधवार 6 सितंबर को अष्टमी तिथि रात 8 बजकर 7 मिनट पर लग रही है, जबकि रोहिणी नक्षत्र शाम 2 बजकर 50 मिनट से ही लग रहा है। ये दोनों संयोग मध्य रात्रि में भी बने रहेंगे, जिससे जन्माष्टमी 6 सितंबर को ही मनाया जाना शुभ होगा। साधु संत कृष्ण अष्टमी, और गृहस्थ जन जन्म अष्टमी मानते हैं। चुकी साधु संत कृष्णा अष्टमी यानी जन्म के बाद मानते हैं इसलिए वह 7 को मनाएंगे, गृहस्थ भगवान के गर्भ में होने और जन्म का उत्सव मनाते हैं इसलिए ये संयोग 6 को है। ज्योतिष विद्वानों का मत है कि बुधवार को ही श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर व्रत और पूजन अर्पण करने वालों को मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। जिस संयोग में भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था, उसी संयोग और समय में पूजा उपासना करना सभी मनोकामना को पूर्ण करने वाली होती है। इसलिए इस तिथि पर विशेष रूप से पूजा अनुष्ठान कराएं, जिससे ग्रहों की बदली चाल का प्रभाव भी नहीं पड़े और शुभ फलों की प्राप्ति हो। विद्वानों का कहना है कि ज्योतिषीय दृष्टिकोण से सितंबर मास बहुत खास रहने वाला है। कुल 9 ग्रहों में 5 ग्रह इस महीने वक्री रहेंगे। जिसमें बुध, शनि, राहु-केतु वक्री चल रहे हैं और गुरु ग्रह भी 4 सितंबर से वक्री हो गए हैं। 27 नक्षत्रों में पुनर्वसु, विशाखा और पूवार्भाद्रपद इस तीन नक्षत्रों का स्वामी गुरु ही है। शुक्र ग्रह भी वक्री चल रहा था जो 4 सितंबर से ही कर्क राशि में मार्गी हो गय है। इस महीने ग्रहों के वक्री होने के कारण इस ग्रहों से संबंधित राशि के जातकों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। देव गुरु वृहस्पति की चाल उल्टी हो गई है। वह 16 दिसंबर तक गुरु उल्टी चाल में ही रहेंगे। ज्योतिषाचार्य राकेश झा के मुताबिक भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी 4 सितंबर सोमवार की रात 7 बजकर 4 मिनट से 16 दिसंबर की सुबह 8 बजकर 10 मिनट तक मेष राशि में देवगुरु बृहस्पति वक्री रहेंगे। गुरु को ज्योतिष शास्त्र में नैसर्गिक शुभ ग्रह माना गया है। गुरु भौतिक सुख-सुविधाओं, यश, सौभाग्य का कारक ग्रह भी कहा जाता है। बुध और शनि पहले से ही वक्री चल रहे हैं। इनके अलावा राहु मेष राशि में और केतु तुला राशि में हमेशा वक्री रहते हैं। शनि कुंभ राशि में वक्री है, जो आज सोमवार से मार्गी हो जाएंगे। बुध ग्रह 16 सितंबर तक सिंह राशि में वक्री रहेंगे। ऐसे में आम लोगों से लेकर खास लोगों पर इसका बड़ा असर देखने को मिलेगा। 5 ग्रहों के वक्री होने से कारोबारियों के लिए लाभप्रद रहेगा। वाहन, प्रॉपर्टी से जुड़े कामों में भी तेजी रहेगी। गुरु के वक्री होने से सोने-चांदी के भाव में गिरावट होने की आशंका है। मेहनती जातकों को कामयाबी मिलने के आसार प्रतीत हो रहे हैं। काम में कोताही या लापरवाही करने वाले को बड़ी हानि हो सकती है। कुंवारे लोगों के विवाह संबंधों में आ रही बाधाएं दूर होंगी। ऐसे लोगों को अच्छे रिश्ते मिल सकते हैं। आचार्य राकेश झा बताते हैं ग्रहों की चाल का प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ता है। ग्रहों के अनुसार ही शुभ और अशुभ फल मिलते हैं। इसलिए अगर हम ग्रहों के बदलाव को लेकर पहले से तैयार हो जाएं तो इसके कुप्रभाव से बच सकते हैं। ज्योतिष विद्वान के मुताबिक जानिए कैसे ग्रहों की उल्टी चाल से खुद को बचाएं और शुभ फल पाएं। -बुध ग्रह से प्रभावित लोग हरे मूंग का दान और विघ्नहर्ता गणेश को दूर्वा चढ़ाएं। -गुरु ग्रह के लोग गुरुवार को चने की दाल का दान, श्रीहरि विष्णु की पूजा तथा पिला चंदन एवं पिला फूल चढ़ाएं। -शनि ग्रह से प्रभावित लोग शनिवार को तेल का दान तथा शनिदेव को तेल से अभिषेक करें। तिल से बने व्यंजनों का भोग लगाएं। सरसों के तेल का दीपक जलाएं। -राहु-केतु के लिए जरूरतमंद लोगों को काले कंबल का दान करें। किसी मंदिर में पूजन सामग्री भेंट करें। ज्योतिष विद्वानों के मुताबिक अगर कान्हा को प्रसन्न करना हो तो श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर छोटे-छोटे उपाए करने होंगे। व्रत रहें और कृष्ण के जन्म तक नहीं सोएं। जन्म होने तक मंदिर में भजन कीर्तन में शामिल हों तो काफी बेहतर फल की प्राप्ति होती है। ऐसे ही अगर राशियों के हिसाब से छोटे छोटे उपाय कर कान्हा को प्रसन्न किया जा सकता है।

राशि के अनुसार ऐसे प्रसन्न हो जाएंगे कान्हा

मेष : माखन मिश्री का भोग लगाकर ॐ कमलनाथाय नमः का जाप करें।

वृष : माखन का भोग लगाकर श्रीकृष्णाष्टक का पाठ करें।

मिथुन : दही अर्पण कर ॐ गोविंदाय नमः का जाप करें।

कर्क : केसर मिश्रित दूध का भोग तथा राधाष्टक का पाठ करें।

सिंह : माखन-मिश्री चढ़ाने के बाद ॐ कोटि सूर्य संप्रयाय नमः का जाप करें।

कन्या : मावा का भोग एवं ॐ देवकीनंदनाय नमः का जाप करें।

तुला : घी से निर्मित भोग के बाद ॐ लीलाधराय नमः का जाप करें।

वृश्चिक : माखन या दही अर्पित कर ॐ बराहाय नमः का जाप करें।

धनु : पीला मिष्ठान का भोग तथा ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः का जाप करें।

मकर : मिश्री का भोग के बाद ॐ नमो कृष्ण वल्लभाय नमः का जाप करें।

कुंभ : बालूशाही का भोग के बाद ॐ नमो कृष्ण वल्लभाय नमः का जाप करें।

मीन : केसर व बर्फी अर्पित कर ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः का जाप करें।

दही-हांडी प्रतियोगिता के विजेता को 1 लाख का इनाम मिलेगा

पटना। कृष्ण जन्माष्टमी को लेकर देश भर में 2 से 3 दिन पहले ही महोत्सव शुरू हो जाता है। इस बार पटना में भी 5 सितंबर से कृष्ण महोत्सव शुरू हो गया है। पटना के अलग-अलग इलाकों में कृष्ण जन्माष्टमी की धूम मची है। 5 तारीख से ही पटना में भजन कीर्तन शुरू हो गए हैं। बुधवार 6 सितंबर को भी श्री कृष्ण जन्माष्टमी को लेकर अलग-अलग जगह पर कार्यक्रम हो रहे हैं। गुरुवार, 7 सितंबर को बिहार के बाहर से आई 12 टीमें दही हांडी प्रतियोगिता में पार्टिसिपेट करेगी। पटना में अलग-अलग ट्रस्ट के द्वारा और मंदिरों के द्वारा कई कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, इसमें श्री दशहरा कमेटी ट्रस्ट की ओर से मिलर हाई स्कूल मैदान दोपहर 3 बजे में भगवान श्री कृष्णा पर विद्वानों द्वारा परिचर्चा की जाएगी। इसके बाद शाम 5:30 बजे शंखनाद, डमरू वादन, बांसुरी वादन के साथ प्रिंस डांस ग्रुप द्वारा लाइट और साउंड से चंद्रयान का चांद पर पहुंचने का एक्ट दिखाया जाएगा। इसके बाद उन्हें के द्वारा कृष्ण जन्म और उनके जीवन के लीलाओं को डांस के रूप में दिखाया जाएगा। इसके अलावा बॉलीवुड सिंगर प्रिया-मलिक द्वारा कृष्णा भजनों का गायन होगा। खासतौर पर कृष्ण जन्मोत्सव के बाद 51 किन्नर द्वारा सोहर गायन भी किया जाएगा। इसके अलावा श्याम मंडल की ओर से गुरुवार को 31 घंटे के लिए अखंड ज्योति जलाई जाएगी। इसके बाद संध्या में श्री कृष्ण के भजन और कीर्तन के कार्यक्रम होंगे। जिसमें बिहार के आदर्श दाधीच, गुरुग्राम के शुभम ठाकरान, कोलकाता के सौरभ शर्मा, आगरा की राजू बावरा और प्रयागराज की जुली सिंह की प्रस्तुति रहेगी। वहीं, कृष्ण भगवान का अलौकिक श्रृंगार किया जायेगा। गौड़ीया मठ की ओर से आज यग भी करवाया जाएगा। श्री श्याम मंडल के दूसरे 7 सितंबर को राधा-कृष्ण लीला की प्रस्तुति डांस के द्वारा दिखाई जाएगी। कार्यक्रम दोपहर 3 बजे से शुरू होगा। बिहार के बाहर से आये 12 कलाकार नृत्य के जरिए कृष्ण लीला की प्रस्तुति करेंगे। इसके बाद आधी रात 12:15 बजे कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाएगा। श्री दशहरा कमेटी ट्रस्ट की ओर से सुबह 11:30 बजे दही हांड़ी की प्रतियोगिता शुरू होगी। इसका उद्घघाटन बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के द्वारा किया जाएगा। इस प्रतियोगिता के लिए बिहार के बाहर से 12 टीमों को बुलाया गया है। इन 12 टीमों के लिए बिहटा से लेकर फतुआ के बीच 12 लोगों को चुना गया है। जो इन 12 टीमों के टीम लीडर रहेंगे। इस प्रतियोगिता में पहले स्थान पर आने वाले टीम को एक लाख की नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। इसके बाद दूसरे स्थान पर आने वाले टीम को 50 हजार रुपए और तीसरे स्थान पर आने वाले टीम को 25000 रुपए नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा बाकी टीमों को 5100 रुपए की प्राइस मनी दी जाएगी।

सौदे महज एक घंटे के भीतर निपटाने की तैयारी में सेबी

मुंबई ।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) अगले साल सौदे महज एक घंटे के भीतर निपटाने की तैयारी में जुट गई है। सेबी की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच ने इसके संकेत देकर कहा कि 2024 के अंत तक सौदों का निपटान तुरंत करने की सुविधा देने की उनकी कोशिश है। माधवी बुच ने कहा, 'भारत दुनिया का ऐसा पहला देश है, जिसने टी प्लस वन निपटान (सौदे के अगले दिन निपटान) शुरू किया है। अब हम सौदों को महज एक घंटे में निपटाने की बात कर रहे हैं जो तत्काल निपटान की दिशा में बड़ा कदम होगा। यह जल्द ही शुरू कर दिया जाएगा।' सेबी ने जनवरी तक सेकंडरी बाजार के लिए अस्बा जैसा मॉडल शुरू करने की योजना भी बनाई है। बाजार नियामक अगले साल के शुरुआती महीनों में सौदे एक घंटे में निपटाने की सुविधा शुरू करने की तैयारी में है। सौदों का तत्काल निपटान वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी छमाही तक लागू होने की उम्मीद है। माधवी बुच ने कहा, सौदों को घंटे भर में निपटाने के लिए प्रौद्योगिकी पहले से ही है। हमें केवल इस व्यवस्था को लागू करना है।

तत्काल निपटान की बात करें तब प्रणाली में कुछ तकनीकी सुधार करने की जरूरत है जिसमें 6 से 8 महीने लग सकते हैं। भारत ने सौदों का निपटान दो दिन से एक दिन के भीतर करने की प्रक्रिया को चरणबद्ध तरीके से अंजाम दिया। बाजार पूंजीकरण के लिहाज से सबसे छोटी कंपनियों के लिए इस व्यवस्था को पहले लागू किया गया। अधिक पूंजीकरण वाली कंपनियों के लिए टीप्लस वन की शुरुआत इस साल जनवरी के अंत तक हुई। टीप्लस वन में सौदा होने के एक दिन बाद यानी अगले दिन शेयरों और रकम का लेनदेन होता है।

एक घंटे में निपटान के तहत खरीद-फरोख्त के महज एक घंटे के भीतर शेयरों को डीमैट खाते में भेज दिया जाएगा।

बाजार नियामक ने मार्च में अपनी बोर्ड बैठक में द्वितीयक बाजार के लिए अस्बा जैसे मॉडल को मंजूरी देकर संकेत दिया था कि यह वैकल्पिक ही होगा। मगर सौदों के तत्काल निपटान पर विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने चिंता जाहिर की है। इस पर सेबी प्रमुख ने कहा कि द्वितीयक बाजार की अस्बा जैसी व्यवस्था शुरुआत में एफपीआई के लिए वैकल्पिक होगी। सेबी प्रमुख ने स्टॉक एक्सचेंज, म्युचुअल फंड, पोर्टफोलियो प्रबंधन सेवा परिसंपत्ति प्रबंधन जैसी विनियमित संस्थाओं पर गहरी नजर रखने और खुलासों का बोझ कम करने के लिए आर्टिफीशल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल का भी समर्थन किया। उन्होंने कहा कि खुलासों की जानकारी अब सार्वजनिक की जा रही है। यह एआई के लिए सोने की खान की तरह है क्योंकि इसका विश्लेषण कर कमाई की जा सकती है।

पुरुलिया जिले में ममता ने किया श्री सीमेंट की नई ग्राइंडिंग फैक्ट्री का उद्घाटन

फैक्ट्री 550 करोड़ के निवेश से स्थापित की गई

कोलकाता ।

भारत के अग्रणी सीमेंट उत्पादकों में से एक, श्री सीमेंट लिमिटेड ने बुधवार को पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में 3.0 मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) क्षमता के साथ अपनी नई सीमेंट ग्राइंडिंग फैक्ट्री का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाग लिया, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व ने इस उपलब्धि को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नई अत्याधुनिक फैक्ट्री कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी श्री सीमेंट ईस्ट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा स्थापित की गई है। यह फैक्ट्री 550 करोड़ के समग्र निवेश के साथ स्थापित की गई है जिसे पूरी तरह से श्री सीमेंट द्वारा आंतरिक संसाधनों के माध्यम से वित्त पोषित किया गया है। फैक्ट्री ने अपनी निर्धारित समय सीमा के भीतर उत्पादन शुरू कर दिया। यह श्री सीमेंट ग्रुप द्वारा हाल के दिनों में घोषित कई नए निवेशों में से एक है। उद्घाटन को संबोधित कर मुख्यमंत्री, ममता बनर्जी ने कहा, मैं श्री सीमेंट लिमिटेड को इस उपलब्धि और नई फैक्ट्री में उत्पादन शुरू करने के लिए बधाई देती हूं। यह महत्वपूर्ण निवेश न केवल हमारे राज्य के औद्योगिक परिदृश्य को मजबूत करता है, बल्कि पश्चिम बंगाल के सीमेंट क्षेत्र की विकास क्षमता को भी दर्शाता है। इस नई फैक्ट्री से हम अपने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसरों पर इसके सकारात्मक प्रभाव की उम्मीद रखते हैं।

श्री सीमेंट लिमिटेड के अध्यक्ष, हरि मोहन बांगुर ने कहा, मुझे पुरुलिया में हमारे नए सीमेंट ग्राइंडिंग फैक्ट्री के उद्घाटन की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है, जो तेजी से बढ़ते पश्चिम बंगाल के बाजार में हमारी उपस्थिति को मजबूत करेगा। हम पश्चिम बंगाल में इसी तरह का एक और इकाई स्थापित करने के लिए दृढ़ हैं। यह नई इकाई बंगाल और झारखंड राज्यों से बढ़ती सीमेंट मांग को पूरा करने के लिए श्री सीमेंट को रणनीतिक लाभ प्रदान करेगा। यह सुविधा अपने ग्राहकों की सीमेंट आपूर्ति को बेहतर ढंग से सरेखित करने में मदद करेगी और पूर्वी भारत के तेजी से बढ़ते बाजार में अपनी बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद करेगी।

सीबीडीटी ने इनकम टैक्स रिटर्न प्रकिया का समय घटकर 10 दिन किया

नई दिल्ली ।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने को लेकर एक बड़ा अपडेट जारी किया है। सीबीडीटी ने कहा कि टैक्सपेयर द्वारा वेरिफिकेशन होने के बाद इनकम टैक्स रिटर्न को प्रोसेस करने में लगने वाले समय को घटाकर 10 दिन कर दिया गया है। सीबीडीटी ने कहा कि करदाताओं को बेहतर सुविधा देने के लिए आयकर विभाग लगातार प्रयास कर रहा है। सीबीडीटी ने कहा, वित्त वर्ष 2022-23 के लिए दाखिल रिटर्न के लिए वेरिफिकेशन के बाद आयकर रिटर्न का एवरेज प्रोसेसिंग टाइम वित्तीय साल 2019-20 के लिए 82 दिनों और वित्तीय साल 2022-23 के लिए 16 दिनों की तुलना में घटाकर 10 दिन कर दिया गया है। सीबीडीटी ने कहा, 'आयकर विभाग आईटीआर को त्वरित और कुशल तरीके से प्रोसेस्ड करने के लिए तैयार है।' केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने कहा कि वित्तीय साल 2022-23 के लिए 6.98 करोड़ आयकर रिटर्न दाखिल किए गए, जिसमें से 6.84 करोड़ वेरिफाइड हैं। छह करोड़ से ज्यादा आईटीआर यानी कुल सत्यापित रिटर्न में से 88 प्रतिशत को प्रोसेस्ड किया जा चुका है। आयकर विभाग ने बयान में कहा है कि टैक्स असेसमेंट ईयर 2023-24 के लिए 2.45 करोड़ से अधिक रिफंड पहले ही जारी किए जा चुके हैं।आयकर एवं कॉरपोरेट कर से संबंधित शीर्ष निकाय सीबीडीटी ने कहा कि कुछ आयकर रिटर्न (आईटीआर) के मामले में टैक्सपेयर्स की तरफ से कुछ जानकारी न मुहैया कराने या जरूरी कदम न उठाने से विभाग उनका रिटर्न प्रक्रिया नहीं कर पा रहा है।सीबीडीटी के मुताबिक, वित्त वर्ष 2022-23 के लिए दाखिल कुल आईटीआर में से लगभग 14 लाख रिटर्न को करदाताओं ने अभी तक सत्यापित नहीं किया है। इसके अलावा विभाग ने 12 लाख करदाताओं से आय से संबंधित अतिरिक्त जानकारी मांगी है और इस संबंध में उन्हें ई-फाइलिंग खातों से अवगत करा दिया गया है। साथ ही कुछ आईटीआर फाइल करने वालों ने अभी तक अपने बैंक खातों को सत्यापित नहीं किया है। कई मामले सामने आए हैं जिनमें आईटीआर प्रोसेस हो चुका है और रिफंड भी निर्धारित हो चुका है लेकिन विभाग उन्हें जारी करने में असमर्थ है क्योंकि करदाताओं ने अभी तक अपने बैंक खाते को सत्यापित नहीं किया है जिसमें रिफंड जमा किया जाना है।

वेदांता रिसोर्सेज लिमिटेड की जीत, चार साल बाद वापस मिला कॉपर माइन कंपनी का मालिकाना

अरबपति अनिल अग्रवाल जांबिया सरकार के फैसले का स्वागत किया

मुंबई ।

भारतीय अरबपति अनिल अग्रवाल की वेदांता रिसोर्सेज लिमिटेड ने जांबिया की एक कॉपर माइन कंपनी का मालिकाना हक वापस ले लिया है। कंपनी ने चार साल की कानूनी लड़ाई के बाद विवाद को सुलझा लिया है। इसकी घोषणा कंपनी ने की। वेदांता रिसोर्सेज ने कहा कि जांबिया की सरकार ने कोंकोला कॉपर माइन्स (केसीएम) की ओनरशिप और ऑपरेशनल कंट्रोल को वेदांता सिसोर्सेज को वापस कर दिया है। जांबिया के मिनिस्टर ऑफ माइन्स एंड मिनरल्स डेवलपमेंट पॉल काबुस्वे ने कहा कि केसीएम की ओनरशिप को मेजारिटी शेयरहोल्डर के रूप में वेदांता को फिर से सौंपा जा रहा है। अग्रवाल की कंपनी के पास केसीएम की 79.4 फीसदी हिस्सेदारी है। वेदांता ने कहा कि केसीएम को वापस पाने से दुनिया को कार्बनमुक्त बनाने के लिए एनर्जी ट्रांजिशन में काफी सहायता मिलेगी, क्योंकि इसके पास कॉपर का भंडार है। वेदांता के अनुसार, कोंकोला कॉपर माइन्स के पास कंटेन्ड कॉपर का 1.6 करोड़ टन का रिसोर्सेज और रिजर्व है। साथ ही इसका कॉपर ग्रेड 2.3 फीसदी है जो वैश्विक औसत 0.4 फीसदी से काफी अधिक है। वेदांता रिसोर्सेज के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने जाम्बिया सरकार के फैसले का स्वागत कर कहा कि केसीएम एक मूल्यवान संपत्ति है, क्योंकि फ्यूचर की टेक्नोलॉजी के लिए कॉपर एक महत्वपूर्ण मिनरल है। उन्होंने कहा कि वेदांता अब तांबा की माइनिंग से लेकर इसके प्रोडक्शन तक पूरी तरह से एक इंटीग्रेटेड कंपनी बन जाएगी। वेदांता के पास केसीएम वापस आने से भारक को काफी फायदा होगा। यह फैसला उस समय में आया है जब भारत में कॉपर की डिमांड सालाना करीब 25 फीसदी की दर से बढ़ रही है। वेदांता की प्रेस रिलीज के अनुसार, कॉपर एनर्जी ट्रांजिशन से जुड़ी तकनीकों के लिए काफी महत्वपूर्ण मिनरल है।

मौद्रिक नीति को दूरदर्शी होना चाहिए : आरबीआई गवर्नर

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि मौद्रिक नीति को दूरदर्शी होना चाहिए, क्योंकि पीछे देखने का दृष्टिकोण दुर्घटनाओं को जन्म दे सकता है। आरबीआई गर्वनर दास ने कहा कि मौद्रिक नीति का संचालन संभावित गड्ढों और गति बाधाओं वाली सड़क पर कार चलाने जैसा है। चूंकि मौद्रिक नीति लंबे और परिवर्तनीय अंतराल के साथ काम करती है, प्रमुख व्यापक आर्थिक चर के पूर्वानुमान मौद्रिक नीति के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकारण मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ढांचे को मुद्रास्फीति पूर्वानुमान लक्ष्यीकरण ढांचे के रूप में भी कहा जाता है। उन्होंने कहा, वास्तविक जीवन में सादृश्य लेने के लिए मौद्रिक नीति का संचालन संभावित खाइयों और गति अवरोधों वाली सड़क पर कार चलाने जैसा है।

चालक को अपनी कार की गति को नियंत्रित करने और बातचीत करते समय खाई या स्पीड बम्प पर नजर रखने की जरूरत है। यदि ड्राइवर अचानक स्पीड बम्प पर प्रतिक्रिया करता है, तब वह नियंत्रण खोने और दुर्घटना होने का जोखिम उठाता है। इसलिए, मौद्रिक नीति का सफल संचालन मुद्रास्फीति और विकास जैसे प्रमुख चर के विशे वसनीय पूर्वानुमानों पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, मौद्रिक नीति को दूरदर्शी होना चाहिए। रियर व्यू मिरर से नीतिगत त्रुटियां हो सकती हैं। दास ने कहा कि मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) के लिए मूल्य स्थिरता पर नजर रखना और उसके अनुसार कार्य करना महत्वपूर्ण है।

दास ने कहा, इसके अलावा, एमपीसी यह सुनिश्चित करने के लिए सतर्क रहती है कि मूल्य वृद्धि के सामान्यीकरण के रूप में मुद्रास्फीति के दूसरे क्रम के प्रभावों को बढ़ने न दिया जाए। उन्होंने कहा, मूल्य स्थिरता पर नजर रखना और उचित तरीके से कार्य करना जरूरी है। हम अब 4 फीसदी के लक्ष्य पर मजबूती से केंद्रित हैं।

आरबीआई गवर्नर ने कहा कि पिछले अनुभव के आधार पर आरबीआई एक अद्वितीय और अभिनव दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम था, जिसने आरबीआई को कोविड के समय किए गए विशेष उपायों को वापस लेने में सक्षम बनाया है। दास ने कहा, जब तक आप उन्हें समय पर वापस नहीं लाते, यह वित्तीय स्थिरता को कमजोर कर देगा।

एक्सेस हेल्थकेयर में होगी 1,500 से अधिक कर्मचा रियों की भर्ती

मुंबई ।

एक्सेस हेल्थकेयर में डेढ़ हजार से अधिक कर्मचारियों की भर्ती की जाएगी। कंपनी ने कहा कि वह देश में अगले दो महीनों में पेशेवरों की भर्ती करने की योजना बना रही है। तीसरा-पक्ष राजस्व चक्र प्रबंधन कंपनी एक्सेस हेल्थकेयर ने एक बयान में कहा कि यह नियुक्तियां विभिन्न भूमिकाओं जैसे अनुभवी कॉलर्स, प्रमाणित मेडिकल कोडर, मेडिकल बिलिंग पेशेवर, वित्त और लेखा और कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- एआई) और ऑटोमेशन में होंगी। इसमें कहा गया है कि नए स्नातकों को कॉल सेंटर की नौकरियों के लिए भी नियुक्त किया जाएगा। मौजूदा समय में एक्सेस हेल्थकेयर के देश में छह केंद्रों - चेन्नई, कोयंबटूर, मुंबई, पुणे, नोएडा और तिरुवनंतपुरम में 22,272 कर्मचारी हैं। इसमें कहा गया है कि नई भर्तियां सभी केंद्रों के लिए हैं। एक्सेस हेल्थकेयर के संस्थापक और उपाध्यक्ष वर्धमान जैन ने कहा कि यह विस्तार तकनीकी उत्कृष्टता द्वारा परिभाषित भविष्य में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का नेतृत्व करने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

अंबुजा सीमेंट के टॉप मैनेजमेंट में इस्तीफा, गिरा शेयर का भाव

मुंबई ।

अदाणी ग्रुप की सीमेंट कंपनी अंबुजा सीमेंट के टॉप मैनेजमेंट में इस्तीफे की खबर के बाद कंपनी के शेयरों में गिरावट देखी गई। अंबुजा सीमेंट के चीफ प्रोजेक्ट्स ऑफिसर, के ए चौधरी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। चौधरी का ये इस्तीफा 8 सितंबर 2023 से लागू होगा। अंबुजा सीमेंट ने शेयर बाजार को मैनेजमेंट में बदलाव की जानकारी दी है।इसके बाद से शेयर में करीब पौने एक फीसदी की गिरावट देखने को मिल रही है। फिलहाल, कंपनी ने इस पद किसी नई नियुक्ति के बारे में कोई जानकारी साझा नहीं की है। एक्सपर्ट मानते हैं, कि अंबुजा सीमेंट आने वाले 3 वर्षों में अपनी कैपेसिटी को काफी तेजी से बढ़ता हुआ नजर आएगा। कंपनी के नतीजों पर नजर डालें तो अंबुजा सीमेंट का स्टैंडअलोन प्रॉफिट 31 दिसंबर 2022 को समाप्त तिमाही में 46 प्रतिशत बढ़कर 368.99 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इससे पिछले वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में यह 252.81 करोड़ रुपये था। इसी अवधि के दौरान कंपनी की बिक्री सात प्रतिशत बढ़ गई। परिचालन से राजस्व एक साल पहले के 3,739.9 करोड़ रुपये से 10 प्रतिशत बढ़कर 4,128.5 करोड़ रुपये हो गया। इस दौरान कंपनी की एबिटा 17.5 प्रतिशत के मार्जिन के साथ 715 करोड़ रुपये रही। पिछली तिमाही की तुलना में कंपनी का नेट रेवेन्यू 11 प्रतिशत बढ़कर 8,036 करोड़ रुपये हो गया। वहीं, एबिटा 161 फीसदी बढ़कर 1,138 करोड़ हो गया और एबिटा मार्जिन 6.2 फीसदी से बढ़कर 14.6 फीसदी हो गया।

आईटीसी लिमिटेड को एक लाख रुपये का पड़ा एक बिस्किट

कंज्यूमर फोरम ने लगाया जुर्माना

मुंबई । भारत की दिग्गज कंपनी आईटीसी लिमिटेड को एक बिस्किट एक लाख रुपए में पड़ा है। उपभोक्ता फोरम में कई बार इसतरह के मामले सामने आते हैं जो लोगों को हैरान कर देते हैं। एक ऐसा ही मामला चेन्नई का है, जहां आईटीसी लिमिटेड पर फोरम ने तगड़ा जुर्माना लगाया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक आईटीसी को बिस्किट के पैकेट में एक बिस्किट कम रखना बहुत भारी पड़ गया। इस कारण कोर्ट ने कंपनी को एक लाख रुपए का जुर्माना लगाया है।दरअसल, चेन्नई में एमएमडीए माथुर केपी दिलीबाबू नाम के एक व्यक्ति ने मनाली की एक दुकान से सड़क पर घूम रहे आवारा कुत्तों को खिलाने के लिए सन फीस्ट मैरी लाइट का एक बिस्किट का पैकेट खरीदा। इस पैकेज में कुल 16 बिस्किट होते है, लेकिन शख्स को एक बिस्किट कम मिला। शख्स ने मामले पर कंपनी से पूछताछ की जहां कंपनी से कोई सही जवाब नहीं मिला। इसके बाद उन्होंने उपभोक्ता फोरम में अपनी शिकायत दर्ज कराई। दिलीबाबू ने मामले पर कंज्यूमर फोरम में अपनी दलील रखकर कहा कि आईटीसी कंपनी हर दिन 75 पैसे के बिस्किट अपने पैकेट में कम डालती है। वहीं हर दिन कंपनी द्वारा 50 लाख बिस्किट पैकेट का उत्पादन किया जाता है। इसके बाद हर दिन कंपनी 29 लाख रुपए के माल की धोखाधड़ी कर रही है। वहीं मामले पर कंपनी ने सफाई देकर कहा कि वह अपने माल को वजन के आधार पर देती है। कंपनी ने अपने पैकेट में बिस्किट का वजन 76 ग्राम लिखा हुआ था लेकिन इसकी जांच करने पर 15 बिस्किट वाले पैकेट में केवल 74 ग्राम बिस्किट मिला। मामले पर सुनवाई में आईटीसी के वकील ने कोर्ट में दलील दी कि साल 2011 के कानूनी माप विज्ञान नियमों के अनुसार पैक किए सामान में अधिकतम 4.5 ग्राम प्रति पैकेट के हिसाब से गलती की गुंजाइश को अनुमति मिली है। मगर कोर्ट इस दलील से सहमत नहीं था।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 100 , निफ्टी भी 36 अंक उछला

मुम्बई ।

शेयर बाजार बुधवार को बढ़त पर बंद हुआ। दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के बाद भी खरीददारी बढ़ने से बाजार में ये तेजी आई। दिन भर के कारोबार के बाद तीसर शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 100.26 अंक करीब 0.15 फीसदी की बढ़त के साथ ही 65,880.52 अंक पर बंद हुआ। वहीं कारोबार के दौरान एक समय सेंसेक्स 65,971.13 के उच्च स्तर तक जाने के बाद 65,488.03 तक फिसला। दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 36.15 अंक तकरीबन 0.18 फीसदी बढ़कर बंद हुआ। निफ्टी दिन के अंत में 19,611.05 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 19,636.45 तक ऊपर जाने के बाद 19,491.50 तक नीचे आया। आज के कारोबार के दौरान सेंसेक्स के शेयरों में से 17 शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। भारती एयरटेल, एचडीएफसी बैंक, टाइटन, अल्ट्राटेक सीमेंट और आईटीसी सेंसेक्स के सबसे बढ़ने वाले शेयर रहे। सबसे ज्यादा लाभ भारती एयरटेल के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 1.57 फीसदी तक ऊपर आये। इसके अलावा सन फार्मा, बजाज फाइनैंस, बजाज फिनसर्व, एचयूएल, महिंद्रा, कोटक, नेस्ले, रिसायंस, एचसीएल टेक और टीसीएस पावर ग्रिड के शेयर भी उछले।

वहीं दूसरी ओर सेंसेक्स के शेयरों में 13 शेयर नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए। टाटा स्टील, एक्सिस बैंक, एनटीपीसी, आईसीसीआई बैंक और इंडसइंड बैंक सेंसेक्स के शेयर सबसे अधिक नुकसान में रहे। सबसे ज्यादा टाटा स्टील के शेयरों करीब 1.67 फीसदी तक टूटे।बीएसई में पंजीकृत कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकर 6 सितंबर को बढ़कर 317.36 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया जबकि ये पिछले कारोबारी दिन 316.64 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप आज करीब 72 हजार करोड़ रुपये बढ़ा है। इस प्रकार से निवेशकों की संपत्ति में करीब 72 हजार करोड़ रुपये का इजाफा हुआ है।इससे पहले आज सुबह घरेलू शेयर बाजार की बुधवार को सपाट शुरुआत हुई है। दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही निवेशकों की बेरुखी से बाजार में उतार-चढ़ाव दिखा। वहीं प्री-ओपनिंग में भी बाजार में हल्की गिरावट दर्ज की गयी।

दूसरी ओर अमेरिकी बाजार भी गिरा है। डाओ जोन्स में 195 अंक की गिरावट रही जबकि नैस्डैक 10 अंक टूटकर कारोबार करता दिखा। इसके अलावा अमेरिका में 10 साल की बॉन्ड यील्ड 4.25 फीसदी उछल गयी। इसके अलावा एशिया पैसिफिक बाजारों में भी मिश्रित कारोबार रहा । एसएंडपी 500 में गिरावट दर्ज की गयी और ये 0.4 फीसदी टूटा। इसके अलावा हांगकांग के हैंग सेंग इंडेक्स में 0.1 फीसदी की बढ़त रही। जापान के निक्केई 225 के इंडेक्स में 0.3 फीसदी की बढ़त रही।

सैमसंग ने गैलेक्सी ए54 5जी और ए34 5जी के दामों में की कटौती

मुंबई । सैमसंग ने बुधवार को गैलेक्सी ए54 5जी और गैलेक्सी ए34 5जी स्मार्टफोन पर नए ऑफर्स की घोषणा की। इसमें फोन भारत में उपभोक्ताओं के लिए 26,999 रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध होगा। संशोधित कीमत में 2,000 रुपये का तत्काल कैशबैक और आईसीआईसीआई बैंक और एसबीआई क्रेडिट कार्ड उपयोगकर्ताओं के लिए 2,000 रुपये का अतिरिक्त बैंक कैशबैक शामिल है। कंपनी के मुताबिक, गैलेक्सी ए54 8जीबी प्लस 256जीबी वैरिएंट, जिसे 40,999 रुपये में लांच किया गया था। वह अब सिर्फ 36,999 रुपये में खरीदने के लिए उपलब्ध होगा। इसके अलावा उपभोक्ता शून्य डाउन पेमेंट के साथ सुविधाजनक 12 महीने की नो-कॉस्ट ईएमआई का लाभ उठा सकते हैं। गैलेक्सी ए54 में 12एमपी अल्ट्रा-वाइड लेंस के साथ 50एमपी ओआईएस प्राइमरी लेंस है, जबकि गैलेक्सी ए34, 48एमपी ओआईएस प्राइमरी लेंस और 8एमपी अल्ट्रा-वाइड लेंस के साथ आता है। दोनों मॉडल 5एमपी मैक्रो लेंस से भी लैस हैं। कंपनी ने कहा कि यह 5000 एमएएच की बैटरी के साथ आते हैं जो एक बार चार्ज करने पर दो दिनों से अधिक समय तक चल सकती है। दोनों डिवाइसों में 120 हर्ट्ज की ताजा दर है।

आईपीओ के मामले में 2023 अब तक सबसे अच्छा साल रहा

मुंबई ।

आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के सूचीबद्ध होने के बाद से बाजार में शेयर के प्रदर्शन की बात करें तब 2023 पिछले कुछ सालों में सबसे अच्छा साल साबित हुआ है। जल परियोजनाएं संभालने वाली कंपनी विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया इस साल आईपीओ लाने वाली 20वीं कंपनी है। इस साल बाजार में 20 आईपीओ आए और और स्टॉक एक्सचेंज पर पहले दिन इनमें औसतन 34 फीसदी की तेजी आई है। सूचीबद्ध होने से आज तक इनमें औसतन 46 फीसदी तेजी आ चुकी है। इन 20 कंपनियों में से केवल एक कंपनी का शेयर अपने निर्गम मूल्य से नीचे चल रहा है।

इसमें से जिन शेयरों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है उनमें साइंट डीएलएम सबसे आगे है, जो अपने निर्गम मूल्य से 171 फीसदी चढ़ चुका है। उत्कर्ष लघु वित्त बैंक का भाव निर्गम मूल्य से 94 फीसदी ऊपर चल रहा है और शाह पॉलिमर्स 75 फीसदी चढ़ गया है। मगर उदयशिवकुमार इन्फ्रा और पिरामिड टेक्नोप्लास्ट अपने निर्गम मूल्य से नीचे कारोबार कर रहे हैं। विश्लेषकों ने कहा कि शेयर बाजार में तेजी और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की ओर से लगातार लिवाली के कारण आईपीओ की मांग और सूचीबद्धता के बाद प्रदर्शन शानदार रहा है। इस साल अभी तक सेंसेक्स 8.1 फीसदी चढ़ा है और बीएसई मिडकैप में 26.7 फीसदी तथा स्मॉलकैप में 31.2 फीसदी की तेजी आई है। इस साल अभी तक विदेशी निवेशकों ने 1.4 लाख करोड़ रुपये के शेयर खरीदे हैं। नई सूचीबद्ध कंपनियों का प्रदर्शन मापने वाला बीएसई आईपीओ सूचकांक इस साल अभी तक 22.4 फीसदी ऊपर चढ़ चुका है। बैंकरों का कहना है कि शुरुआती महीनों में निवेशकों के बीच थोड़ी हिचकिचाहट देखी जा रही थी और वे बेहतर कारोबारी मॉडल तथा मजबूत संचालन वाली कंपनियों पर ही दांव लगा रहे थे। आईपीओ के लिए तय शेयरों से ज्यादा मांग की वजह से भी सूचीबद्ध होने के बाद शेयरों के दाम में तेजी देखी जा रही है।'आईपीओ को उसकी स्थिति के हिसाब से लेने का यह चलन आगे भी जारी रहेगा क्योंकि निवेशक समझदारी दिखा रहे हैं।

ट्रेडर्स के लिए अच्छी खबर, शेयर बेचते ही खाते में तुरंत पहुंचेगा पैसा

नई दिल्ली । शेयर मार्केट में पैसा लगाने वालों के लिए अब एक और नई सु विधा जुड़ने जा रही है। अब ट्रेडिंग के दौरान शेयर बेचने पर तुरंत खाते में पैसा ट्रांसफर होगा। सेबी ने कहा है कि अब ट्रेडर्स को ट्रेड सेटलमेंट के लिए एक दिन का भी इंतजार नहीं करना पड़ेगा। सिक्योरिटी और एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया, सेबी का इरादा अगले साल तक एक घंटे में ही ट्रेड सेटलमेंट करने का है। इसका मतलब है कि अगर आप शेयर खरीदते हैं तो डीमैट अकाउंट में शेयर एक घंटे के भीतर ही आ जाएंगे। वहीं, अगर आप शेयर बेचते हैं तो पैसा भी एक घंटे में ही आपके अकाउंट में होगा। अभी ट्रेड सेटलमेंट टी+1 फार्मूले से होता है। अगर कोई निवेशक आज शेयर खरीदता है तो उसके डीमैट अकाउंट में स्टॉक परसों क्रेडिट होते हैं। सेबी शेयर बाजारों में ट्रांजैक्शन का इंस्टैंट सेटलमेंट लागू करने की प्रक्रिया पर काम कर रहा है। सेबी चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच ने मुंबई में ग्लोबल फिनटेक फेस्ट में कहा कि भारत दुनिया में टी+1 सेटलमेंट सिस्टम लागू करने वाला दुनिया का पहला देश है। अब हम एक घंटे में निपटान की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। हमारे पास एक घंटे में सेटलमेंट करने में सक्षम तकनीक है। हमें बस इसे लागू ही करना है। बुच ने कहा कि सेबी की योजना तात्कालिक सेटलमेंट की भी है। तात्कालिक निपटान के लिए हमें और तकनीकी विकास करना होगा और इसके लिए 6-8 महीने लग सकते हैं।

डॉलर के मुकाबले पाकिस्तानी रुपये में गिरावट जारी

इस्लामाबाद । देश के केंद्रीय बैंक के अनुसार, पाकिस्तानी रुपया (पीकेआर) अमेरिकी डॉलर के मुकाबले फिर टूटता हुआ नए रिकॉर्ड निचले स्तर तक उतर गया है। रिपोर्ट के अनुसार, स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान ने कहा कि मंगलवार को अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में डॉलर का कारोबार 307.10 पाकिस्तानी रुपये पर हुआ। अमेरिकी डॉलर सोमवार को 305.64 रुपये के तत्कालीन रिकॉर्ड निचले स्तर पर बंद हुआ था। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, सप्ताह के दूसरे सत्र में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले स्थानीय मुद्रा में 1.46 पाकिस्तानी रुपये या लगभग 0.48 प्रतिशत की गिरावट आई। अर्थशास्त्र थिंक-टैंक और कॉर्पोरेट सलाहकार, टैगेंट के संस्थापक फहीम सरदार ने कहा कि तीन मुख्य कारक, आपूर्ति, हेरफेर और अटकलें रुपये में लगातार गिरावट के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि बैंकिंग चैनलों को दरकिनार कर पड़ोसी देश में बहुत सारे डॉलर भेजे जा रहे हैं, जिससे घरेलू बाजार में इसकी मांग बढ़ रही है।

भगवान श्रीकृष्ण का प्राकट्य उत्सव

जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी भगवान श्री कृष्ण का जनमोत्सव है। योगेश्वर कृष्ण के भगवद गीता के उपदेश अनादि काल से जनमानस के लिए जीवन दर्शन प्रस्तुत करते रहे हैं। जन्माष्टमी को भारत में हीं नहीं बल्कि विदेशों में बसे भारतीय भी इसे पूरी आस्था व उल्लास से मनाते हैं। श्रीकृष्ण ने अपना अवतार भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को अत्याचारी कंस का विनाश करने के लिए मथुरा में लिया। चूंकि भगवान स्वयं इस दिन पृथ्वी पर अवतरित हुए थे अत- इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर मथुरा नगरी भक्ति के रंगों से सराबोर हो उठती है।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का दिन बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कृष्ण जन्मभूमि पर देश विदेश से लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती हें और पूरे दिन व्रत रखकर नर-नारी तथा बच्चे रात्रि 12 बजे मन्दिरों में अभिषेक होने पर पंचामृत ग्रहण कर व्रत खोलते हैं। कृष्ण जन्म स्थान के अलावा द्वारकाधीश, बिहारीजी एवं अन्य सभी मन्दिरों में इसका भव्य आयोजन होता हैं, जिनमें भारी भीड़ होती है।

माखनचोर कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने अर्जुन को कायरता से वीरता, विषाद से प्रसाद की ओर जाने का दिव्य संदेश श्रीमदभगवदगीता के माध्यम से दिया। कालिया नाग के फन पर नृत्य किया, विदुराणी का साग खाया और गोवर्धन पर्वत को उठाकर गिरिधारी कहलाये। समय पड़ने पर उन्होंने दुर्योधन की जंघा पर भीम से प्रहार करवाया, शिशुपाल की गालियाँ सुनी, पर क्रोध आने पर सुदर्शन चक्र भी उठाया।

अर्जुन के सारथी बनकर उन्होंने पाण्डवों को महाभारत के संग्राम में जीत दिलवायी। सोलह कलाओं से पूर्ण वह भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने मित्र धर्म के निर्वाह के लिए ग़रीब सुदामा के पोटली के कच्चे चावलों को खाया और बदले में उन्हें राज्य दिया। उन्हीं परमदयालु प्रभु के जन्म उत्सव को जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है।

विष्णु के आठवें अवतार

भगवान श्रीकृष्ण विष्णुजी के आठवें अवतार माने जाते हैं। यह श्रीविष्णु का सोलह कलाओं से पूर्ण भव्यतम अवतार है। श्रीराम तो राजा दशरथ के यहाँ एक राजकुमार के रूप में अवतरित हुए थे, जबकि श्रीकृष्ण का प्राकट्य आततायी कंस के कारागार में हुआ था। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में देवकी व श्रीवसुदेव के पुत्ररूप में हुआ था। कंस ने अपनी मृत्यु के भय से बहिन देवकी और वसुदेव को कारागार में क़ैद किया हुआ था।

कृष्ण जन्म के समय घनघोर वर्षा हो रही थी। चारों तरफ़ घना अंधकार छाया हुआ था। श्रीकृष्ण का अवतरण होते ही वसुदेवङ्कदेवकी की बेड़ियाँ खुल गईं, कारागार के द्वार स्वयं ही खुल गए, पहरेदार गहरी निद्रा में सो गए। वसुदेव किसी तरह श्रीकृष्ण को उफनती यमुना के पार गोकुल में अपने मित्र नन्दगोप के घर ले गए। वहाँ पर नन्द की पत्नी यशोदा को भी एक कन्या उत्पन्न हुई थी। वसुदेव श्रीकृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर उस कन्या को ले गए। कंस ने उस कन्या को पटककर मार डालना चाहा। किन्तु वह इस कार्य में असफल ही रहा। श्रीकृष्ण का लालनङ्कपालन यशोदा व नन्द ने किया। बाल्यकाल में ही श्रीकृष्ण ने अपने मामा के द्वारा भेजे गए अनेक राक्षसों को मार डाला और उसके सभी कुप्रयासों को विफल कर दिया। अन्त में श्रीकृष्ण ने आतातायी कंस को ही मार दिया। श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का नाम ही जन्माष्टमी है। गोकुल में यह त्योहार गोकुलाष्टमी के नाम से मनाया जाता है।

श्रावण (अमान्त) कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण जन्माष्टमी या जन्माष्टमी व्रत एवं उत्सव प्रचलित है, जो भारत में सर्वत्र मनाया जाता है और सभी व्रतों एवं उत्सवों में श्रेष्ठ माना जाता है। कुछ पुराणों में ऐसा आया है कि यह भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि पौराणक वचनों में मास पूर्णिमान्त है तथा इन मासों में कृष्ण पक्ष प्रथम पक्ष है। पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण में कृष्ण जन्माष्टमी के माहात्म्य का विशिष्ट उल्लेख है।

संकल्प और प्राणप्रतिष्ठा

व्रती को किसी नदी (या तालाब या कहीं भी) में तिल के साथ दोपहर में स्नान करके यह संकल्प करना चाहिएङ्क मैं कृष्ण की पूजा उनके सहगामियों के साथ करूँगा। उसे सोने या चाँदी आदि की कृष्ण प्रतिमा बनवानी चाहिए, प्रतिमा के गालों का स्पर्श करना चाहिए और मंत्रों के साथ उसकी प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए। उसे मंत्र के साथ देवकी व उनके शिशु श्री कृष्ण का ध्यान करना चाहिए तथा वसुदेव, देवकी, नन्द, यशोदा, बलदेव एवं चण्डिका की पूजा स्नान, धूप, गंध, नैवेद्य आदि के साथ एवं मंत्रों के साथ करनी चाहिए। तब उसे प्रतीकात्मक ढंक से जातकर्म, नाभि छेदन, षष्ठीपूजा एवं नामकरण संस्कार आदि करने चाहिए। तब चन्द्रोदय (या अर्धरात्रि के थोड़ी देर उपरान्त) के समय किसी वेदिका पर अर्घ्य देना चाहिए, यह अर्घ्य रोहिणी युक्त चन्द्र को भी दिया जा सकता है, अर्घ्य में शंख से जल अर्पण होता है, जिसमें पुष्प, कुश, चन्दन लेप डाले हुए रहते हैं। यह सब एक मंत्र के साथ में होता है। इसके उपरान्त व्रती को चन्द्र का नमन करना चाहिए और दण्डवत झुक जाना चाहिए तथा वासुदेव के विभिन्न नामों वाले श्लोकों का पाठ करना चाहिए और अन्त में प्रार्थनाएँ करनी चाहिए।

रात्रि जागरण और पूजन

व्रती को रात्रि भर कृष्ण की प्रशंसा के स्रोतों, पौराणिक कथाओं, गानों एवं नृत्यों में संलग्न रहना चाहिए। दूसरे दिन प्रात- काल के कृत्यों के सम्पादन के उपरान्त, कृष्ण प्रतिमा का पूजन करना चाहिए, ब्राह्मणों को भोजन देना चाहिए, सोना, गौ, वस्त्रों का दान, मुझ पर कृष्ण प्रसन्न हों शब्दों के साथ करना चाहिए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

देश भर के श्रद्धालु जन्माष्टमी पर्व को बड़े भव्य तरीक़े से एक महान पर्व के रूप में मनाते हैं।सभी कृष्ण मन्दिरों में अति शोभावान महोत्सव मनाए जाते हैं। विशेष रूप से यह महोत्सव वृन्दावन, मथुरा (उत्तर प्रदेश), द्वारका (गुजरात), गुरुवयूर (केरल), उड्डपी (कर्नाटक) तथा इस्कॉन के मन्दिरों में होते हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव सम्पूर्ण ब्रजमण्डल में, घर-घर में, मन्दिर-मन्दिर में मनाया जाता है। अधिकतर लोग व्रत रखते हैं और रात को बारह बजे ही पंचामृत या फलाहार ग्रहण करते हैं। मथुरा के जन्मस्थान में विशेष आयोजन होता है। सवारी निकाली जाती है। दूसरे दिन नन्दोत्सव मन्दिरों में दधिकाँदों होता है। फल, मिष्ठान, वस्त्र, बर्तन, खिलौने और रुपये लुटाए जाते हैं। जिन्हें प्राय: सभी श्रद्धालु लूटकर धन्य होते हैं। गोकुल, नन्दगाँव, वृन्दावन आदि में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की बड़ी धूम-धाम होती है।

छबीले का छप्पन भोग

श्रीकृष्ण आजीवन सुख तथा विलास में रहे, इसलिए जन्माष्टमी को इतने शानदार ढंग से मनाया जाता है। इस दिन अनेक प्रकार के मिष्ठान बनाए जाते हैं। जैसे लड्डू, चकली, पायसम (खीर) इत्यादि। इसके अतिरिक्त दूध से बने पकवान, विशेष रूप से मक्खन (जो श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का सबसे प्रिय भोजन था), श्रीकृष्ण को अर्पित किया जाता है। तरह-तरह के फल भी अर्पित किए जाते हैं। परन्तु लगभग सभी लोग लड्डू या खीर बनाना व श्रीकृष्ण को अर्पित करना श्रेष्ठ समझते हैं। विभिन्न प्रकार के पकवानों का भोजन तैयार किया जाता है तथा उसे श्रीकृष्ण को समर्पित किया जाता है।

कृष्ण जन्माष्टमी पर कैसे करें पूजन

सभी दृष्टि से कृष्ण पूर्णावतार हैं। आध्यात्मिक, नैतिक या दूसरी किसी भी दृष्टि से देखेंगे तो मालूम होगा कि कृष्ण जैसा समाज उद्धारक दूसरा कोई पैदा हुआ ही नहीं है। जब-जब भी धर्म का पतन हुआ है और धरती पर असुरों के अत्याचार बढ़े हैं तब-तब भगवान ने पृथ्वी पर अवतार लेकर सत्य और धर्म की स्थापना की है। भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी की मध्यरात्रि को अत्याचारी कंस का विनाश करने के लिए मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण ने अवतार लिया था। ऐसे भगवान कृष्ण के व्रत-पूजन से संबंधित जानकारी प्रस्तुत है -

कैसे करें व्रत-पूजन

- उपवास की पूर्व रात्रि को हल्का भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करें।
- उपवास के दिन प्रात :काल स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त हो जाएं। पश्चात सूर्य, सोम, यम, काल, संधि, भूत, पवन, दिक्पति, भूमि, आकाश, खेचर, अमर और ब्रह्मादि को नमस्कार कर पूर्व या उत्तर मुख बैठें।
- इसके बाद जल, फल, कुश और गंध लेकर संकल्प करें -

ममखिलपापप्रशमनपूर्वक सर्वाभीष्ट सिद्धये
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतमहं करिष्ये॥

अब मध्याह्न के समय काले तिलों के जल से स्नान कर देवकीजी के लिए सूतिकागृह नियत करें।

- तत्पश्चात भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।
- मूर्ति में बालक श्रीकृष्ण को स्तनपान कराती हुई देवकी हों और लक्ष्मीजी उनके चरण स्पर्श किए हों अथवा ऐसे भाव हो।
- इसके बाद विधि-विधान से पूजन करें।
- पूजन में देवकी, वासुदेव, बलदेव, नंद, यशोदा और लक्ष्मी इन सबका नाम क्रमश: निर्दिष्ट करना चाहिए।

फिर निम्न मंत्र से पुष्पांजलि अर्पण करें -
प्रणमे देव जननी त्वया जातस्तु वामन:।
वसुदेवात तथा कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नम:।
सुपुत्रार्घ्यं प्रदत्तं में गृहाणेमं नमोऽस्तुते।

अंत में रतजगा रखकर भजन-कीर्तन करें। साथ ही प्रसाद वितरण करके कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाएं।

जन्माष्टमी पूजन सामग्री की सूची

पूजन सामग्री - श्रीकृष्ण का पाना (अथवा मूर्ति), गणेशजी की मूर्ति, अम्बिका की मूर्ति, सिंहासन (चौकी, आसन), पंच पल्लव, (बड़, गूलर, पीपल, आम और पाकर के पत्ते), पंचामृत, तुलसी दल, केले के पत्ते, (यदि उपलब्ध हों तो खंभे सहित), औषधि, (जटामॉसी, शिलाजीत आदि) दीपक, बड़े दीपक के लिए तेल, बन्दनवार, अर्घ्य पात्र सहित अन्य सभी पात्र।

सुगंधित एवं अन्य सामग्री - इत्र की शीशी, धूप बत्ती (अगरबत्ती), कपूर, केसर, चंदन, यज्ञोपवीत 5, कुंकु, चावल, अबीर, गुलाल, अभ्रक, हल्दी, आभूषण, नाड़ा, रुई, रोली, सिंदूर, सुपारी, मौली, पान के पत्ते, पुष्पमाला, कमलगट्टे, तुलसीमाला।

धन धान्य - धनिया खड़ा, सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, कुशा व दूर्वा, पंच मेवा, गंगाजल, शहद (मधु), शक्कर, घृत (शुद्ध घी), दही, दूध, ऋतुफल, नैवेद्य या मिष्ठान्न, (पेड़ा, मालपुए इत्यादि), इलायची (छोटी), लौंग, ताम्बूल (लौंग लगा पान का बीड़ा), श्रीफल (नारियल), धान्य (चावल, गेहूं), पुष्प (गुलाब एवं लाल कमल), एक नई थैली में हल्दी की गांठ आदि।

वस्त्र - श्रीकृष्ण को अर्पित करने हेतु वस्त्र, गणेशजी को अर्पित करने हेतु वस्त्र, अम्बिका को अर्पित करने हेतु वस्त्र, जल कलश (तांबे या मिट्टी का), सफेद कपड़ा (आधा मीटर), लाल कपड़ा (आधा मीटर), पंच रत्न (सामर्थ्य अनुसार)।

श्रीकृष्ण

वर्तमान संदर्भ में

गीता के उपदेश की सार्थकता इसी में थी कि अर्जुन युद्ध करने के लिए तैयार हो जाए। वह पूरे मनोयोग से युद्ध करने के लिए न केवल तत्पर ही हुआ अपितु महाभारत युद्ध के विजेता का गौरव भी प्राप्त कर सका। उस समय केवल एक अर्जुन था, परन्तु आज की परिस्थिति में प्रत्येक भारतवासी को अर्जुन बनना पड़ेगा तभी भगवान श्रीकृष्ण की आराधना एवं गीता का अध्ययन-मनन सार्थक हो सकेगा। महाभारत काल में वैदिक ज्ञान-विज्ञान प्राय: लुप्त हो चुका था और तात्कालीन सामाजिक व्यवस्था लड़खड़ा गई थी।

गीता के उपदेश की सार्थकता इसी में थी कि अर्जुन युद्ध करने के लिए तैयार हो जाए। वह पूरे मनोयोग से युद्ध करने के लिए न केवल तत्पर ही हुआ अपितु महाभारत युद्ध के विजेता का गौरव भी प्राप्त कर सका।

उस समय केवल एक अर्जुन था, परन्तु आज की परिस्थिति में प्रत्येक भारतवासी को अर्जुन बनना पड़ेगा तभी भगवान श्रीकृष्ण की आराधना एवं गीता का अध्ययन-मनन सार्थक हो सकेगा। महाभारत काल में वैदिक ज्ञान-विज्ञान प्राय: लुप्त हो चुका था और तात्कालीन सामाजिक व्यवस्था लड़खड़ा गई थी। इनके स्थान पर आत्मा के सच्चे स्वरूप के विषय में सामाजिक कर्तव्य के विषय में उस युग के तत्ववादियों के विभिन्न मतों का एक जंजाल ही दिखाई देने लगा था, उदाहरणार्थ प्रज्ञावाद, नियतिवाद, भूतवाद,स्वभाववाद, यदृच्छावाद, सद्सद्वाद, योनिवाद आदि चिन्तनधाराएँ उस काल में जन्म ले चुकी थीं, परिणामत: समाज लड़खड़ा रहा था और मतिभ्रम उत्पन्न हो गया था।

हर एक बने अर्जुन

यदि अर्जुन युद्ध से पलायन कर जाता तो क्या स्थिति बनती। द्रौपदियों की लाज सरेआम नीलाम होती दिखाई देती। आज हर एक क ओ अर्जुन बनना होगा। जैसा कि वर्तमान में वैदिक ज्ञान के अभाव में अनेक मत, पंथ, संप्रदायों ने समाज को छिन्न-भिन्न और मृतप्राय बना रखा है। तात्पर्य यह है कि वैचारिक क्षेत्र में वर्तमान का परिदृश्य महाभारत काल के परिदृश्य से काफी कुछ मिलता-जुलता है। इन सभी मत-वादों के कारण उस काल में समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित तो हो ही चुका था अपितु अकर्मण्यता भी बढ़ती जा रही थी। उस काल की विभिन्न विचारधाराओं में कुछ धाराएँ उन ज्ञानमार्गियों की थीं, जो कर्म को त्याज्य व बन्धन का कारण मानते थे। आज भी हमें इस स्थिति के दर्शन होते हैं। समाज टुकड़ों में विभाजित है और समाज, संस्कृति और देश हित के प्रति उदासीन अकर्मण्यों की जमात बड़ी संख्या में दिखाई दे रही है। मान लीजिए, यदि अर्जुन युद्ध से पलायन कर जाता तो क्या स्थिति बनती? स्पष्ट है दुर्बुद्धि दुर्योधन जैसे स्वार्थी, अनाचारी और अधर्मियों की जमात बढ़ जाती और भीष्म, द्रोणाचार्य जैसे व्यक्ति उनकी हाँ में हाँ मिलाते दिखाई देते। द्रौपदियों की लाज सरेआम नीलाम होती दिखाई देती। अन्याय और हठधर्मिता का सर्वत्र साम्राज्य हो जाता। सोचिए और अपने अन्त:करण में विश्लेषण कीजिए कि अर्जुन का युद्ध करना कितना उचित था?

बीसीसीआई ने बिग बी को दिया गोल्डन टिकट

मुम्बई । महानायक अमिताभ बच्चन को एकदिवसीय विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट का गोल्डन टिकट मिला है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) सचिव जय शाह ने अमिताभ को ये गोल्डन टिकट दिया। शाह ने इसके बाद ट्वीट किया कि हमें स्वर्णिम टिकट किसी और को नहीं बल्कि 'सदी के महानायक को देने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने कहा बिग बी का भारतीय टीम को अटूट समर्थन मिलता रहा है और इससे हम सभी को और बेहतर करने की प्रेरणा मिलती है। वह आईसीसी विश्व कप 2023 के लिए हमारे साथ जुड़े हैं, जिससे हम और अधिक उत्साहित हैं। गौरतलब है कि आईसीसी एकदिवसीय विश्वकप 2023 पांच अक्टूबर से शुरू हो रहा है और इसका फाइनल मुकाबला 19 नवंबर को होगा। इसमें भारतीय टीम का पहला मैच 8 अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चेन्नई में होगा।

फ्रिट्ज को हराकर अमेरिकी ओपन सेमीफाइनल में पहुंचे जोकोविच

न्यूयॉर्क ।

सर्बियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच अमेरिकी ओपन के सेमीफाइनल में पहुंच गये हैं। जोकोविच ने क्वार्टर फाइनल में अमेरिका के टेलर फिट्ज को आसानी से 6-1, 6-4, 6-4 से हराया। तेज गरमी के बीच भी जोकोविच ने स्थानीय खिलाड़ी फिट्ज़ के खिलाफ मुकाबले के दौरान अपनी श्रेष्ठता साबित की। इसी के साथ उन्होंने फिट्ज के खिलाफ अपना आठवां मुकाबला जीता। जोकोविच ने इस मैच में जीत के साथ ही स्विटजरलैंड के स्टार खिलाड़ी रहे रोजर फेडरर के 46 वीं बार सेमीफाइनल में पहुंचने के रिकार्ड को पीछे छोड़ दिया। जोकोविच ने 47 ग्रैंड स्लैम सेमीफाइनल में पहुंचने का नया रिकार्ड बनाया है। फिट्ज के खिलाफ मुकाबले में जोकोविच ने शुरु से ही बढ़त हासिल करते हुए अपना दबदबा बनाये रखा। अब सेमीफाइनल में उनकी टक्कर फ्रांसेस टियाफो या बेन शेल्टन के बीच होने वाले मैच के विजेता खिलाड़ी से होगी। सर्बियाई खिलाड़ी ने पिछले कुछ दिनों में लगातार चार सेटों में जीत हासिल की है हालांकि उन्हें लास्लो जेरे के खिलाफ संघर्ष करना पड़ा। तीसरे दौर में उन्होंने दो सेटों से पिछड़ने के बाद आगे बढ़ते हुए जीत हासिल की। जोकोविच ने पिछले

24 मैचों में से 23 में जीत हासिल की है। इसके साथ ही अपने करियर में तीसरी बार एक ही वर्ष में सभी चार प्रमुख मुकाबलों के फाइनल में पहुंचने से वह एक जीत दूर है।

US Open 2023

अलेक्जेंडर ज्वेरेव पर नस्लीय टिप्पणी, अधेड़ व्यक्ति मैदान से बाहर भेजा

(एजेंसी)।

यूएस ओपन में अलेक्जेंडर ज्वेरेव और जननिक सिनर के बीच 16वें राउंड के मुकाबले के दौरान कथित नस्लीय टिप्पणी का मामला सामने आया है। यह जोड़ी न्यूयॉर्क में एक रोमांचक मुकाबला खेल रही थी। तभी जर्मन के नंबर 12 वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ने अंपायर से दर्शक दीर्घा से आई एक टिप्पणी के बारे में शिकायत की। जांच हुई तो ब्रिटिश टेनिस अधिकारी जेम्स केओथावोंग ने पाया कि ज्वेरेव को एक प्रशंसक ने हिटलर संबंधी वाक्यांश कहा था। उन्होंने कहा कि यह अस्वीकार्य है। घटना के वक्त भी अंपायर ने दर्शक दीर्घा की ओर कुर्सी घुमाकर अपराधी को अपनी बात स्वीकार करने के लिए कहा, लेकिन वहां से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। इसके बाद केओथावोंग ने पूरी भीड़ को खिलाड़ियों का सम्मान करने के लिए कहा। इसके बाद मैच फिर से शुरू हो गया, लेकिन कुछ ही देर बाद कैमरे वापस स्टैंड की ओर आ गए जब सुरक्षा गार्ड एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से बात करते दिखे। गार्ड बाद में उस व्यक्ति को मैदान से बाहर ले गए। अभी स्पष्ट नहीं है कि मैदान से बाहर किया गया व्यक्ति वहीं था जिसने अपशब्द कहे या फिर कोई और। लेकिन घटना की पूरी चर्चा होती रही।

पाक के खिलाफ मुकाबले की जगह विश्वकप पर ध्यान दे भारतीय टीम : गंभीर

कैंडी ।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने कहा है कि आगामी विश्वकप में भारतीय टीम का लक्ष्य खिताब जीतने पर होना चाहिये न कि पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले मैच पर। गंभीर के अनुसार भारतीय टीम को अपने प्रयास ट्रॉफी जीतने पर लगाना चाहिये। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ मैच को भी विश्व कप का ही एक मैच मानना चाहिये।

गंभीर ने कहा, टीम का ध्यान केवल 14 अक्टूबर को भारत और पाक मैच पर ही नहीं होना चाहिये, उसके लिए सभी मैच अहम हैं। मुझे उम्मीद है कि यह भारत के विश्व कप फाइनल खेलने और कप जीतने के बारे में है, क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि इस विश्व कप टीम से कितने लोग अगले विश्व कप का हिस्सा होंगे क्योंकि यह 4 साल के बाद होता है। उन्होंने साथ ही कहा, एक देश के रूप में हमारे लिए, प्रशंसकों के रूप में हमारे लिए और प्रसारक के रूप में हमारे लिए, सब कुछ केवल भारत और पाकिस्तान

पर ही नहीं आधारित होना चाहिए बल्कि विश्व कप जीतने के बारे में हमारे प्रयास होने चाहिये। पाकिस्तान के मैच को केवल एक मुकाबले के तौर पर ही लेना चाहिये। यह विश्व कप जीतने की दिशा में महज एक कदम है। गंभीर ने साल 2007 और 2011 विश्व कप में चैंपियनशिप जीतने वाली भारतीय टीमों को भी याद करते हुए कहा कि उस समय भी हमारा ध्यान केवल ट्रॉफी जीतने पर था।

शास्त्री ने भारतीय टीम का उत्साह बढ़ाया, बोले दिल खोलकर खेलिए

नई दिल्ली ।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने कहा है विश्वकप के लिए चयनित टीम काफी संतुलित और अच्छी है। शास्त्री ने टीम का हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि इस टीम को पूरे उत्साह और बिना दबाव के उतरना चाहिये। पूर्व कोच ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा है, 'विश्व कप के लिए बेहतरीन टीम चयनित क गई है। साथ ही कहा कि अब सबकुछ आपके ऊपर है, दिल खोलकर खेलिए क्योंकिं हारना और जीतना तो खेल का एक अहम हिस्सा है। हर मैच का आनंद लें और एक-दूसरे का सम्मान करें।' शास्त्री के अलावा कई अन्य पूर्व दिग्गजों ने भी कहा है टीम काफी अच्छी है और इसे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिये। टीम को घरेलू हालातों का भी लाभ मिलेगा। इससे पहले मंगलवार को बीसीसीआई ने 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की थी। इस टीम में अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल को और बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को भी भी जगह मिली है। ये दोनो ही सर्जरी के बाद वापसी कर रहे हैं। वहीं

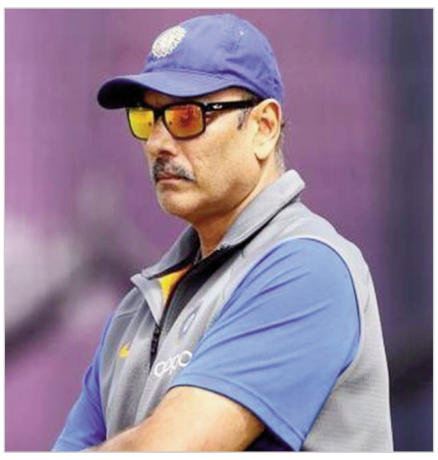

विकेटकीपर खिलाड़ी संजू सैमसन को एक बार फिर जगह नहीं मिली पायी। सैमसन के अलावा यजुवेन्द्र चहल और अनुभवी ऑलराउंडर आर अश्विन को भी टीम में जगह नहीं मिली। टीम की कप्तानी रोहित शर्मा करेंगे जबकि हार्दिक पंड्या को उपकप्तान बनाया गया है।

इन क्रिकेटरों का करियर के अंत में विश्वकप खेलने का सपना टूटा

मुम्बई ।

एकदिवसीय विश्वकप के लिए भारतीय टीम की घोषणा होते ही अनुभवी स्पिनर आर अश्विन , अनुभवी बल्लेबाज शिखर धवन , तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार ओर संजू सैमसन के अपने करियर के अंत में विश्वकप खेलने की उम्मीदें समाप्त हो गयी हैं। इसका कारण ये ही है इन क्रिकेटरों को अब एकदिवसीय टीम में जगह मिलने की कोई संभावना नहीं है। इसके अलावा ये सभी तीस से अधिक उम्र के हैं।

आर अश्विन : स्पिन गेंदबाजी ऑलराऊंडर अश्विन 2011 क्रिकेट विश्व कप विजेता भारतीय टीम में शामिल थे। 36 साल के अश्विन टेस्ट टीम में अपनी जगह बनाये हुए हैं पर एकदिवसीय में उन्हें काफी समय से अवसर नहीं मिला है। अनुभवी स्पिनर होने के बाद भी चयन समिति ने उन्हें अवसर नहीं दिया।

शिखर धवन : सलामी बल्लेबाज धवन 37 साल के हो गये हैं। धवन पिछले कुछ सालों से केवल एकदिवसीय में ही खेल रहे थे पर युवा प्रतिभाओं के आने से उन्हें पिछले एक साल से अधिक समय से अवसर नहीं मिला है। ऐसे में उनकी वापसी के सारे रास्ते बंद हो गए।

धवन ने 167 एकदिवसीय मैचों में 6793 रन बनाए हैं। उनके नाम 17 शतक है। आईसीसी मुकाबलों में वह 65 से ज्यादा की औसत से रन बनाते रहे हैं।

भुवनेश्वर कुमार : भुवनेश्वर कुमार ने अपनी सधी हुई गेंदबाजी से एक दशक तक अपना प्रभाव बनाये रखा पर एक बार टीम से बाहर होने के बाद उन्हें वापसी का अवसर नहीं मिल पाया। यूपी टी20 लीग के कुछ मैचों में अपनी गेंदबाजी से उन्होंने प्रभावित भी किया पर जिस प्रकार से युवा गेंदबाज सामने आये हैं। उनकी वापसी की कोई संभावनाएं नजर नहीं आतीं।

संजू सैमसन : विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन अच्छी बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग के बाद भी निरंतरता की कमी के कारण टीम में अपनी जगह पक्की नहीं कर पाये हैं। इसी कारण उनकी जगह

बजाय ईशान किशन को अवसर मिल गया। ईशान ने एक दिवसीय में दोहरा शतक भी लगाया है। इसके अलावा पिछली चार पारियों में उनके नाम पर अर्धशतक है।

वहीं सैमसन एकदिवसीय में 50 से ज्यादा की औसत होने के बावजूद भी जगह हासिल नहीं कर पाये।

संक्षिप्त समाचार

बुमराह , शमी पर आधारित रहेंगी भारतीय टीम की उम्मीदें : मूडी

मुंबई । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर टॉम मूडी ने कहा है कि तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी के प्रदर्शन पर भारतीय गेंदबाजों की उम्मीदें टिकी रहेंगी। इसलिए इन दोनो को ही अपनी फिटनेस का ध्यान रखना पड़ेगा। मूडी और भारत के पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने विश्वकप में भारत की संभावनाओं पर अपने विचार रखे। उनकी बातें प्रमुख खिलाड़ियों के महत्व, चयनकर्ताओं के निर्णयों और भारत के सामने आने वाली चुनौतियों के आस-पास घूमती रहीं। मूडी ने कहा कि मुझे लगता है कि यह बहुत कुछ बुमराह की फिटनेस और लंबी उम्र पर निर्भर करता है। मुझे लगता है कि वह भारत के लिए अहम खिलाड़ी हैं क्योंकि उनके पास उच्च गुणवत्ता और प्रभाव हैं। उन्होंने कहा कि मैं देख रहा हूं कि यह मूल रूप से एक कठिन विश्व कप होने जा रहा है। यहां सभी टीमें अपने गेंदबाजों को फिट रखना पक्का करें। यह एक लंबा अभियान है, लेकिन भारत के पास निश्चित रूप से विविधता है। मूडी ने कहा कि टीम इंडिया के प्रमुख खिलाड़ी फिट हैं, खासकर उनके गेंदबाज। मैं भारत को सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करते हुए देख रहा हूं, लेकिन सेमीफाइनल के बाद भारत को चुनौती मिलेगी। इसी बीच पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने कहा कि कुछ टीमों की एक झलक मिल गई है। यह आसान नहीं होने वाला है, लेकिन हां, यह विश्व कप जीतने के लिए काफी अच्छी टीम है। वहीं, मूडी ने कहा कि बुमराह और शमी की फिटनेस मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे दोनों उच्च गुणवत्ता वाले नए गेंद गेंदबाज हैं।

ऑस्ट्रेलिया ने विश्व कप के लिए घोषित की टीम, जाम्पा और एगर शामिल

भारतीय मूल के तनवीर को नहीं मिली जगह

सिडनी । क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने भी विश्वकप के लिए अपनी 15 सदस्यीय टीम घोषित कर दी है। इस टीम की कप्तानी पैट कमिंस करेंगे। इस टीम में दो विशेषज्ञ स्पिनर एडम जाम्पा और एश्टन एगर को शामिल किया गया है पर भारतीय मूल के लेग स्पिनर तनवीर संघा को जगह नहीं मिली है। तनवीर ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने पहले ही मैच में धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए चार विकेट लिए थे। ऐसे में उम्मीद थी कि उन्हें शामिल किया जाएगा पर ऐसा हुआ नहीं। संघा के अलावा तेज गेंदबाज नाथन एलिस और ऑलराउंडर आरोन हार्डी को भी इस संभावित टीम में जगह नहीं मिली है। टीम में अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क और ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल को भी शामिल किया गया है हालांकि ये तीनों ही अभी तक फूरी तरह से फिट नहीं हुए हैं। विश्वकप के लिए ऑस्ट्रेलिया का 15 सदस्यीय दल इस प्रकार है- पैट कमिंस (कप्तान), सीन एबट, एश्टन एगर, एलेक्स कैरी, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रेविस हेड, जोश इंग्लिस, मिचेल मार्श, ग्लेन मैक्सेवेल, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस, डेविड वॉर्नर और एडम जाम्पा।

सेंटनर टी20 अंतरराष्ट्रीय में 100 विकेट लेने वाले न्यूजीलैंड के तीसरे गेंदबाज बने

नॉटिंघम ।

न्यूजीलैंड के मिशेल सेंटनर टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 100 विकेट लेने वाले न्यूजीलैंड के तीसरे और विश्व के आठवे खिलाड़ी बने हैं। सेंटनर ने इंग्लैंड के खिलाफ चौथे और अंतिम मुकाबले में ये उपलब्धि हासिल की है। इस मैच में सेंटनर ने चार ओवरों में 30 रन देकर 3 विकेट लिए। इस गेंदबाज ने जॉनी बेयरस्टो, डेविड मालन और मोइन अली के विकेट लिए। सेंटनर के अब 90 टी20 मुकाबलों में 22.06 की औसत से 100 विकेट हो गये हैं। इस दौरान उनका इकॉनमी रेट 7.08 रहा और उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 11 रन देकर चार विकेट रहा। न्यूजीलैंड की ओर से सेंटनर से पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय में 100 विकेट लेने वाले खिलाड़ी हैं कप्तान टिम साउदी 144 विकेट और ईश सोढ़ी 126 विकेट। इसके अलावा बांग्लादेश के शाकिब अल हसन के नाम 140 विकेट, अफगानिस्तान के राशिद खान के नाम 130 विकेट, श्रीलंकाई के दिग्गज लसिथ मलिंगा के नाम 107 विकेट हैं। इस मैच में पहले बल्लेबाज करते हुए इंग्लैंड ने 20 ओवरों में आठ विकेट पर 175 रन बनाये। इसके बाद ये लक्ष्य न्यूजीलैंड ने 17.2 ओवर में ही हासिल कर लिया। इस प्रकार सरीज 2-2 से बराबरी पर रही।

अफगानिस्तान एशिया कप के सुपर-4 से बाहर हुआ

लाहौर । कुसल मेंडिस की शानदार पारी से श्रीलंका ने अफगानिस्तान को हराकर एशिया कप के सुपर फोर में जगह बनायी है। वहीं अफगानिस्तान की टीम टूर्नामेंट से बाहर हो गयी है। श्रीलंका ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए कुशल की 92 रनों की पारी की सहायता से आठ विकेट पर 291 रन बनाए। इसके बाद लक्ष्य का पीछा कतरे हुए अफगानिस्तान की टीम 37.4 ओवर में 289 रन ही बनाय पायी। अफगानिस्तान की ओर से कप्तान शाहिदी के अलावा मोहम्मद नबी और राशिद खान ने भी अच्छी पारियां खेलीं पर वे अपनी टीम को हार से नहीं बचा पाये। वहीं पहले बल्लेबाजी करते हुए श्रीलंका की शुरुआत अच्छी रही। पाथुम निसांका ने 41 जबकि करुणारत्ने ने 32 रन बनाए। वहीं तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने आये कुसल ने 84 गेंदों में छह चौके और तीन छक्के लगाकर 92 रनों की शानदार पारी खेली। असलांका ने 36 जबकि दुनिथ ने 33 और ठीकशाना ने 28 रन बनाकर स्कोर 291 तक पहुंचाया। वहीं अफगानिस्तान की ओर से गुलाबद्दीन ने सबसे अधिक चार जबकि राशिद खान ने दो विकेट लिए। वहीं मुजीब उर रहमान ने एक विकेट लिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए अफगानिस्तान की शुरूआत अच्छी नहीं रही। गुरबाज ने 4, जादरान ने 7 रन बनाए। गुलाबद्दीन ने 22 जबकि रहमन शाह ने 45 रन बनाकर स्कोर को आगे बढ़ाया। वहीं मध्यक्रम में कप्तान शाहिदी ने 59 जबकि मोहम्मद नबी ने 65 रन बनाकर स्कोर 200 से पार करवाया। इसके बाद के बल्लेबाज रन बनाने में सफल रहे जिससे टीम को हार का सामना करना पड़ा।

न्यूजीलैंड ने अंतिम टी20 में इंग्लैंड को हराया

2-2 से बराबरी पर रही सीरीज

नॉटिंघम । न्यूजीलैंड ने मेजबान इंग्लैंड को चौथे और अंतिम टी20 क्रिकेट मैच में छह विकेट से हरा दिया। इसी के साथ ही चार मैचों की ये सीरीज 2-2 से बराबरी पर रही है। इस मैच में इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 175 रन बनाये थे। इस प्रकार कीवी टीम को जीत के लिए 176 रनों का लक्ष्य मिला था जो उसने चार विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। न्यूजीलैंड की ओर से टिम सीफर्ट ने 32 गेंद में 48 रन बनाये जबकि ग्लेन फिलिप्स ने 25 गेंद में 42 रन बनाये। इससे पहले रविवार को न्यूजीलैंड ने तीसरे टी20 में इंग्लैंड को 74 रन से हराकर सीरीज में वापसी की थी। अंतिम मैच में इंग्लैंड ने अच्छी शुरुआत करते हुए 11 ओवर में एक विकेट पर 105 रन बनाये थे पर इसके बाद उसके विकेट एक के बाद एक गिरते चले गये। इस सीरीज के पहले दोनो ही मैच इंग्लैड ने जीते थे।

अबाया पहनी मुस्लिम लड़कियों को स्कूल में नहीं दिया प्रवेश, वापस लौटाया

पैरिस। फ्रांस के पब्लिक स्कूलों ने अबाया पहनी दर्जनों मुस्लिम लड़कियों को स्कूलों में प्रवेश नहीं दिया। उन्हें अबाया हटाने से इंकार करने पर घर वापस भेज दिया गया। बता दें कि अबाया मुस्लिम महिलाओं और लड़कियों की ओर से पहना जाने वाला एक लंबा और ढीला-ढाला वस्त्र होता है। स्कूली साल के पहले दिन ऐसा होने की पुष्टि शिक्षा मंत्री गैबरियल अटल ने की है। अटल ने मंगलवार को बताया कि धार्मिक प्रतीक के रूप में देखे जाने वाले परिधान पर प्रतिबंध को खारिज करते हुए लगभग 300 लड़कियां अबाया पहनकर आईं। ज्यादातर लड़कियां इसे उतारने के लिए तैयार हो गईं लेकिन 67 ने इंकार कर दिया, जिसके बाद उन्हें घर लौटा दिया गया। सरकार ने पिछले महीने इसे धर्मनिरपेक्षता के नियमों के खिलाफ बताते हुए अबाया पर प्रतिबंध लगा दिया था। इससे पहले हिजाब पर प्रतिबंध लगाया जा चुका है, जिसमें कहा गया था कि यह धर्म का प्रदर्शन है। लड़कियों को वापस लौटाने के कदम से दक्षिणपंथी ग्रुपों में खुशी देखी गई, लेकिन कट्टर वामपंथियों ने ने स्वतंत्रता का अपमान बताया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अटल ने इस तरह के कपड़े को एक धार्मिक प्रतीक माना जो फ्रांस की धर्मनिरपेक्षता का उल्लंघन करता है। 2004 से फ्रांस के स्कूलों में हैडस्कार्फ, किप्पा, क्रॉस सहित धार्मिक संकेतों और प्रतीकों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक शिक्षा मंत्री गेब्रियल अटल का कहना है कि किसी को भी कक्षा में ऐसा कुछ भी पहन कर नहीं आना चाहिए जिससे पता चले कि उनका धर्म क्या है। अटल ने कहा कि जिन लड़कियों ने सोमवार को प्रवेश से इंकार कर दिया था, उन्हें उनके परिवार को संबोधित एक पत्र लिखा गया था जिसमें कहा कि धर्मनिरपेक्षता कोई बाधा नहीं बल्कि एक स्वतंत्रता है। मंत्री ने आगे कहा कि अगर वे फिर से गाऊन पहनकर स्कूल में आई तो फिर नई बात होगी।

जी-20 के बाद पाकिस्तान को है सऊदी युवराज के पड़ाव की उम्मीद

इस्लामाबाद । पाकिस्तान को सऊदी अरब के युवराज मोहम्मद बिन सलमान की पाकिस्तान पड़ाव की उम्मीद दिखाई दे रही है। गौरतलब है कि वह इस सप्ताह के अंत में नयी दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा करने वाले है। मीडिया में आयी एक खबर में यह बात कही है। हालांकि पाकिस्तान का विदेश कार्यालय शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए नयी दिल्ली की यात्रा के दौरान सऊदी युवराज के संभावित पड़ाव पर चुप्पी साधे हुए है, लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय के सूत्रों ने इस संभावना से इनकार नहीं किया है। प्रधानमंत्री कार्यालय के एक सूत्र ने कहा, अभी तक कुछ भी आधिकारिक नहीं है, लेकिन ऐसे संकेत हैं कि सऊदी युवराज अपनी भारत यात्रा के दौरान पाकिस्तान की यात्रा कर सकते हैं। किसी भी पक्ष की ओर से कोई पुष्टि नहीं की गई क्योंकि दोनों पक्ष अंतिम क्षण तक यात्रा को गोपनीय रखना चाहते हैं। हालांकि, सूत्रों ने इतना जरुर बताया है कि यह दौरा संभव भी हुआ तो वह केवल कुछ घंटों के लिए होगा। गौरतलब है कि फरवरी 2019 में, जब सऊदी युवराज ने भारत की यात्रा की थी, तो उन्होंने पाकिस्तान की भी यात्रा की थी। सऊदी युवराज न केवल 9 और 10 सितंबर को होने वाले जी20 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे, बल्कि राजकीय यात्रा पर एक दिन के लिए दिल्ली में रुकेंगे। सूत्रों ने कहा कि ऐसे में पाकिस्तान के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो गया है कि सऊदी युवराज देश का दौरा करें।

प्रधानमंत्री किशिदा पर बम फेंकने वाले संदिग्ध पर हत्या का आरोप

तोक्यो । जापान के पीएम पर बम फेंकने वाले संदिग्ध पर हत्या करने का आरोप लगाया गया है। यहां अभियोजकों ने अप्रैल में प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा को निशाना बनाकर किए गए बम हमले के मामले में 24 वर्षीय एक संदिग्ध पर बुधवार को हत्या के प्रयास सहित अन्य आरोप लगाए। गौरतलब है ?कि किशिदा पश्चिमी जापान के वाकायामा में चुनाव प्रचार कर रहे थे, तभी एक व्यक्ति ने उन पर घर में बना पाइप बम फेंका था। हालांकि इस हमले में किशिदा को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था, लेकिन सभा में शामिल दो अन्य लोग घायल हो गए थे। जापान की मीडिया ने कहा कि संदिग्ध का तीन महीने तक मनोचिकित्सकीय मूल्यांकन करने के बाद अभियोजक इस निष्कर्म पर पहुंचे हैं कि 24 वर्षीय रियूजी किमुरा मुकदमे का सामना करने के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ है और हमले में इस्तेमाल किया गया बम घातक था। खबर के मुताबिक, अदालती दस्तावेज दिखाते हैं कि किमुरा संभवत : इसलिए नाराज था, क्योंकि वह पिछले साल चुनाव के लिए उम्मीदवारी नहीं दाखिल कर सका था। किशिदा पर यह हमला पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की चुनाव प्रचार के दौरान गोली मारकर हत्या किए जाने के लगभग एक साल बाद हुआ था। किशिदा पर किए गए जानलेवा हमले ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था।

रिहा होते ही परवेज इलाही को पुलिस ने फिर किया गिरफ्तार

इस्लामाबाद । पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष परवेज इलाही को रिहा के आदेश होते ही फिर से गिरफ्तार कर लिया गया है। ?मिली जानकारी के अनुसार इस्लामाबाद उच्च न्यायालय द्वारा उनकी हिरासत निलंबित करने और रिहाई का आदेश देने के तुरंत बाद मंगलवार को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। इस्लामाबाद पुलिस ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा कि पंजाब प्रांत के पूर्व मुख्यमंत्री इलाही को एक आतंकवाद के एक मामले में गिरफ्तार किया गया। इससे पहले कहा था कि पीटीआई नेता को उच्च न्यायालय के आदेश के बाद रिहा कर दिया गया है। बता दें कि इलाही उन पीटीआई नेताओं और कार्यकर्ताओं में शामिल हैं, जिन्हें खान की गिरफ्तारी के विरोध में नौ मई को हुए दंगों के बाद गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले दिन में, उच्च न्यायालय ने सार्वजनिक व्यवस्था बहाली (एमपीओ) की धारा तीन के तहत इलाही की हिरासत को निलंबित कर दिया और उनकी रिहाई का आदेश दिया। इलाही को पहली बार एक जून को गिरफ्तार किया गया था और उन पर भ्रष्टाचार के कई मामलों का आरोप लगाया गया था। इलाही की सबसे हालिया गिरफ्तारी पिछले हफ्ते शुक्रवार को इस्लामाबाद पुलिस द्वारा की गई थी, इससे कुछ ही घंटे पहले लाहौर उच्च न्यायालय ने भ्रष्टाचार के एक मामले में इलाही की रिहाई का आदेश दिया था और अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देश दिया था कि उन्हें किसी अन्य मामले में हिरासत में न लिया जाए।

रूस ने की यूक्रेनी बंदरगाह सुविधाओं को तहस-नहस करने की तैयारी

कीव। रूस ने यूक्रेनी बंदरगाह सुविधाओं को तहस-नहस करने की तैयारी कर ली है। यही वजह रही कि यूक्रेन के इज़मेल क्षेत्र में डेन्यूब नदी पर बंदरगाह सुविधाओं पर ड्रोन से हमला किया गया जो रात भर चला। एक अधिकारी ने बुधवार को इसकी पुष्टि की। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार ओडेसा क्षेत्र के गवर्नर ओलेह किपर ने कहा कि हमले के कारण बंदरगाह और आसपास के कृषि बुनियादी ढांचे को नुकसान हुआ है। हालांकि इस ड्रोन हमले पर रूस की ओर से कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं आई है। इससे पहले इस सप्ताह की शुरुआत में, रोमानिया से नदी के उस पार स्थित इज़मेल क्षेत्र पर रूसी ड्रोन हमले हुए थे। यूक्रेन ने दावा किया है कि रूसी ड्रोन रोमानियाई क्षेत्र में गिरे, लेकिन नाटो सदस्य देश ने इससे इनकार किया। एक रिपोर्ट के अनुसार, रूस एक महीने से अधिक समय से डेन्यूब के किनारे यूक्रेन की बंदरगाह सुविधाओं पर हमला कर रहा है, ताकि कीव को अपने अनाज के निर्यात के लिए नदी का उपयोग करने से रोका जा सके। अधिकारियों ने कहा कि मंगलवार रात को यूक्रेन की राजधानी कीव पर भी मिसाइल हमला हुआ, लेकिन कोई हताहत या क्षति नहीं हुई। हालांकि सभी रूसी मिसाइलों को हवाई सुरक्षा द्वारा नष्ट कर दिया गया।

ब्रिटेन का दूसरा सबसे बड़ा शहर बर्मिंघम हुआ दिवालिया, गैर जरूरी खर्चे बंद

लंदन । ब्रिटेन के दूसरे सबसे बड़े शहर बर्मिंघम को दिवालिया घोषित कर दिया है। अब यहां पर सभी गैर-जरूरी खर्चे बंद कर दिए हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार शहर पर 76 करोड़ पाउंड (करीब 95.6 करोड़ डॉलर) तक के समान वेतन दावे लंबित हैं। बर्मिंघम सिटी काउंसिल, जो दस लाख से अधिक लोगों को सेवाएं प्रदान करती है, ने मंगलवार को धारा 114 नोटिस दायर किया, जिसमें आवश्यक सेवाओं को छोड़कर सभी खर्चों पर रोक लगा दी गई। नोटिस रिपोर्ट के अनुसार, घाटा समान वेतन दावों में 65 से 76 करोड़ पाउंड के बीच भुगतान करने में कठिनाइयों के कारण उत्पन्न हुआ।

चीन के मिनहोउ काउंटी में तूफान हेकुल के कारण आसपास के गांवों में बाढ़ आ गयी।

10 माह की बच्ची के पेट से निकले जुड़वां बच्चे, ऑपरेशन के बाद हैरान हुए डॉक्टर

इस्लामाबाद । पाकिस्तान के सादिकाबाद में एक मामला ऐसा भी आया है, जब 10 माह की बच्ची के पेट से दो जुड़वां बच्चों को ऑपरेशन कर के निकाला गया है। मिली जानकारी के अनुसार 10 महीने की बच्ची के पेट में दर्द था और डॉक्टरों ने उसकी वजह जब माता-पिता को बताई तो वे सन्न रह गए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बच्ची को पेट में दर्द होने के चलते उसके परिवार के लोग उसे अस्पताल लेकर गए। बच्ची का दर्द पेट के निचले हिस्से में था और डॉक्टरों ने सोचा कि ये ट्यूमर है, जो बच्ची के पेट में बाहर की ओर भी दिखने लगा है। हालांकि जब उन्होंने ऑपरेशन करना शुरू कर दिया, तो यहां कुछ और ही मामला निकला। डॉक्टरों को बच्ची के पेट में दो जुड़वां फीटस मिले, जो पूरी तरह से विकसित नहीं हुए थे। डॉक्टरों को फिर ये समझते देर नहीं लगी कि बच्ची वैनिशिंग टिवन सिंड्रोम का शिकार थी, जो 5 लाख में से किसी एक बच्चे को होता है। ये तब होता है, जब मां के गर्भ में एक बच्चा विकसित हो जाता है, जबकि जुड़वां फीटस स्वस्थ बच्चे के शरीर में फंस जाते हैं और विकसित नहीं हो पाते। ये ऑपरेशन काफी मुश्किल था, लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक बच्ची की हालत स्थिर है। अस्पताल में डॉक्टर्स ने बताया कि यहां बच्ची के माता-पिता पेट दर्द की शिकायत लेकर आए थे। 10 महीने की बच्ची का अल्ट्रासाउंड भी कराया गया, जिसमें डॉक्टरों ने समझा कि बच्ची के पेट के निचले हिस्से में ट्यूमर है। उन्हें लगा था कि बच्चे के पेट में फ्लुइड भरा हुआ है। सर्जन मुश्ताक अहमद ने बताया कि जब ऑपरेशन होने लगा तो इसमें करीब 2 घंटे का वक्त लग गया। इसी दौरान उन्हें बच्ची के पेट के निचले हिस्से से ट्यूमर निकाला गया, तो उन्हें एक अलग ही चीज़ दिखाई दी।

जी20 से पहले ऋषि सुनक का बड़ा बयान, एक गौरवान्वित हिंदू होने के नाते, मेरा हमेशा भारत के साथ मजबूत संबंध रहेगा

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक ने बुधवार (6 सितंबर) को समाचार एजेंसी पीटीआई के साथ एक विशेष साक्षात्कार में भारत और अपनी ÷गर्वित हिंदू÷ विरासत के साथ अपने गहरे संबंध पर जोर दिया। ब्रिटेन के पहले भारतीय मूल के और हिंदू प्रधान मंत्री सुनक ने अपनी भारतीय पत्नी और अपनी भारतीय जड़ों पर गहरे गर्व का हवाला देते हुए भारत के साथ अपने मजबूत संबंधों की बात की। सुनक ने साक्षात्कार में भारत के साथ अपने संबंधों, सरकारी संबंधों, जी20 शिखर सम्मेलन और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के वैश्विक प्रभाव पर चर्चा की।

अपनी हिंदू आस्था और भारतीय विरासत को संबोधित करते हुए, सुनक ने कहा, ÷मेरी पत्नी भारतीय है, और एक गौरवान्वित हिंदू होने का मतलब है कि मेरा भारत और भारत के लोगों के साथ हमेशा जुड़ाव रहेगा। मुझे अपनी भारतीय जड़ों और भारत के साथ अपने संबंधों पर बहुत गर्व है।÷ यह टिप्पणी हिंदू मूल्यों के उनके पहले सार्वजनिक प्रदर्शनों का अनुसरण करती है, जिसमें पवित्र लाल हिंदू %कलावा% धागा पहनना और लंदन में गौ पूजा (गाय की पूजा) करना शामिल है। ब्रिटेन के पहले भारतीय मूल और हिंदू प्रधानमंत्री सुनक ने लगातार अपनी विरासत को अपनाया है। उन्होंने भगवद गीता पर हाथ रखकर ब्रिटेन के वित्त मंत्री के रूप में शपथ ली।

भारत सही समय पर सही देश

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने बुधवार को कहा कि भारत की विविधता और उसकी असाधारण सफलताओं का अर्थ है कि जी20 की अध्यक्षता के लिए वह सही समय पर सही देश है। इसके साथ ही सुनक ने नरेन्द्र मोदी के पिछले साल के नेतृत्व की सराहना की और कहा कि भारत को जी20 की अध्यक्षता ऐसे समय मिली जब विश्व कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारतीय मूल के पहले ब्रिटिश प्रधानमंत्री सुनक ने 9-10 सितंबर को यहां आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन से कुछ दिन पहले, पीटीआई- को दिए विशेष साक्षात्कार में कहा कि ब्रिटेन और भारत के संबंध दोनों देशों के वर्तमान से भी अधिक, उनके भविष्य को परिभाषित करेंगे।

खालिस्तान समर्थक एक्टिविटी पर ऋषि सुनक की दो टूक, ब्रिटेन में किसी तरह का उग्रवाद स्वीकार्य नहीं

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों पर भारत की चिंताओं का समर्थन करते हुए, ब्रिटिश प्रधान मंत्री ऋषि सुनक ने बुधवार को कहा कि

उग्रवाद का कोई भी रूप स्वीकार्य नहीं है, उन्होंने कहा कि वैध विरोध करने का अधिकार हिंसक या धमकी भरे व्यवहार तक नहीं है। एक विशेष साक्षात्कार में सुनक ने कहा कि वह हिंसक, विभाजनकारी विचारधाराओं को बाधित करने और उनका मुकाबला करने के सरकार के कर्तव्य को बहुत गंभीरता से लेते हैं।

उन्होंने कहा कि ब्रिटेन खालिस्तान समर्थक उग्रवाद के खतरे से निपटने के लिए भारत सरकार में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर काम कर रहा है। ब्रिटेन में खालिस्तानी समर्थक तत्वों की गतिविधियों को लेकर भारत में चिंताएं बढ़ गई हैं, खासकर मार्च में लंदन में भारतीय उच्चायोग पर हमले के बाद। सुनक की टिप्पणी जी20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आने से कुछ दिन पहले आई है। ब्रिटेन में उग्रवाद का कोई भी रूप स्वीकार्य नहीं है और मैं हिंसक, विभाजनकारी विचारधाराओं को बाधित करने और उनका मुकाबला करने की सरकार की जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लेता हूं, चाहे वे कुछ भी हों।

इस मुद्दे पर एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि हम खालिस्तान समर्थक चरमपंथ के खतरे से निपटने के लिए भारत सरकार में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और ब्रिटिश पुलिस हिंसक कृत्यों से निपटने के लिए पूरी तरह से सशक्त है। दिल्ली में एक राय है कि खालिस्तानी मुद्दा भारत-ब्रिटेन के गहरे संबंधों में एक बड़ी बाधा है।

पाक और अफगानिस्तान में छिड़ी जंग! तोरखम बार्डर पर फायरिंग

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया है। पाकिस्तानी सुरक्षा सूत्रों ने बताया कि बुधवार को अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच मुख्य सीमा पर गोलीबारी हुई, जिसके बाद अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा बंद कर दी गई। स्थानीय निवासियों के अनुसार, पाकिस्तान और अफगानिस्तान को जोड़ने वाली तोरखम सीमा पर गोलियों की आवाज सुनी गई। उन्होंने बताया कि गोलियों की आवाज सुनकर वहां मौजूद लोग घबरा गये। इस घटना के बाद तोरखम सीमा को बंद कर दिया गया। एक सुरक्षा अधिकारी ने समाचार एजेंसी रॉयटर्स को बताया कि तालिबान और पाकिस्तानी सुरक्षा बलों के बीच गोलीबारी हुई. हालांकि, इस गोलीबारी में किसी जानमाल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है।

इस बीच, अफगानिस्तान के पूर्वी नंगाहार प्रांत में सरकार के एक प्रवक्ता,

जबकि पाकिस्तान के विदेश कार्यालय के एक प्रवक्ता ने अभी तक गोलीबारी पर कोई बयान जारी नहीं किया है। मालूम हो कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच लंबे समय से सीमा विवाद चल रहा है। दोनों देशों के नागरिक तोरखम सीमा से ही आते-जाते हैं। लाँकि, दोनों देशों के बीच कई विवादों के कारण इस सीमा को बंद करना पड़ा। इस साल फरवरी में तोरखम सीमा भी बंद कर दी गई थी। परिणामस्वरूप, सीमा के दोनों ओर हजारों ट्रक रोक दिए गए। फिलहाल दोनों तरफ से फायरिंग के मुद्दे पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

नेपाल बाजरे की खेती, खपत को बढ़ावा देने के लिए भारत के साथ सहयोग करने को तैयार

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल के खाद्य, कृषि और पशुधन मंत्री बेदुराम भुशाल ने कहा है कि हिमालयी देश उच्च पोषण गुणों वाले बाजरे की खेती और खपत को बढ़ावा देने के लिए भारत के साथ सहयोग करने को तैयार है। काठमांडू में मंगलवार को आयोजित एक कार्यक्रम में भुशाल ने बाजरा अभियान में अग्रणी भूमिका निभाने और इस अनाज का नाम बदलकर ''श्री अन्न'' या शुभ अनाज रखे के लिए भारत को बधाई दी। भुशाल ने बाजरा को मुख्य भोजन के रूप में बढ़ावा देने के पीछे के संभावित स्वास्थ्य लाभों पर जोर दिया और इसके उच्च पोषण गुणों पर प्रकाश डाला।

संयुक्त राष्ट्र के, भारत की पहल पर बाजरा की खपत को बढ़ावा देने के लिए एक अभियान शुरू करने की बात को रेखांकित करते हुए भुशाल ने कहा कि

नेपाल इस अभियान में नयी दिल्ली के साथ हाथ मिलाने के लिए तत्पर है। साल 2021 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र में 2023 को अंतरराष्ट्रीय बाजरा वर्ष घोषित करने का प्रस्ताव दिया था। इस प्रस्ताव को 72 देशों का समर्थन हासिल हुआ था और संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2023 को अंतरराष्ट्रीय बाजरा वर्ष घोषित किया था।

काठमांडू में भारतीय दूतावास ने नेपाल के कृषि और पशुधन मंत्रालय के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय बाजरा वर्ष 2023 के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान, नेपाल में भारत के राजदूत नवीन श्रीवास्तव ने बाजरा उत्पादन और इसकी वाणिज्यिक क्षमता तलाशने के लिए कृषि क्षेत्र में भारत और नेपाल के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया।

उन्होंने कहा, 'बाजरा जलवायु परिवर्तन और वैश्विक खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकता है।' कार्यक्रम को संबोधित करने वाले खाद्य विशेषज्ञों ने बाजरा के पौष्टिक गुणों पर प्रकाश डाला और निर्यात बाजार में इसकी अपार संभावनाओं को पहचानते हुए बड़े पैमाने पर इसके उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया।

साइक्लोन की चपेट में आने से 21 लोगों की मौत, 60 शहर तूफान में ?घिरे

ब्राजीलिया। ब्राजील में साइक्लोन की चपेट में आने से 21 लोगों की मौत हो गई है। यहां तूफान का जबरदस्त कहर देखने को मिल रहा है। मी ?डिया रिपोर्ट के अनुसार चक्रवात ने दक्षिणी ब्राज़ील को बुरी तरह से तबाह कर दिया है, अनेक शहरों में बाढ़ के हालात बनने से लोगों की मौत हो गई है और सैकड़ों लोग विस्थापित हो गए हैं। रियो ग्रांडे डो सुल राज्य के अधिकारियों के अनुसार, जैसे-जैसे बाढ़ का पानी कम हो रहा है, अतिरिक्त शवों की खोज की जा रही है। गवर्नर एडुआर्डो लेइट के मुताबिक तूफान का असर आसपास के लगभग 60 शहरों पर पड़ा है। बता दें कि मंगलवार को ब्राज़ील में आया तूफ़ान चरम मौसम की घटनाओं में सबसे ताज़ा है, जो उन तूफ़ानों से उत्पन्न खतरों को उजागर करता है जो जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप लगातार और तीव्र होते जा रहे हैं। जून में भी दक्षिणी ब्राज़ील में आए चक्रवात के कारण हज़ारों निवासियों को विस्थापित होना पड़ा था और उस समय 13 लोगों की मौत हो गई। ब्राजील के राज्य साओ पाउलो में, फरवरी में भारी बारिश के कारण भूस्खलन और बाढ़ आई, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 65 लोगों की मौत हो गई।

मोदी का ये मास्टरस्ट्रोक नहीं झेल पाएंगे जिनपिंग, आसियान देशों को तेजस दे सकता है भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। आसियान देशों के बीच बड़ी तेजी से हथियारों की मांग बढ़ रही है।स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च 2023 की रिपोर्ट के मुताबिक साउथ ईस्ट एशियाई देशों का मिलिट्री खर्च दो दशकों में दोगुना हो गया है। साल 2000 में ये देश अपनी सुरक्षा पर 1.67 हजार करोड़ रुपये खर्च कर रहे थे। 2021 में ये बढ़कर 3.57 हजार करोड़ खर्च हो चुका है। मिलिट्री में किए गए खर्च में सबसे ज्यादा तेजी 2013 में देखने को मिली है। चीन को उसके ही पड़ोस में घेरने की तैयारी है। आसियान देशों को तेजस देने की बात हो रही है।

क्या है तेजस की खासियत

इसकी रेंज 3 हजार किलोमीटर है और लंबाई 13 मीटर से ज्यादा है। इसका भार 6500 किलोग्राम है। तेजस बहुत ही मारक हथियार है और यह सिंगल इंजन वाला 6,500 किलोग्राम का हल्का लड़ाकू विमान है, जिसके 50 फीसदी कलपुर्जे भारत में ही बने हैं। इसमें इजरायल का EL/M-2052 रडार लगाया गया है।

मोदी की इंडोनेशिया यात्रा

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 अगस्त की रात 8 बजे को 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 18वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) में भाग लेने के लिए इंडोनेशिया जाएंगे। पीएम मोदी बुधवार (6 सितंबर) शाम को इंडोनेशिया के लिए रवाना होंगे और अगले दिन देर शाम नई दिल्ली लौटेंगे। प्रधानमंत्री इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो के निमंत्रण पर जकार्ता में होंगे। आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 18वां पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) दोनों 7 सितंबर (गुरुवार) को होंगे।

ड्रीमगर्ल 2 मेरे लाइफ की सबसे चुनौतीपूर्ण फिल्म रही

बॉलीवुड एक्टर आयुष्मान खुराना अपनी फिल्म ड्रीमगर्ल 2 की सक्सेस का आनंद ले रहे हैं। एक्टर की माने तो इस फिल्म का सक्सेसफुल होना उनके करियर के लिए बहुत जरूरी था। हाल ही में बातचीत के दौरान आयुष्मान ने फिल्म की सक्सेस और अपनी प्रोफेशनल लाइफ से जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें शेयर कीं।

ड्रीम गर्ल- 2 की रिलीज से पहले कैसा लग रहा था ?

हर एक फिल्म की रिलीज के पहले नर्वसनेस होता है, मानो जैसे बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट आने वाला हो। अब आप अपना काम कर चुके होते हैं, लेकिन मार्क्स कितने आएंगे, स्कोर कितना होगा ये आपके हाथों में नहीं होता, वैसा ही एहसास होता है। हालांकि फिर मैं उस वक्त के बारे में सोचना शुरू कर देता हूं जब मैंने वह फिल्म साइन की थी या जब पहली बार वह स्क्रिप्ट सुनी थी। जाहिर है, हम एक कॉमर्शियल सक्सेसफुल फिल्म बनाना चाहते थे, उम्मीद कर रहे थे कि कहानी लोगों के दिलों को छुए, ऑडियंस उसे पूरी तरह से एक्सेप्ट करें और वही हुआ भी। मुझे ये कॉन्फिडेंस तो था ही कि जिस तरह से ओवर आल बॉक्स ऑफिस अच्छा चल रहा है, ये फिल्म भी चलेगी।

सबसे चैलेंजिंग किरदार कौन सा रहा ?

पूजा का किरदार इसलिए इंटरेस्टिंग था क्योंकि वह रियल आयुष्मान से बहुत अलग है। पूजा बहुत ही नटखट, शरारती है, उसे परिस्थिति से खेलना आता है। मैं बहुत ही सिंपल इंसान हूं। हां, बतौर थिएटर आर्टिस्ट पूजा का किरदार निभाना बहुत मजेदार था। मेरे लाइफ की सबसे चुनौतीपूर्ण फिल्म ड्रीमगर्ल रही है।

बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड कितना मायने रखता है ?

एक अभिनेता होने के नाते, मैं अपनी कहानी, अपना किरदार ईमानदारी से निभाता हूं, लेकिन एक स्टार के लिए बॉक्स ऑफिस कलेक्शन बहुत मायने रखता है। इतना ही नहीं, एक स्टार के लिए बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट मायने इसलिए रखती है क्योंकि आपकी आने वाली फिल्म पर आपके प्रोड्यूसर का कॉन्फिडेंस बढ़ जाता है। वो आप पर और भी इन्वेस्ट करने के लिए तैयार होते हैं। मुझे अब अलग-अलग कहानियों का चयन करने का मौका मिल रहा है। ड्रीमगर्ल 2 की सक्सेस के बाद अब मैं बेबाक अपनी कहानियां चुन सकता हूं। मैं ऐसी कहानी चुनना चाहूंगा जो मेरे दिल के करीब होगी। इस फिल्म का सक्सेस होना मेरे लिए बहुत जरूरी था।

आगे किस तरह का किरदार निभाना चाहेंगे?

मैं कुछ ग्रे या डार्क किरदार निभाना चाहता हूं। हॉलीवुड फिल्म जोकर का जोकर जैसा रोल निभाना चाहता हूं। वो मेरे लिए बहुत इंटरेस्टिंग होगा। एक्शन हीरो करके मुझे बहुत मजा आया था, मैं और भी एक्शन फिल्में करना चाहता हूं। वैसे, किरदार से ज्यादा मैं कहानी को महत्व देता हूं, कहानी में कुछ नयापन होना बहुत जरूरी है।

28 सितंबर सिनेमाघरों में धमाल मचाएगी फुकरे 3

साउथ सुपरस्टार प्रभास की मोस्ट अवेटेड फिल्म सालार को प्री-प्रोडक्शन वर्क के चलते पोस्टपोन कर दिया गया है। सालार 28 सितंबर को रिलीज होने जा रही थी। वहीं सालार के पोस्टपोन होते ही एक्सेल एंटरटेनमेंट ने अपनी बहुप्रतीक्षित कॉमेडी फिल्म फुकरे 3 की नई रिलीज डेट का ऐलान कर दिया है। कॉमेडी फ्रेंचाइजी फुकरे की पिछली दोनों फिल्में सफल रही थी। ऐसे में फुकरे 3 का काफी समय से इंतजार किया जा रहा था। फुकरे 3 में पुलकित सम्राट, वरुण शर्मा, ऋचा चड्ढा, मनजोत सिंह और पंकज त्रिपाठी हैं। फिल्म मृगदीप सिंह लांबा द्वारा निर्देशित और रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर के एक्सेल एंटरटेनमेंट के तहत निर्मित है। फुकरे 3 पहले दिसंबर में रिलीज रिलीज होने वाली थी। लेकिन अब यह फिल्म 28 सितंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। मेकर्स ने इस फिल्म का एक पोस्टर शेयर करते हुए फिल्म की रिलीज डेट का ऐलान किया है। पोस्टर को शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा, लेके आए है ताजा खबर, अब नहीं हो रहा सबर। इस बार होगा एक नया चमत्कार फॉरम जमनापार। फुकरे 2 सिनेमाघरों में 28 सितंबर 2023 को रिलीज हो रही है। बता दें कि फुकरे फ़्रैंचाइज़ी ने हमेशा सफलता हासिल की है और फिल्म के दूसरा पार्ट, फुकरे रिटर्न्स बॉक्स ऑफिस पर एक बड़ी सक्सेस हासिल की थी। इसके बाद, फ़्रैंचाइज़ी की लोकप्रियता ने डिस्कवरी किड्स चैनल पर फुकरे बॉयज़ नाम की एनिमेटेड सीरीज़ का निर्माण किया, जिसने फिल्म के अनूठे किरदारों को छोटे बच्चों के लिए टीवी स्क्रीन पर फिर से जीवंत कर दिया।

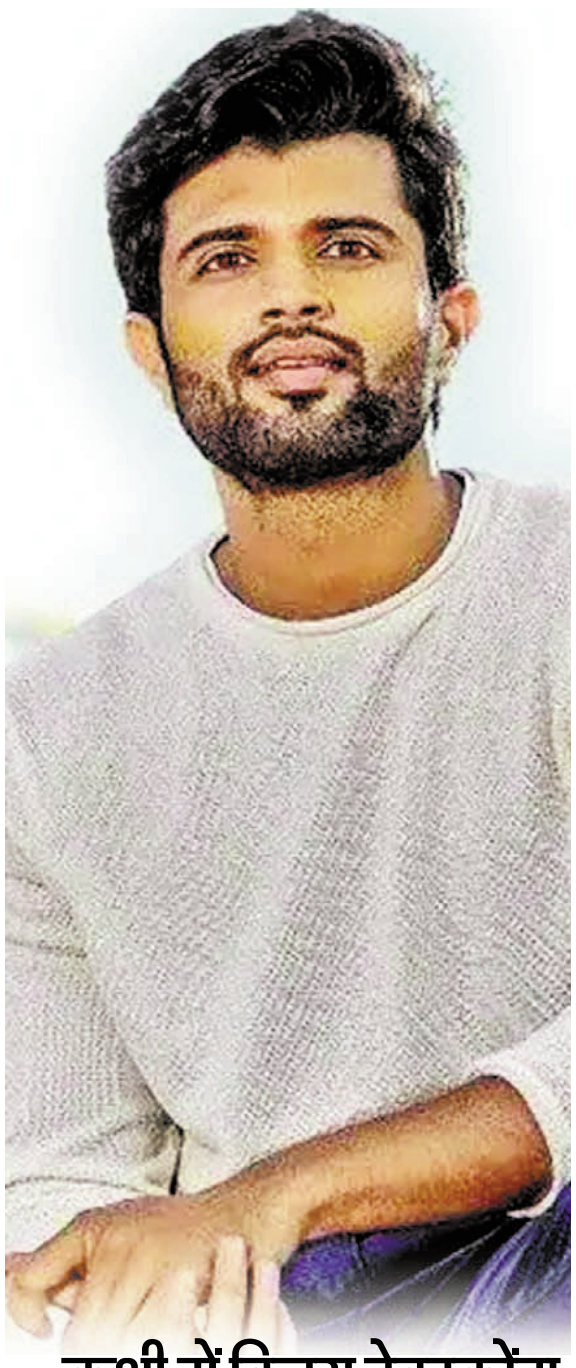

कुशी में विजय देवरकोंडा के शानदार प्रदर्शन ने दिया उन्हें सबसे रोमांटिक आइकन का ताज !

विजय देवरकोंडा - एक ऐसा नाम है जो लाखों दिलों में हलचल मचाने के साथ अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले आकर्षण से स्क्रीन पर तहलका मचा देते हैं। उन्होंने हर-बार यह साबित किया है कि वह ऑन-स्क्रीन रोमांस के एक आइकन है। उनकी हालिया रिलीज कुशी न केवल उन्हें एक खूबसूरत शख्स के रूप में बल्कि बेहद समझदार और विकसित विजय से भी परिचित कराती है, जो शादी के बाद प्यार की जर्नी को दर्शाते हुए एक पति की भूमिका में सहजता से कदम रखता है। कुशी देश के दो सबसे पसंदीदा सितारों - विजय देवरकोंडा और सामंथा प्रभु को एक साथ लाती है। फिल्म की घोषणा के बाद से ही उनकी जोड़ी दर्शकों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है, अब जब फिल्म रिलीज हो गई है तो उनकी शानदार केमिस्ट्री ने और भी ज्यादा उत्साह बढ़ा दिया है। विजय को एक पति के रूप में देखकर दर्शक पूरी तरह से उनकी कहानी में डूब जाते हैं। इससे पहले डियर कॉमरेड, अर्जुन रेड्डी, गीता गोविंदम और वर्ल्ड फेमस लवर विजय देवरकोंडा की रोमांटिक भूमिकाओं ने हमेशा फैंस के दिलों में अपनी अलग जगह बनाई है, कुशी उनके सामान्य प्रेमी लड़के के व्यक्तित्व से एक बदलाव का प्रतीक है। इस बार, वह एक ऐसी जर्नी पर निकलता है जो शादी के बाद जीवन की जटिलताओं को उजागर करती है। फिल्म में कपल के सामने आने वाली चुनौतियों को दिखया गया है जिसमे विजय अपने चरित्र के जरिए बहुत गहराई लाते हैं। सुपरस्टार के पति का किरदार संवेदनशीलता से भरपूर है, जिससे दर्शक गहरे स्तर पर उनसे जुड़ते हैं। प्रशंसकों और नेटिज़न्स ने समान रूप से अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए इंटरनेट का सहारा लिया है, सोशल मीडिया विजय देवरकोंडा के परफॉरमेंस को काफी सराहा जा रहा है। कई लोग को कुशी सिर्फ एक फिल्म से ज्यादा लगेगा। एक रोमांटिक आइकन के रूप में विजय देवरकोंडा को एक शानदार अनुभवी पति बनने की उनकी क्षमता, एक अभिनेता के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा को उजागर करती है। कुशी के जरिए मनमोहक प्रदर्शन के साथ, विजय ने रोमांस के किंग का ताज अपने नाम किया है, एक ऐसा मानक स्थापित किया है जिसे बाकी अभिनेता केवल हासिल करने की उम्मीद कर सकते हैं।

द फ्रीलांसर का हिस्सा बनकर बेहद खुश हैं नवनीत मलिक

नीरज पांडे थ्रिलर फिल्म और वेबसीरिज बनाने के लिए जाने जाते हैं। वे द फ्रीलांसर नामक सीरिज लेकर आ रहे हैं जो पुस्तक ए टिकट टू सीरिया-ए स्टोरी पर आधारित है। इस सीरिज में नवनीत मलिक भी हैं। नीरज की इस सीरिज का हिस्सा बनकर वे बेहद खुश हैं। पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश -

नीरज पांडे की यह सीरिज आपको कैसे मिली ?

मुझे मेरे दोस्त का कॉल आया कि नीरज पांडे अपनी नई सीरिज के लिए ऑडिशन ले रहे हैं। मैंने ऑडिशन दिया। फिर ऑडिशन को कई राउंड हुए। आखिरकार एक दिन फोन आ गया कि मैं सिलेक्ट हो गया हूं। ऑडिशन देने की जर्नी ने ही मुझे इस सीरिज के बारे में उत्सुकता पैदा कर दी थी।

क्या आप अपनी भूमिका के बारे में बताता चाहेंगे ?

मोहसिन नामक किरदार मैंने निभाया है जो आलिया का पति है। यह किरदार ग्रे शैड लिए है। यह आपको पॉजिटिव भी लगेगा तो निगेटिव भी। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है इसके अलग-अलग रंग देखने को मिलते हैं। यह ऐसी परिस्थितियां पैदा करता है जिससे किरदारों के बीच टकराव पैदा होता है। बहुत ही मजेदार और रोमांचक किरदार मुझे निभाने को मिला है।

ग्रे शेड वाले किरदार निभाना एक एक्टर के लिए चुनौती भरा काम होता है। आप इस बारे में क्या कहेंगे ?

निश्चित रूप से। इस तरह के कैरेक्टर को प्ले करते समय कलाकार को यह ध्यान रखना पड़ता है कि कितना दिखाना है और कितना छिपाना है। नीरज पांडे रियलास्टिक फिल्मकार हैं। मैं थोड़ा नर्वस था इस किरदार को निभाने के पहले। थोड़ा रिसर्च भी किया था, लेकिन नीरज पांडे के जरिये सब कुछ आसान हो गया।

नीरज पांडे एक उम्दा फिल्म मेकर माने जाते हैं। उनकी वेबसीरिज भी सराही गई। आपने उनसे क्या सीखा ?

नीरज जी एक अलग ही तरह के मेकर हैं। एक्टर की नस पकड़ना उन्हें आता है। जो उन्हें चाहिए होता है वे निकाल लेते हैं। पहले दिन और पहले सीन से वे एक्टर को फ्रीडम देते हैं। सीन को अपने हिसाब से करने के लिए कहते हैं। फिर जरूरी सुझाव देते हैं और अपने हिसाब से जो चाहते हैं वो भी एक्टर को बताते हैं। इससे सीन करने में और किरदार को समझने में आसानी होती है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स से एक्टर्स को क्या फायदा हुआ है ?

एक्टर्स का काम ज्यादा लोगों तक पहुंचता है। आप थिएटर करते हैं तो दर्शकों की संख्या सीमित होती है। फिल्म करते हैं तो निश्चित शो और स्क्रीन पर दिखाई जाती है। ओटीटी प्लेटफॉर्म के जरिये आपका काम कई देशों और बड़ी संख्या के दर्शकों के बीच जाता है।

क्या आप मानते हैं कि टीवी, फिल्म और ओटीटी के दर्शक बंटे हुए हैं।

दर्शक बंटे हुए हैं पहुंच के कारण। हालांकि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सबको साथ ला खड़ा किया है। अभी भले ही ओटीटी प्लेटफॉर्म देश के बड़े शहरों में ज्यादा देखा जा रहा है, लेकिन छोटे शहरों में भी इसका पैनापन तेजी से बढ़ रहा है।

किसी भी फिल्म या सीरिज को हां कहने का फैसला कैसे लेते हैं ?

मैं ऑडिशन देना पसंद करता हूं। सिलेक्ट होने के बाद अपने रोल के बारे में विस्तार से जानकारी लेता हूं। मैं लीड रोल करना पसंद करता हूं। एक एक्टर के रूप में मुझे फिल्म, टीवी या वेबसीरिज करने में कोई ऐतराज नहीं है।

सनी देओल के बेटे राजवीर की डेब्यू फिल्म दोनों का ट्रेलर रिलीज, पूनम ढिल्लों की बेटी पलोमा संग रोमांस करते आए नजर

बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी देओल के बेटे राजवीर देओल और पूनम ढिल्लों की बेटी पलोमा जल्द ही राजश्री प्रोडक्शंस की फिल्म दोनों से बॉलीवुड डेब्यू करने जा रहे हैं। इस फिल्म से सूरज बड़जात्या के बेटे अवनीश बड़जात्या भी निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखने जा रहा हैं। वहीं अब इस लव स्टोरी पर बेस्ड फिल्म का ट्रेलर रिलीज हो गया है। फिल्म में देव और मेघना की लव स्टोरी दिखाई गई है। राजवीर एक शर्मीले लड़के की भूमिका में हैं, जिसकी मुलाकात अपनी क्रश की शादी में पलोमा से होती है। अब कैसे इन दोनों की कहानी आगे बढ़ती है, फिल्म इसी पर बेस्ड है। ट्रेलर को देखकर ऐसा लगता है कि ये कहानी डेस्टिनेशन वेडिंग के इर्द गिर्द घूमती है। इसमें दिखाया गया है कि राजवीर और पलोमा अपने दोस्त की वेडिंग में मिलते हैं। दोनों के बीच तकरार, नोंक-झोंक और प्यार देखने को मिलता है। और इन दोनों की लव स्टोरी शुरू होती है। फिल्म दोनों को कमल कुमार बड़जात्या, राजकुमार बड़जात्या, अजीत कुमार बड़जात्या और ज्योति देशपांडे ने प्रोड्यूस किया है। इस फिल्म के लिए क्रिएटिव प्रोडक्शन का नेतृत्व सूरज आर बड़जात्या कर रहे हैं। यह फिल्म 5 अक्टूबर को रिलीज हो रही है।

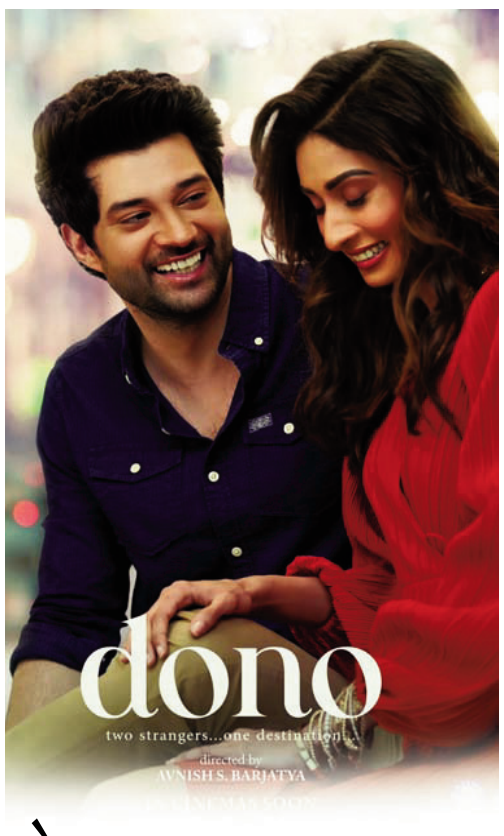

पर्दे पर बेटी सुहाना के साथ नजर आएंगे शाहरुख खान, सुजॉय घोष करेंगे फिल्म का निर्देशन !

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान की लाड़ली बेटी सुहाना खान जल्द ही जोया अख्तर की फिल्म द आर्चीज से एक्टिंग की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। सुहाना की ये फिल्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। वहीं शाहरुख खान भी जल्द ही फिल्म जवान से बड़े पर्दे पर धमाका करने जा रहे हैं। वहीं अब खबर आ रही है कि सुहाना अपने पिता शाहरुख खान के साथ जल्द ही बड़े पर्दे पर भी कदम रखने जा रही हैं। खबरों के अनुसार इस फिल्म को रेड चिलीज एंटरनेटनेंट और सिद्धार्थ आनंद की मार्फ्लिक्स पिक्चर्स मिलकर प्रोड्यूस करेगी। खबरों के अनुसार सुहाना और शाहरुख की इस फिल्म को सुजॉय घोष निर्देशित करेंगे। सुजॉय और शाहरुख इससे पहले साथ में फिल्म बदला को प्रोड्यूस कर चुके हैं। पहले कहा जा रहा था कि शाहरुख इस फिल्म में कैमियो रोल में होंगे। लेकिन अब लेटेस्ट खबरों के अनुसार वह फिल्म में अहम रोल निभाएंगे। बताया जा रहा है कि यह एक स्पाई फिल्म होगी, जिसमें सुहाना जासूस का किरदार निभाएंगी। वहीं फिल्म में शाहरुख हैंडलर बनकर अपनी बेटी की मदद करते दिखेंगे। फिल्म का प्री-प्रोडक्शन का काम भी शुरू हो चुका है। सुहाना फिलहाल अपने एक्टिंग डेब्यू को लेकर चर्चा में हैं। फिल्म द आर्चीज़ से सुहाना के साथ श्रीदेवी की छोटी बेटी खुशी कपूर और अमिताभ बच्चन के नाती अगस्तय नंदा भी डेब्यू कर रहे हैं।